सत कबीर की दया

# भक्ति और भगवान

(भाग-2)

* जगत गुरु तत्वदर्शी *
संत रामपाल जी महाराज

(धर्मार्थ मूल्य मात्र - 5 रूपये)


# संत रामपाल दास महाराज

## सतलोक आश्रम

बन्दी छोड़ भक्ति मुक्ति ट्रस्ट (रजि. 3955),
रोहतक झज्जर रोड़, करौंथा, जि. रोहतक (हरि०) भारत।

सतलोक आश्रम, दौलतपुर रोड़, बरवाला, जि. हिसार (हरि०)भारत।

☎ +91-9992600801, +91-9992600802, +91-9992600803,
☎ +91-9812166044, +91-9812151088, +91-9812026821,+91-9812142324

**e-mail : jagatgururampalji@yahoo.com**
**visit us at - www.jagatgururampalji.org**

# विषय सूची


1. **श्राद्ध समीक्षा** (श्रद्धा से किया गया शास्त्रविधी अनुसार अध्यात्मिक कर्त्तव्य कर्म श्राद्ध कहलाता है)------------1
2. तीर्थ तथा धाम क्या है ------------20
3. पवित्र तीर्थ तथा धाम की जानकारी------------20
4. तीर्थ स्थापना के प्रमाण------------21
5. चित शुद्ध तीर्थ------------24
6. श्री अमरनाथ धाम की स्थापना कैसे हुई?------------25
7. वैष्णो देवी के मन्दिर की स्थापना कैसे हुई?------------25
8. पुरी में श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम कैसे बना---------26
9. श्री जगन्नाथ के मन्दिर में छुआछात प्रारम्भ से ही नहीं है ---------31
10. मूर्ति पूजा करना उचित या अनुचित------------33
11. पूर्ण संत की क्या पहचान है(1)------------34
12. पूर्ण संत की पहचान (2)------------39
13. कैसे मिले भगवान------------45
14. प्रथम किस्त ------------50
15. द्वितीय किस्त ------------59
16. तीसरी किस्त ------------71
17. चौथी किस्त ------------83
18. पांचवी किस्त ------------88
19. छठी किस्त ------------91
20. सातवीं किस्त ------------97
21. आठवीं किस्त ------------102
22. नौवीं किस्त ------------105
23. दसवीं किस्त ------------111
24. भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा ------------117
25. गायत्री मन्त्र क्या है ? ------------121

# निवेदन

प्रभु प्रेमी पाठकों से विनती है कि यह पवित्र पुस्तक ''कौन कितने पानी में'' समाचार पत्रों में विज्ञापनों के माध्यम से लिखे लेखों का संग्रह है तथा इसमें ''सृष्टि रचना'' का भी योग किया गया है । यह निर्णय लेने के लिए कि परमेश्वर के ज्ञान की गहराई में कौन कितने पानी में है ? पया ''सृष्टि रचना'' को कई बार पढ़ें तथा पूर्णतया समझें, फिर इस पवित्र पुस्तक में लिखे विवरण को जानना आसान हो जाएगा ।

यह शास्त्रों से आविष्कार किया है । सर्व व्याख्या शास्त्रों के प्रमाणों से प्रमाणित है । पवित्र श्रीमद्भगवद् गीता जी के अध्याय 16 श्लोक 23-24 में लिखा है कि जो साधक शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण पूजा करते हैं वे न तो परमगति को प्राप्त होते हैं, न सुख को तथा न सिद्धि को ही। इसलिए आपके लिए भक्ति के करने व न करने वाले आचरण पूजा कर्मों के लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं ।

वर्तमान के सर्व संत, महंत व गुरुजन मनमानी साधना कर तथा करवा रहे हैं । इसलिए वास्तविक भक्ति साधना के लिए अपने सद्ग्रन्थों का ही आश्रय लेना हितकर है, इस पवित्र पुस्तक में आप जनों को आसानी से निर्णय हो जायेगा कि वास्तविकता क्या है तथा परमेश्वर के ज्ञान की गहराई में कौन कितने पानी में है ? उसके पश्चात् सतलोक आश्रम में आकर आत्म कल्याण के लिए पूर्ण मोक्ष मार्ग अविलम्ब तथा निःशुल्क मुझ दास से प्राप्त करें ।

सत साहेब, जय बन्दी छोड़ ।

सर्व का शुभचिन्तक

रामपाल दास

# ''श्राद्ध समीक्षा''

(श्रद्धा से किया गया शास्त्रविधि अनुसार अध्यात्मिक कर्त्तव्य कर्म श्राद्ध कहलाता है)

*श्राद्ध के विषय में :- प्रश्नः- श्राद्ध आदि द्वारा पितरों को संतुष्ट करना भी एक उत्तम आध्यात्मिक कर्म है। यह अवश्य करना चाहिए। आप श्राद्ध कर्म को मना किस लिए करते हो। विष्णु पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित अनुवाद कर्ता = मुनिलाल गुप्त) के तृतीय अंश के अध्याय 15 के श्लोक 1 से 53 पृष्ठ 210-213 पर लिखा है कि श्राद्ध से तृप्त हो कर पितृगण समस्त कामनाओं को पूर्ण कर देते हैं। आप जनता को भ्रमित कर रहे हो।*

*उत्तर :- विष्णु पुराण में भगवान श्री कृष्ण जी की मृत्यु तक का उल्लेख पुराण वक्ता ने पंचम अंश के अध्याय 37 में पृष्ठ 413 से 415 तक लिखा है। जिस से सिद्ध होता है कि उस से पूर्व यह विष्णु पुराण नहीं थी। ऋषिगण मौखिक वार्ता से ही भक्ति साधना बताते थे। जो शास्त्रविरूद्ध है। क्योंकि इसी लिए भगवान काल रूपी ब्रह्म ने श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके श्री मद्भगवत् गीता जी का ज्ञान बोला जिसके अध्याय 4 श्लोक 1 से 3 में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि अर्जुन यह भक्ति ज्ञान पहले मैंने सूर्य से कहा था। सूर्य ने अपने पुत्र वैवस्त मनु से कहा मनु ने इक्ष्वाकु को कहा फिर यह ज्ञान योग कुछ राजर्षियों तक चला। अब यह शास्त्रविधि अनुसार ज्ञान योग बहुत समय से नष्ट अर्थात् समाप्त था। इस विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री पारासर ऋषि को गीता अर्थात् वेदों वाला भक्ति मार्ग का ज्ञान नहीं था। श्री पारासर जी ने श्राद्ध करना अर्थात् पितर पूजा करने की राय विष्णु पुराण के तृतीय अंश के अध्याय 14 से 16 तक पृष्ठ 206 से 215 तक दी है। विस्तृत विवरण लिखा है। जब कि वेदों व श्री मदभगवत् गीता जी में पितर पूजा (श्राद्ध कर्म) भूत पूजा (प्रेतकर्म) व देवपूजा आदि को मना किया है। गीता अ. 9 श्लोक 25 में स्पष्ट किया है कि जो भूत पूजा (प्रेत कर्म=अस्थियाँ चुनना अर्थात् फूल उठाना, तेरहवीं क्रिया, मासिक क्रिया, पिण्ड दान आदि प्रेत कर्म है जिनका विवरण विष्णु पुराण तृतीय अंश के अध्याय 13 में श्लोक 1 से 41 पृष्ठ 203 से 206 तक उल्लेख है) करने वाले भूतों को प्राप्त होंगे अर्थात् प्रेत बन कर पूर्व बने प्रेतों के पास चले जाऐंगे। देव पूजा (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आदि देवताओं को पूजने वाले) देवताओं को प्राप्त होगें अर्थात् अनुचरों की पदवी प्राप्त करके अपने-2 इष्ट देव के लोक को प्राप्त हो जाऐंगे। फिर अपना पूण्य कर्म स्वर्ग लोक में समाप्त करके नरक में तथा फिर अन्य प्राणियों की योनियों में सदा कष्ट उठाऐंगे।*

*क्योंकि गीता अध्याय 9 श्लोक 23 तथा 24 में कहा है कि जो साधक श्रद्धा से अन्य देवताओं की पूजा करते हैं वे मेरी पूजा करते हैं भावार्थ है कि वे साधक परमात्मा*

***प्राप्ति के लिए ही प्रयत्न शील हैं परन्तु उनकी वह अन्य देवताओं की पूजा शास्त्रविरूद्ध है। (श्लोक 23) क्योंकि वे साधक मुझे तथा मेरी साधना को तत्व से नहीं जानते (क्योंकि पूर्ण मोक्ष मार्ग का तत्वज्ञान तत्वदर्शी सन्त ही बताऐंगे जिनके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा गीता अध्याय 15 में 1 से 4 में वर्णित है।) इसलिए वे श्रद्धा से शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण करने वाले साधक पतन को प्राप्त होते हैं अर्थात् भक्ति हीन होकर भिन्न प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाते हैं। (श्लोक 9/24) यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 15 तथा 20 से 23 तक है। जिन में कहा है अन्य देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी आदि) को मैंने ही कुछ शक्ति प्रदान कर रखी हैं परन्तु उन अल्पबुद्धि वालों (मूर्खों) की वह शास्त्रविधि रहित साधना होने के कारण व्यर्थ है। गीता अध्याय 7 श्लोक 15 में भी स्पष्ट किया है कि जिन साधकों का त्रिगुणात्मक माया (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) से मिलने वाले क्षणिक लाभ से ज्ञान हरा जा चुका है वे स्वभाव वश उन्हीं की पूजा करते हैं वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मूझे भी नहीं भजते अर्थात् ब्रह्म साधना भी नहीं करते। गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में स्पष्ट किया है कि जो साधक शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण अर्थात् पूजा करते हैं उनको न तो कोई लाभ होता है अर्थात् न कोई सिद्धि प्राप्त होती है न कोई सुख होता है न परमगति अर्थात् मोक्ष होता है। भावार्थ है कि शास्त्रों (वेदों) में वर्णित साधना छोड़ कर मनमानी पूजा किसी व्यक्ति या ऋषि व सन्त विशेष के कहने से करने वाले साधक की साधना व्यर्थ होती है। इसलिए गीता अध्याय 16 श्लोक 24 में कहा है कि कौन सी साधना करने योग्य (कर्तव्य कर्म) है तथा कौन सी छोड़ने योग्य (अकर्तव्य कर्म) है। इसके लिए शास्त्र (वेद) ही प्रमाण है। किसी अन्य द्वारा लोकवेद अर्थात् दन्त कथाओं के आधार से बताया गया भक्ति मार्ग स्वीकार नहीं करना चाहिए।***

***मार्कण्डेय पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) में अध्याय ''रौच्य मनु की उत्पत्ति कथा'' पृष्ठ 242 से 244 तक में प्रमाण है की वेदों में कर्ममार्ग अर्थात् श्राद्ध आदि करने को अविद्या कहा अर्थात् शास्त्रविधि रहित साधना मनमाना आचरण कहा है।*** कथा का अंश मार्कण्डेय जी कहते है :– पूर्व काल में एक रूची नामक ऋषि वेदों से ज्ञान ग्रहण कर के साधना कर रहा था। वह बाल ब्रह्मचारी था उस समय वह प्रौढ़ हो चुका था। जिस समय रूचि ऋषि को उसके चार पितर (पिता, पितामह, परपितामह तथा दूसरा परपितामह) दिखाई दिए। उन्होंने कहा बेटा आपने विवाह क्यों नहीं किया। गृहस्थ पुरूष समस्त देवताओं की पितरों, ऋषियों और अतिथियों की पूजाकरके पुण्यमय लोकों को प्राप्त करता है। वह ''स्वाह'' के उच्चारण से (देवताओं को) ''स्वधा'' शब्द से (पितरों को) तथा अन्नदान (बलिवैश्वदेव) आदि से भूत आदि प्राणियों एवं अतिथियों को उनका भाग समर्पित करता है। बेटा हम ऐसा मानते हैं। रूचि बोलाः– पितामहो! वेद में कर्म मार्ग को अविद्या कहा गया है। फिर क्यों आप लोग मुझे उस मार्ग में लगाते हैं। पितर बोले :– यह सत्य है कि कर्म को अविद्या ही कहा गया है इस में तनिक भी मिथ्या नहीं है। फिर

भी वत्स! तुम विधिपूर्वक स्त्री संग्रह करो ऐसा न हो कि इस लोक का लाभ न मिलने के कारण तुम्हारा जन्म निष्फल हो जाए। रूचि ने कहा:— पितरो! अब तो मैं बूढ़ा हो गया हूँ। भला मुझ को कौन स्त्री देगा। मेरे जैसा दरिद्र (कंगाल) स्त्री को कैसे रख सकेगा। पितर बोले — वत्स! यदि हमारी बात नहीं मानेगा तो हम लोगों का पतन हो जाएगा और तुम्हारी भी अधोगति होगी। मार्कण्डेय जी ने कहा :— इस प्रकार कह कर पितर अदृश हो गए। रूचि उनकी बातों से चिन्तित हो गया। विवाह के लिए प्रयत्न किया। तपस्या की। तपस्या करके पत्नी प्राप्त करके गृहस्थी बन गया। फिर पितरों के श्राद्ध किए।

***विचार करें:- रूचि ऋषि के पूर्वज स्वयं शास्त्रविधि रहित श्राद्ध आदि द्वारा पितर पूजा करके पितर बने खड़े है। फिर अपने बच्चे को गुमराह कर रहे हैं। जो शास्त्रविधि अनुसार (वेदों अनुसार) साधना कर रहा था। पितर यह भी स्वीकार कर रहे हैं कि वेदों में कर्म मार्ग (श्राद्ध आदि करना) अविद्या (मूर्ख कार्य) कहा है। पितर भी अपने लोक वेद के आधार से अपने बच्चे रूचि को शिक्षा दे रहे है कि पितर, देवता व भूतों की पूजा करके पुण्यमय लोकों को प्राप्त करता है। विचार करने वाली बात है कि पितर क्यों नहीं गए उन पुण्यमय लोकों को? स्वयं शास्त्रविधि त्याग कर साधना करके भूखे मर रहे हैं। रूचि को भी पितर बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। स्वयं कह रहे हैं कि यदि तू श्राद्ध नहीं करेगा तो हमारा पतन हो जाएगा। भावार्थ है कि श्राद्ध करने से ही पितरों को आहार मिलता है। फिर उनके पुण्य कहां गए? वास्तविकता यह है कि पितर पूजा करके पितर बन गए। पितर योनि बहुत कष्टमय होती है। इसकी आयु भी अधिक होती है। इस योनि को भोग कर फिर अन्य प्राणियों की योनियों में शरीर धारण करना पड़ेगा।***

***शंका प्रश्न:- यदि किसी के माता-पिता भूखे हो वे दिखाई दे कर कहें तो वह पुत्र नहीं जो उनकी इच्छा पूरी न करे।***

***शंका समाधान:- यदि किसी का बच्चा कुएं में गिरा हो वह तो चिल्लाएगा मुझे बचा लो। पिता जी आ जाओ मैं मर रहा हूँ। वह पिता मूर्ख होगा जो भावुक हो कर कुएं में छलांग लगाकर बच्चे को बचाने की कोशिश करके स्वयं भी डूब कर मर जाएगा। बच्चे को भी नही बचा पाएगा। उस को चाहिए कि लम्बी रस्सी का प्रबन्ध करे। फिर उस कुएं में छोड़े। बच्चा उसे पकड़ ले फिर बाहर खेंच कर बच्चे को कुएं से निकाले। इसी प्रकार पूर्वज तो शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करके पितर बन चुके हैं। संतान को भी पितर बनाने के लिए पुकार रहे हैं। इसलिए श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि तत्वज्ञान को समझ कर अपना कल्याण कराए तथा मुझ दास (रामपाल दास) के पास परमेश्वर कबीर बंदी छोड़ जी की प्रदान की हुई वह विधि है जो साधक का तो कल्याण करेगी ही साथ में उसके पितरों की भी पितर योनि छूट कर मानव जन्म प्राप्त होगा तथा भक्ति युग में जन्म होकर सत्य भक्ति करके एक या दो जन्म में पूर्ण मोक्ष प्राप्त करेगें।***

*विचार करें :- जैसा कि उपरोक्त रूचि ऋषि की कथा में पितर डर रहे हैं कि यदि हमारे श्राद्ध नहीं किए गए तो हम पतन को प्राप्त होगें अर्थात् हमारा पतन (मृत्यु) हो जाएगा। अब उनको पितर योनि जो अत्यंत कष्टमय है अच्छी लग रही है। उसे त्यागना नहीं चाह रहे यह तो वही कहानी वाली बात है कि ''एक समय एक ऋषि को अपने भविष्य के जन्म का ज्ञान हुआ। उसने अपने पुत्रों को बताया कि मेरा अगला जन्म अमूक व्यक्ति के घर एक सूअरी से होगा। मैं सूअर का जन्म पाऊंगा उस सूअरी के गले में गांठ है यह उसकी पहचान है उसके उदर से मेरा जन्म होगा। मेरी पहचान यह होगी की मेरे सिर पर गांठ होगी जो दूर से दिखाई देगी। मेरे बच्चों उस व्यक्ति से मुझे मोल ले लेना तथा मुझे मार देना, मेरी गति कर देना। बच्चों ने कहा बहुत अच्छा पिता जी। ऋषि ने फिर आँखों में पानी भर कर कहा बच्चों कही लालच वश मुझे मोल न लो और मुझे तुम मारो नहीं, यह कार्य तुम अवश्य करना, नहीं तो मैं सूअर योनि में महाकष्ट उठाऊंगा। बच्चों ने पूर्ण विश्वास दिलाया। उसके पश्चात् उस ऋषि का देहांत हो गया। उसी व्यक्ति के घर पर उसी गले में गांठ वाली सुअरी के वहीं सिर पर गांठ वाला बच्चा भी अन्य बच्चों के साथ उत्पन्न हुआ। उस ऋषि के बच्चों ने वह सुअरी का बच्चा मोल ले लिया। जब उसे मारने लगे उसी समय वह बच्चा बोला बेटा मुझे मत मारो मेरा जीवन नष्ट करके तुम्हें क्या मिलेगा। तब उस ऋषि के पूर्व जन्म के बेटों ने कहा, पिता जी! आपने ही तो कहा था। तब वह सुअर के बच्चे रूप में ऋषि बोला मैं आपके सामने हाथ जोड़ता हूँ मुझे मत मारो, मेरे भाईयों (अन्य सूअर के बच्चों) के साथ मेरा दिल लगा है। मुझे बख्श दो। बच्चों ने वह बच्चा छोड़ दिया मारा नहीं। इस प्रकार यह जीव जिस भी योनि में उत्पन्न हो जाता है उसे त्यागना नहीं चाहता। जबकि यह शरीर एक दिन सर्व का जाएगा। इसलिए भावुकता में न बह कर विवेक से कार्य करना चाहिए। यह दास (रामपाल दास) जो साधना बताएगा उससे आम के आम और गुठलियों के दाम भी मिलेगें इसी विष्णु पुराण में तृतीय अंश के अध्याय 15 श्लोक 55-56 पृष्ठ 213 पर लिखा है कि ''(और्व ऋषि सगर राजा को बता रहा है )''* हे राजन् श्राद्ध करने वाले पुरूष से पितरगण, विश्वदेव गण आदि सर्व संतुष्ट हो जाते हैं। हे भूपाल! पितरगण का आधार चन्द्रमा है और चन्द्रमा का आधार योग (शास्त्रअनुकूल भक्ति) है। इसलिए श्राद्ध में योगी जन (तत्व ज्ञान अनुसार शास्त्रविधि अनुसार भक्ति कर रहे साधक जन) को अवश्य बुलाए। यदि श्राद्ध में एक हजार ब्राह्मण भोजन कर रहे हों उनके सामने एक योगी (शास्त्रअनुकूल साधक) भी हो तो वह उन एक हजार ब्राह्मणों का भी उद्धार कर देता है तथा यजमान तथा पितरों का भी उद्धार कर देता है। ***(पितरों का उद्धार का अर्थ है कि पितरों की योनि छूट कर मानव शरीर मिलेगा यजमान तथा ब्राह्मणों के उद्धार से तात्पर्य यह है कि उनको सत्य साधना का उपदेश करके मोक्ष का अधिकारी बनाएगा)***

*योगी की परिभाषा :- गीता अध्याय 2 श्लोक 53 में कहा है कि हे अर्जुन! जिस समय आप की बुद्धि भिन्न-2 प्रकार के भ्रमित करने वाले ज्ञान से हट कर एक तत्व*

*ज्ञान पर स्थिर हो जाएगी तब तू योगी बनेगा अर्थात् भक्त बनेगा। भावार्थ है कि तत्व ज्ञान आधार से साधना करने वाला ही मोक्ष का अधिकारी बनता है उसी में नाम साधना (भक्ति) का धन होता है वह राम नाम की कमाई का धनी होता है।*

*इसलिए यह दास (रामपाल दास) आपको वह शास्त्रअनुकूल साधना प्रदान करेगा जिससे आप योगी (सत्य साधक) हो जाओगे। आपका कल्याण तथा आपके पितरों का भी कल्याण हो जाएगा। जैसा कि विष्णु पुराण तृतीय अंश अध्याय 15 श्लोक 13 से 17 पृष्ठ 210 पर लिखा है कि देवताओं के निमित्त श्राद्ध (पूजा) में अयुग्म संख्या (3,5,7,9 की संख्या) में ब्राह्मणों को एक साथ भोजन कराए तथा उनका मुंह पूर्व की ओर बैठा कर भोजन कराए तथा पितरों के लिए श्राद्ध (पूजा) करने के समय युग्म संख्या (दो, चार, छः, आठ की संख्या) में उत्तर की ओर मुख करके बैठाए तथा भोजन कराए। विचार करने की बात यह है कि इसी विष्णु पुराण, इसी तृतीया अंश के अध्याय 15 में श्लोक 55-56 पृष्ठ 213 पर यह भी तो लिखा है कि एक योगी (शास्त्रअनुकूल सत्य साधक) अकेला ही पितरों तथा एक हजार ब्राह्मणों तथा यजमान सहित सर्व का उद्धार कर देगा। क्यों न हम एक योगी की खोज करें जिससे सर्व लाभ प्राप्त हो जाएगा।*

***कबीर परमेश्वर जी ने कहा है :-*** एकै साधे सब सधै, सब साधै सब जाय,
माली सीचें मूल को, फलै फूलै अघाय।।

*यह दास (रामपाल दास) भी धार्मिक अनुष्ठान (श्रद्धा से पूजा) करता और कराता है। जिसके करने से साधक पितर, भूत नहीं बनता अपितु पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है तथा जो पूर्वज गलत साधना (शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण अर्थात् पूजा) करके पितर भूत बने हैं, उनका भी छुटकारा हो जाता है। यही प्रमाण इसी विष्णु पुराण पृष्ठ 209 पर इसी तृतीय अंश के अध्याय 14 श्लोक 20 से 31 में भी लिखा है कि जिसके पास श्राद्ध करने के लिए धन नहीं है तो वह यह कहे '' हे पितर गणों आप मेरी भक्ति से तृप्ति लाभ प्राप्त करें। क्योंकि मेरे पास श्राद्ध करने के लिए वित्त नहीं है'' कृप्या पाठक जन विचार करें कि जब भक्ति (मन्त्र जाप की कमाई) से पितर तृप्त हो जाते हैं तो फिर अन्य कर्मकाण्ड की क्या आवश्यकता है। यह सर्व प्रपण्च ज्ञानहीन गुरू लोगों ने अपने उदर पोषण के लिए ही किया है। क्योंकि गीता अध्याय 4 श्लोक 33 में भी लिखा है द्रव्य (धन द्वारा किया) यज्ञ (धार्मिक अनुष्ठान) से ज्ञान यज्ञ (तत्वज्ञान आधार पर नाम जाप साधना) श्रेष्ठ है।*

*एक और विशेष विचारणीय विषय है कि विष्णु पुराण में पितर व देव पूजने का आदेश एक ऋषि का है तथा वेदों व गीता जी में पितरों वे देवताओं की पूजा का निषेध है जो आदेश ब्रह्म (काल रूपी ब्रह्म) भगवान का है। यदि पुराणों के अनुसार साधना करते हैं तो प्रभु के आदेश की अवहेलना होती है। जिस कारण से साधक दण्ड का भागी होता है।*

*एक कथा है :- एक समय एक व्यक्ति की दोस्ती एक पुलिस थानेदार से हो गई। उस व्यक्ति ने अपने दोस्त थानेदार से कहा कि मेरा पड़ोसी मुझे बहुत परेशान करता है। थानेदार (S.H.O.) ने कहा कि मार लट्ठ मैं आप निपट लूंगा। थानेदार दोस्त की आज्ञा का पालन करके उस व्यक्ति ने अपने पड़ौसी को लट्ठ मारा, सिर में चोट लगने के कारण पड़ौसी की मृत्यु हो गई। उसी क्षेत्र का अधिकारी होने के कारण वह थाना प्रभारी अपने दोस्त को पकड़ कर लाया, कैद में डाल दिया तथा उस व्यक्ति को मृत्यु दण्ड मिला। उसका दोस्त थानेदार कुछ मदद नहीं कर सका। क्योंकि राजा का संविधान है कि यदि कोई किसी की हत्या करेगा तो उसे मृत्यु दण्ड प्राप्त होगा। उस नादान व्यक्ति ने अपने दोस्त दरोगा की आज्ञा मान कर राजा का संविधान भंग कर दिया। जिससे जीवन से हाथ धो बैठा। ठीक इसी प्रकार पवित्र गीता जी व पवित्र वेद यह प्रभु का संविधान है। जिसमें केवल एक पूर्ण परमात्मा की पूजा का ही विधान है, अन्य देवताओं - पित्तरों - भूतों की पूजा करना मना है। पुराणों में ऋषियों (थानेदारों) का आदेश है। जिनकी आज्ञा पालन करने से प्रभु का संविधान भंग होने के कारण कष्ट पर कष्ट उठाना पड़ेगा। इसलिए आन उपासना पूर्ण मोक्ष में बाधक है।*

अन्य उदाहरण *:- मेरे पूज्य गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी लगभग सोलह वर्ष की आयु में पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति के लिए अचानक घर त्याग कर निकल गए। प्रतिदिन पहनने वाले वस्त्रों को अपने ही खेतों के निकट घने जंगल में किसी मृत पशु की अस्थियों के पास डाल गए। शाम को घर न पहुँचने के कारण घर वालों ने जंगल में खोज की। रात्री का समय था। कपड़े पहचान कर दुःखी मन से पशु की अस्थियों को बच्चे की अस्थियाँ जान कर उठा लाए तथा यह सोचा कि बच्चा जंगल में चला गया, किसी हिंसक जानवर ने खा लिया। अन्तिम संस्कार कर दिया। सर्व क्रियाऐं की, तेरहवीं - बरसी आदि की तथा श्राद्ध भी निकालते रहे। लगभग 104 वर्ष की आयु प्राप्त होने के उपरान्त स्वामी जी अचानक अपने गाँव बड़ा पैंतावास,त.चरखीदादरी,जिला भिवानी, हरियाणा में पहुँच गए। स्वामी जी का बचपन का नाम श्री हरिद्वारी जी था तथा पवित्र ब्राह्मण कुल में जन्म था।*

*मुझ दास को पता चला तो मैं भी दर्शनार्थ पहुँच गया। स्वामी जी की भाभी जी जो लगभग 92 वर्ष की आयु की थी। मैंने उस वृद्धा से पूछा कि हमारे गुरु जी के घर त्याग जाने के उपरान्त क्या महसूस किया? उस वृद्धा ने बताया कि मेरा विवाह हुआ तब मुझे बताया गया कि इनका एक भाई हरिद्वारी था जो किसी हिंसक जानवर ने जंगल में खा लिया था। उसके श्राद्ध निकाले जा रहे हैं। मुझे भी इनके श्राद्ध निकालने को कहा गया। वृद्धा ने बताया कि 70 श्राद्ध तो मैं अपने हाथों निकाल चुकी हूँ। जब कभी फसल अच्छी नहीं होती या कोई घर का सदस्य बीमार हो जाता तो अपने पुरोहित (गुरु जी) से कारण पूछते तो वह कहा करता कि हरद्वारी पित्तर बना है, वह तुम्हें दुःखी कर रहा है। श्राद्धों के निकालने में कोई अशुद्धि रही है। अबके मैं स्वयं सर्व*

क्रिया अपने हाथों से करूंगा। पहले मुझे समय नहीं मिला था, क्योंकि एक ही दिन में कई जगह श्राद्ध क्रियाऐं करने जाना पड़ा। इसलिए बच्चे को भेजा था। तब तक कुछ भेंटें चढ़ाओं ताकि उसे शान्त किया जाए। तब उसे 21 या 51 जो भी कहता था डरते भेंट करते थे, फिर श्राद्धों के समय गुरु जी स्वयं श्राद्ध करते थे। तब मैंने कहा माता जी अब तो छोड़ दो इस गीता जी विरुद्ध साधना को। नहीं तो आप भी प्रेत बनोगी। गीता अध्याय 9 श्लोक 25 सुनाया। तब वह वृद्धा कहने लगी गीता मैं भी पढती हूँ। दास (रामपाल दास) ने कहा आपने गीता जी को पढ़ा है, समझा नहीं। आगे से तो बन्द कर दो इस नादान साधना को। वृद्धा ने उत्तर दिया ना भाई, कैसे छोड़ दें श्राद्ध निकालना, यह तो सदियों पुरानी (लाग) परम्परा है।

प्रश्नः- मैं तो योगी उसी को मानता हूँ जो आसन करता है तथा कराता (सिखाता) है तथा किसी आसन विशेष पर आरूढ़ होकर तपस्या भक्ति करता है ?

उत्तरः- योगी वह भी कहलाता है परन्तु वह योगी तो एक मात्र प्राकृतिक चिकित्सक (वैद्य) है। यह अष्टांग योग प्रभु साधना में इसलिए सहयोगी माना गया है कि इससे शरीर स्वस्थ रहता है। स्वस्थ शरीर से भक्ति अच्छी होती है। परन्तु आध्यात्मिक मार्ग में उस योगी की भूमिका नहीं मानी जाती क्योंकि परमात्मा की सत्य साधन (योग) से साधक का असाध्य रोग भी ठीक हो जाता है। जिससे साधक की श्रद्धा अधिक बढ़ जाती है वह अधिक श्रद्धा से साधना (योग) करके परमात्मा प्राप्ति कर जाता है। एक अष्टांग योगी (आसन व क्रिया करने वाला) दुर्घटना की चपेट में आ गया दोनों टांगे टूट गई। उनमें स्टील (इस्पात) की राड़ें (छड़ीयाँ) डाली गई। वह आजीवन अष्टांग योग नहीं कर सका। किसी एक स्थान पर आसन पर बैठकर भी वह दुर्घनाग्रस्त व्यक्ति भक्ति भी नहीं कर सकता। आप के अनुसार तो वह भक्ति से वंचित रह जाऐगा। शास्त्रअनुकूल साधक (योगी) का ऐसी घटनाओं से परमात्मा बचाव करता है।

श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 3 श्लोक 4 से 8 में कहा है कि जो मूर्ख व्यक्ति हठ योग कर (एक स्थान पर किसी आसन पर आरूढ़ होकर) भक्ति करता है। वह पाखण्ड करता है क्योंकि वह केवल कर्म इन्द्रियों को हठ पूर्वक रोक कर स्थित है परन्तु ज्ञान इन्द्रियों द्वारा बाह्यय वस्तुओं के चिन्तन में लगा है। यदि अर्जुन तू एक स्थान पर किसी आसन पर आरूढ़ होकर बैठा रहेगा तो तेरा निर्वाह कैसे होगा? इसलिए संसारिक कर्म करता हुआ, परमात्मा को भी याद कर। गीता अध्याय 8 श्लोक 7 तथा 13 में तो यहाँ तक कहा है कि मेरा एक ॐ (ओं) अक्षर है समरण करने का उसका अन्तिम स्वांस तक समरण करने से मेरे वाली गति प्राप्त होती हैं इसलिए अर्जुन तू युद्ध भी कर तथा मेरा समरण भी कर।

विचार करें :- युद्ध से कठिन कार्य कुछ नहीं होता उसमें भी प्रभु का समरण करने को कहा है। इससे सिद्ध हुआ कि परमात्मा की भक्ति कार्य करते-करते करनी

*है। जो सर्व सद्ग्रन्थों में प्रमाण है। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 में कहा है ! ओम् (ॐ) मन्त्र का समरण काम करते-करते कर, विशेष कसक के साथ समरण कर मानव जीवन का मूल कर्तव्य समझ कर समरण कर जिससे मृत्यु के पश्चात् तेरा लिंग शरीर अमर हो जाएगा। जब तक स्थूल शरीर है अर्थात् जीवित है तब तक समरण करने से लाभ प्राप्त होता है। इससे सिद्ध हुआ कि एक स्थान पर आसन लगाकर साधना करना शास्त्रविरूद्ध है। पाठकों के मन में यह भी प्रश्न उठेगा कि गीता ज्ञान दाता ने, गीता अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 में यह भी कहा है कि एकांत स्थान में एक आसन पर बैठकर नाक के अगले भाग को देखें ऐसे साधना करें। इस प्रश्न का उत्तर पवित्र गीता जी से मिलता है। गीता ज्ञान दाता (काल रूपी ब्रह्म) ने गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि तत्वज्ञान (पूर्ण मोक्ष मार्ग की भक्तिविधि के ज्ञान) को समझने के लिए तत्वदर्शी संतों से विनम्र भाव से पूछो फिर जैसा मार्गदर्शन वे करें। उस प्रकार साधना कर। तत्वदर्शी संत की पहचान गीता अध्याय 15 श्लोक 1 व 4 में बताई है।*

*इस प्रकार गीता ज्ञान दाता प्रभु ने अपने आप को दोष मुक्त कर रखा है तथा अपने गीता ज्ञान में स्थान-2 पर कहा है कि यह मेरा मत (विचार) है। वास्तविक भक्ति विधि तो तत्वदर्शी सन्त ही बताएगा। इस (गीता अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 वाले) ज्ञान का गीता अध्याय 3 श्लोक 4 से 8 में तथा अध्याय 6 के 16 में ही खण्डन किया है। पूर्ण परमात्मा द्वारा मिलने वाला पूर्ण मोक्ष (न एकांतम्) न तो एक स्थान पर विशेष आसन पर बैठने से सिद्ध होता है। न अधिक खाने वाले का न बिल्कुल न खाने वाले का (व्रत/उपवास रखने वाले का) न अधिक जागने वाले (हठयोग करने वाले) का न अधिक सोने वाले का सिद्ध होता है अर्थात् उपरोक्त क्रिया करने वाले की भक्ति व्यर्थ है। क्योंकि गीता अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 में तो गीता ज्ञान दाता ने अपनी भक्ति साधना विधि बताई है। जिससे होने वाली मुक्ति (गति) को गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अश्रेष्ठ बताया है। जिस कारण से गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में कहा है कि अर्जुन तेरे तथा मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। अर्थात् हम (मैं तथा मेरे साधक तथा तू) पूर्ण मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62, अध्याय 15 श्लोक 4 में किसी अन्य परमात्मा की साधना करने को कहा है तथा उस परमात्मा की भक्तिविधि कोई तत्वदर्शी (पूर्ण) सन्त बताएगा। (इसलिए पाठक जन भ्रमित न होकर तत्वज्ञान को समझें)*

*श्री विष्णु पुराण के जिस विवरण के विषय में आपने कहा है उसका निष्कर्ष यह है कि ''श्री पारासर जी ने अपने शिष्य श्री मैत्रेय जी को बताया है कि जो श्राद्ध कर्म (पितर पूजा) आदि के विषय में आपने मुझ से पूछा है यही प्रश्न राजा सगर ने भृगु वंशी ऋषि और्व जी से पूछा था। जो और्व ऋषि ने राजा सगर से श्राद्ध कर्म (पितर पूजा) के विषय में बताया था वह मैं आप को सुनाता हूँ ध्यान पूर्वक सुन! पाठक जन कृपया पूर्ण वार्ता श्री विष्णु पुराण तृतीय अंश के अध्याय 13 से 16 पृष्ठ 203 से 215*

*तक पढ़ें। यहां पर पुस्तक विस्तार को ध्यान रखते हुए, संक्षिप्त व सांकेतिक विवरण विवेचन के साथ लिखा जाता है। सर्वप्रथम तो श्री विष्णु पुराण के वक्ता महर्षि पाराशर जी को तत्वज्ञान रूपी तुला में तोलते हैं। निर्णय करते हैं कि पाराशर जी कितने विद्वान थे।*

*श्री पाराशर महर्षि जी ने श्री विष्णु पुराण द्वितीय अंश के अध्याय 7 श्लोक 5 में पृष्ठ संख्या 126-127 पर ग्रहों की जानकारी दी है। जिसमें पृथ्वी के निकटतम् सूर्य को बताया जिसकी पृथ्वी से दूरी एक लाख योजन अर्थात् तेरह लाख किलो मीटर बताई इसके पश्चात् बताया है कि चन्द्रमा सूर्य ये भी एक लाख योजन दूर है। जिसकी पृथ्वी से दूरी 2 लाख योजन (26 लाख किलो मीटर) बताई है।*

*विचार करें वर्तमान में (सन् 2006 तक की खोज से) स्पष्ट हो चुका है कि चन्द्रमा पृथ्वी के निकटतम् है जिसकी पृथ्वी से दूरी सूर्य की तुलना में कई गुणा कम है।*

*दूसरा प्रमाण :- श्री विष्णु पुराण प्रथम अंश अध्याय 5 पृष्ठ 17 पर दिन-रात कैसे बने हैं। इसकी जानकारी ये है। श्री पारासर जी ने कहा कि प्रजापति ब्रह्मा जी सृष्टी-रचना की इच्छा से युक्तचित हुए तो तमोगुण की वृद्धि हुई। सब से पहले असुर उत्पन्न हुए। ब्रह्मा ने उस शरीर को त्याग दिया वह छोड़ा हुआ शरीर रात्रि हुआ। दूसरा शरीर धारण किया उस शरीर से देव उत्पन्न हुए। प्रजापति ब्रह्मा ने वह शरीर भी त्याग दिया। वह त्यागा हुआ शरीर दिन हुआ। पाठक जन कृप्या विचार करें क्या ये विचार एक विद्वान के हैं।*

*श्री विष्णु पुराण के वक्ता का सामान्य ज्ञान भी ठीक नहीं है तो उसके द्वारा बताया गया अध्यात्मिक ज्ञान कैसे ठीक हो सकता है। श्री पारासर जी ने फिर ग्रहों की अन्य व्याख्या की है :- श्री विष्णु पुराण के वक्ता श्री पाराशर जी ने श्री विष्णु पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से ही प्रकाशित) के द्वितीय अंश के अध्याय 8 के श्लोक 1 से 7 में पृष्ठ 129 पर सुर्य (जो अग्नि पिण्ड आकाश में तप रहा है) के रथ के विषय में कहा है* "सूर्य के रथ का विस्तार नो हजार योजन है। इसके जूआ और रथ के बीच की दूरी 18 हजार योजन है। इसका धुरा डेढ़ करोड़ सात लाख योजन है। अर्थात् एक करोड़ 57 लाख योजन लम्बा है। जिसमें उसका पहिया लगा है आदि–2 बहुत कुछ लिखा है। ***कृपया पाठक जन विचार करें क्या यह ज्ञान किसी विद्वान पुरूष का हो सकता है। श्री विष्णु पुराण में इसी अग्नि पिण्ड सूर्य के विषय में पृष्ठ 166 से 167 पर तृतीय अंश के अध्याय 2 के श्लोक 1 से 13 में श्री पाराशर ऋषि ने कहा है कि*** ''सूर्य का विवाह विश्वकर्मा की बेटी संज्ञा से हुआ उससे दो पुत्र मनु व यम तथा एक कन्या यमी उत्पन्न हुई। सूर्य की पत्नी संज्ञा अपने पति के तेज से दुःखी होकर तपस्या करने के लिए वन में चली गई। वहां घोड़ी का रूप बना कर तपस्या करने लगी अपने स्थान पर अपनी हमशक्ल अन्य स्त्री प्रकट की उसका नाम छाया रखा तथा उससे संज्ञा ने कहा तू मेरे पति की पत्नी बनकर रह। यह भेद किसी को मत बताना। मेरा पति तुझे संज्ञा ही समझेगा।

छाया ने कहा जो आपकी आज्ञा। सूर्य ने छाया को संज्ञा जानकर दो संतान उत्पन्न की एक लड़का एक लड़की।

एक दिन भेद खुलने पर सूर्य अपने श्वशुर विश्वकर्मा के पास गए तथा विश्वकर्मा से कहा आप मेरा तेज छांट दो इस तेज के डर से आपकी बेटी संज्ञा वन में चली गई है। श्री विश्वकर्मा जी ने सूर्य को भ्रमीयन्त्र (सान) पर चढ़ा कर उसका तेज छांटा (काट दिया) वह कचरा (खराद से छटा हुआ कट पीस) धरती पर गिरा जिससे श्री विश्वकर्मा ने भगवान विष्णु का ''चक्र'' भगवान शिव का त्रिशुल तथा कुबेर का विमान आदि–2 बनाए। तत् पश्चात सूर्य घोड़ा बन कर संज्ञा के पास वन में गया। संज्ञा से घोड़ी रूप में ही संभोग करके तीन पुत्र उत्पन्न किए। दो घोड़ी के मुख से उत्पन्न हुए उनको अश्वनी कुमार कहा जाता है। जिनके नाम है (1) नासत्य (2) दस्र ये दोनों अश्वनी कुमार देवताओं के वैद्य बने तथा तीसरा पुत्र रेतःस्राव उत्पन्न हुआ जहां पर सूर्य का वीर्य उस समय गिरा था। जब वह घोड़ी रूप धारी संज्ञा के मुख की ओर ही घोड़ा रूप में संभोग करने की कोशिश कर रहा था। वहां गिरे वीर्य से रेतःस्राव पुत्र जमीन पर ही उत्पन्न हो गया। वह घोड़ा पर बैठा हुआ हाथ में धनुष आदि लिए हुए उत्पन्न हुआ था जिस स्थान पर इस आग के गोले (अग्नि पिण्ड) सूर्य ने घोड़े का रूप धारण करके घोड़ी रूप नारी संज्ञा से संभोग किया था। जहां दो पुत्र अश्विनी कुमार (नासत्य तथा दस्र) उत्पन्न किए थे। उस तीर्थ का नाम अश्व तीर्थ, भानु तीर्थ और पंचवटी आश्रम के नाम से विख्यात हुआ सूर्य की दोनों कन्याएं दो नदीयों अरूणा, वरूणा नाम से अपने पिता से मिलने आई थी उन दोनों का जहां गंगा नदी में संगम हुआ है वह बहुत उत्तम तीर्थ उन तीर्थों में स्नान करने से व दान करने से अक्षय धन देने वाला है। उस तीर्थ का समरण, कीर्तन, श्रवण (सुनने) करने से सर्व पापों का नाश होकर मनुष्य सुखी हो जाता है। **(उपरोक्त विवरण मार्कण्डेय पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित पृष्ठ 172 से 175 अध्याय वैवस्वत मन्वन्तर की कथा तथा सावर्णिक मन्वन्तर का संक्षिप्त परिचय से तथा ब्रह्म पुराण अध्याय ''जन स्थान, अश्व तीर्थ, भानु तीर्थ और अरूणा वरूणा संगम की महिमा से तथा विष्णु पुराण के तृतीय अंश के अध्याय 2 श्लोक 1 से 13 पृष्ठ 166-167 से लिया गया है)** इसी विष्णु पुराण द्वितीय अंश के अध्याय 8 श्लोक 41 से 52 तक तथा पृष्ठ 132 पर कहा है कि सूर्य कभी दिन में तेज गति से चलता है कभी रात्री में मंद गति से चलता है इस प्रकार अपना एक दिन रात का चक्र मण्डलाकार में घूम कर पूरा करता है। **(पुराण वक्ता का भाव है कि सूर्य के पृथ्वी के चारों ओर चक्र लगाने से दिन रात बनते हैं जब कि वर्तमान में (सन् 2006 तक की खोज में)स्पष्ट हो चुका है कि पृथ्वी स्वयं घूमती है जिस कारण से दिन-रात बनते हैं तथा पृथ्वी एक वर्ष में (364 (दिन में) सूर्य के चारों ओर भी घूमती है जिस कारण से दिन-रात छोटे बड़े बनते हैं।)**

पुराण के वक्ता ने यह भी लिखा है कि शाम के समय (संध्या समय) मन्देहा नामक भयंकर राक्षक गण सूर्य को खाना चाहते है। संध्या काल में उनका सूर्य से भयंकर युद्ध होता है।

***निष्कर्ष :- उपरोक्त पुराण के लेख से पुराण के वक्ता श्री पाराशर ऋषि के आध्यात्मिक व सामान्य ज्ञान का पता चलता है कि वह विद्वान नहीं था। फिर उस महापुरूष द्वारा बताया श्राद्ध कर्म जिसे आप करते हैं। वह कैसे श्रेष्ठ माना जाए। जबकि पवित्र वेदों व पवित्र गीता जी आदि प्रभुदत्त सद्ग्रन्थों में श्राद्ध कर्म व देवताओं की पूजा को मूर्खों की साधना लिखा है। पूर्वोक्त लेख में रूची ऋषि के प्रकरण में***

*आपने पढ़ा जिसमें वेदों के ज्ञाता रूची ऋषि जी अपने पितरो को वेदों के प्रमाण दे कर कह रहा है कि श्राद्ध कर्म, देवताओं की पूजा, भूत (प्रेत) पूजा को वेदों में मूर्खों की साधना कहा है। फिर आप मुझे किसलिए शास्त्रविरूद्ध साधना करने की प्रेरणा दे रहे हो। श्री रूची ऋषि जी व चारों पितर भी, इसी बात का समर्थन कर रहे हैं कि यह तो सत्य है कि वेदों में श्राद्ध कर्म, देवताओं की पूजा, प्रेत (भूत) पूजा का निषेध है। मूर्खों की पूजा कहा है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। इसके पश्चात् पितरों ने अपने भोले-भाले वंशज रूची ऋषि को शास्त्रविधि अनुसार साधना त्यागने तथा शास्त्रविधि विरूद्ध मनमाना आचरण (पूजा) करने के लिए विवश कर दिया जिस कारण से श्री रूचि ऋषि भी शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण (पूजा) करके मानव जीवन को व्यर्थ करके पितर जूनी (योनि) को प्राप्त हुआ। श्री मद्भगवत् गीता जी (जो चारों वेदों का सारांश है।) के अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि जो साधक शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करता है। उस को न तो सिद्धि प्राप्त होती है, न उसकी परमगति (मोक्ष) होती है न कोई सुख ही प्राप्त होता है अर्थात् उस शास्त्रविरूद्ध साधना करने वाले योगी (भक्त) का जीवन नष्ट हो जाता है। यह प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में है। श्लोक 24 में लिखा है कि जो साधना ग्रहण करनी चाहिए तथा जो त्यागनी चाहिए उसके लिए तुझे शास्त्र (चारों वेद) ही प्रमाण है। अन्य किसी के लोक वेद (दन्त कथा) का अवलम्बन नहीं करना चाहिए।*

*श्री विष्णु पुराण के तृतीय अंश के अध्याय 14 के श्लोक 10 से 14 में श्राद्ध के विषय में श्री सनत्कुमार ने कहा है कि तृतीया, कार्तिक, शुक्ला नौमी, भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी तथा माघमास की अमावस्या इन चारों तिथीयाँ अनन्त पुण्यदायीनि हैं। चन्द्रमा या सूर्य ग्रहण के समय तीन अष्टकाओं अथवा उत्तरायण या दक्षिणायन के आरम्भ में जो पुरूष एकाग्रह चित से पितर गणों को तिल सहित जल भी दान करता है वह मानो एक हजार वर्ष तक के लिए श्राद्ध कर लेता है। यह परम रहस्य स्वयं पितर गण ही बताते है।'' (लेख समाप्त)*

*विचार करें उपरोक्त श्राद्ध विधि पितरों के द्वारा बताई गई है न की वेदोक्त या श्री मद्भगवत् गीता के आधार से है। इसलिए कृप्या पढ़े पूर्वोक्त विवरण ''थानेदार वाला'' इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान) के पृष्ठ 6 पर।*

*श्री विष्णु पुराण के तृतीय अंश के अध्याय 16 के श्लोक 11 में पृष्ठ 214 पर लिखा है ''क्षीरमेकशफाना यदौष्ट्रमाविकमेव च। मार्ग च माहिष चैव वर्जयेच्छाकर्माणि''।। इस श्लोक का हिन्दी अनुवाद=एक खुरवालों का, ऊंटनी का, भेड़ का मृगी का तथा भैंस का दूध श्राद्धकर्म में प्रयोग न करें (काम में न लाऐं)*

*समीक्षा :- वर्तमान (सन् 2006 तक) सर्व व्यक्ति श्राद्धों में भैस के दूध का ही प्रयोग कर रहे हैं। जो पुराण में वर्जित है। जिस कारण से उनके द्वारा किया श्राद्ध कर्म भी व्यर्थ हुआ। श्री विष्णु पुराण के तृतीय अंश के अध्याय 16 के श्लोक 1 से 3 में पृष्ठ*

***213 पर (मांस द्वारा श्राद्ध करने से पितर गण सदा तृप्त रहते हैं।) लिखा है*** ''हविष्यमत्स्य मांसैस्तु शशस्य नकुलस्य च । सौकरछाग लैणेयरौरवैर्गवयेन च।। (1) और भ्रगव्यैश्च तथा मासवृद्धया पिता महाः (2) खडगमांसमतीवात्र कालशाकं तथा मधु। शस्तानि कर्मण्यत्यन्ततृप्तिदानि नरेश्वर ।। (3) हिन्दी अनुवाद :– हवि, मत्सय (मच्छली) शशंक (खरगोश) नकुल, शुकर (सुअर), छाग, कस्तूरिया मृग, काला मृग, गवय (नील गाय/वन गाय) और मेष (भेड़) के मांसों से गव्य (गौ के घी, दूध) से पितरगण एक–एक मास अधिक तृप्त रहते हैं और वार्ध्रीणस पक्षी के मांस से सदा तृप्त रहते हैं। (1-2) श्राद्ध कर्म में गेड़े का मांस काला शाक और मधु अत्यंत प्रशस्त और अत्यंत तृप्ती दायक है।। (3) श्री विष्णु पुराण अध्याय 2 चतुर्थ अंश पृष्ठ 233 पर भी श्राद्ध कर्म में मांस प्रयोग प्रमाण स्पष्ट है।

***समीक्षा :- उपरोक्त पुराण के ज्ञान आदेशानुसार श्राद्ध कर्म करने से पुण्य के स्थान पर पाप ही प्राप्त होगा।***

***क्या यह उपरोक्त मांस द्वारा श्राद्ध करने का आदेश अर्थात् प्रावधान न्याय संगत है अर्थात् नहीं। इसलिए पुराणों में वर्णित भक्तिविधि तथा पुण्य साधना कर्म शास्त्रविरूद्ध है। जो लाभ के स्थान पर हानिकारक है।***

***विशेष :- उपरोक्त श्लोक 1-2 के अनुवाद कर्ता ने कुछ अनुवाद को घुमा कर लिखा है। मूल संस्कृत भाषा में स्पष्ट गाय का मांस श्राद्ध कर्म में प्रयोग करने को कहा गया है। हिन्दी अनुवाद कर्ता ने गव्य अर्थात् गौ के मांस के स्थान पर कोष्ठ में ''गौ के घी दूध से'' लिखा है। विचार करें क्या हिन्दु धर्म उपरोक्त मांस आहार को श्राद्ध कर्म में प्रयोग कर सकता है। कभी नहीं। इसलिए ऐसे श्राद्ध न करके श्रद्धापूर्वक धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण सन्त के बताए मार्ग से करना चाहिए। वह है नाम मंत्र का जाप, पांचों यज्ञ, तीनों समय की उपासना वाणी पाठ से जो यह दास (रामपाल दास) बताता है। जिससे पितरों, प्रेतों आदि का भी कल्याण होकर उपासक पूर्ण मोक्ष प्राप्त करेगा तथा उसके पितर (पूर्वज) जो भूत या पितर योनियों में कष्ट उठा रहे हैं, उनकी वह योनि छूटकर तुरन्त मानव शरीर प्राप्त करके इस भक्ति को प्राप्त करेगें। जिससे उनका भी पूर्ण मोक्ष हो जाएगा।***

***मार्कण्डेय पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) में अध्याय ''श्राद्धकर्म का वर्णन पृष्ठ 92 पर लिखा है*** ''जो प्रपितामह के ऊपर के तीन पीढ़ीयाँ जो नरक में निवास करती हैं, जो पशु–पक्षी की योनि में पड़े है, तथा जो भूत प्रेत आदि के रूप में स्थित है उन सब को विधि पूर्वक श्राद्ध करने वाला यजमान तृप्त करता है। पृथ्वी पर जो अन्न बिखेरते हैं (श्राद्ध कर्म करते समय) उससे पिशाच योनि में पड़े पितरों की तृप्ति होती है। स्नान के वस्त्र से जो जल पृथ्वी पर टपकता है, उससे वृक्ष योनि में पड़े हुए पितर तृप्त होते हैं। नहाने पर अपने शरीर से जो जल के कण पृथ्वी पर गिरते हैं उनसे उन पितरो की तृप्ति होती है जो देव भाव को प्राप्त हुए हैं। पिण्डों के उठाने पर जो अन्न के कण पृथ्वी पर गिरते हैं, उनसे पशु–पक्षी की योनि में पड़े हुए पितरों की तृप्ति होती है। अन्यायोपार्जित धन से जो श्राद्ध किया जाता है, उससे चाण्डाल आदि योनियों में पड़े हुए पितरों की तृप्ति होती है।

*विचार करें :- उपरोक्त योनियों में जो अपने पूर्वज पड़े हैं। उसका मूल कारण है कि उन्होंने शास्त्रविधि अनुसार भक्ति नहीं की। पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों में वर्णित विधि अनुसार साधना करते तो उपरोक्त महाकष्ट दायक योनियों में नहीं पड़ते। मुझ दास (लेखक-रामपाल दास) की सर्व मानव समाज से कर बद्ध प्रार्थना है अब तो जागो, पीछे जो गलती हो चुकी है, उसकी आवृत्ति न हो। जो साधना यह दास (रामपाल दास) बताता है उससे आपके पूर्वज (सात पीढ़ी तक के) किसी भी योनि में (पितर, भूत, पिशाच, पशु-पक्षी, वृक्ष आदि में) पड़े हों उन सर्व की वर्तमान योनि छूटकर तुरन्त मानव जन्म मिलेगा। फिर वे वर्तमान में मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा भक्ति साधना प्राप्त करके यदि मर्यादा में रह कर आजीवन यह भक्ति करते रहेगें तो पूर्ण मोक्ष प्राप्त करेगें। यही प्रमाण कबीर परमेश्वर द्वारा दिए तत्वज्ञान को संत गरीबदास जी बता रहे हैं :-*

अग्नि लगा दिया जद लम्बा, फूंक दिया उस ठाई।पुराण उठाकर पण्डित आए, पीछे गरूड़ पढ़ाई।।
नर सेती फिर पशुवा किजे गधा बैल बनाई, छप्पन भोग कहा मन बौरे किते कुरड़ी चरने जाई।
प्रेत शिला पर जाय विराजे पितरों पिण्ड भराई, बहुर श्राद्ध खाने को आऐ काग भए कलि माहीं।
जै सतगुरू की संगत करते सकल कर्म कट जाई। अमर पुरी पर आसन होते जहाँ धूप ना छांई।

*उपरोक्त वाणी पांचवे वेद (सुक्ष्म अर्थात् स्वसम वेद) की है। जिसमें स्पष्ट किया है कि पितरों आदि के पिण्ड दान करते हुए अर्थात् श्राद्ध कर्म करते-करते भी पशु-पक्षी व भूत प्रेत की योनियों में प्राणी पड़ते हैं तो वह श्राद्ध कर्म किस काम आया? फिर कहा है कि यदि सतगुरू (तत्वज्ञान दाता तत्वदर्शी संत) का संग करते अर्थात् उसके बताए अनुसार भक्ति साधना करते तो सर्व कर्म कट जाते। न पशु बनते, न पक्षी, न पितर बनते, न प्रेत। सीधे सतधाम (शाश्वत स्थान) पर चले जाते जहां जाने के पश्चात् फिर लौट कर इस संसार में किसी भी योनि में नहीं आते (प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 34 अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा श्लोक 16-17 में तथा अध्याय 18 श्लोक 62 में व अध्याय 9 श्लोक 25 में)*

*प्रश्न :- पुराणों की रचना किस कारण हुई। वेदों को छोड़ कर श्रद्धालु पुराणों पर ही किस कारण से आसक्त हो गए।*

*उत्तर :- पवित्र श्री मद्भगवत् गीता जी चारों वेदों का सारांश है। गीता के अध्याय 4 श्लोक 34 में तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 व 13 में लिखा है कि गीता व वेद ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा को कोई उत्पन्न होने वाला अर्थात् जन्म लेने वाला कहता है, तो कोई उत्पन्न न होने वाला कहता है परन्तु उस परमात्मा के तत्वज्ञान को तत्वदर्शी (धीराणाम्) सन्तजन ही बताऐंगे। उनसे विनम्रता से पूछो। ऋषियों ने वेदों को पढ़ा उनके अनुसार तथा काल प्रेरणा से हठयोग से तप आदि साधनाऐं की। जिससे परमात्मा प्राप्ति नहीं हुई। उस साधना से सिद्धीयाँ प्राप्त करके चमत्कार करने लगे, आशीर्वाद देने लगे। साधारण व्यक्तियों को अत्यंत लाभ होने लगे*

*जिस कारण से साधारण जनता उन ऋषियों की प्रत्येक बात पर अटूट विश्वास करने लगी। ऋषियों के शरणागत व्यक्ति ऋषियों के प्रवचन सुनते ऋषि जी कहते कि परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए नहीं तो मानव जन्म व्यर्थ है। अनुयाई कहते थे कि हे गुरुवर! आप जैसी कठिन साधना हम नहीं कर सकते। वे ऋषि जन अपने अनुयाईयों को कोई भी साधना करने को कह देते थे। अनुयाई अपने गुरूदेव ऋषि द्वारा बताई शास्त्रविरूद्ध साधना करने लगे। जिस उद्देश्य से साधना करते जैसे पुत्र प्राप्ति, पुत्र विवाह, धन वृद्धि, कष्ट निवारण आदि। उनमें से कुछेक को यह लाभ उन ऋषियों के आशीर्वाद से तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से प्राप्त हो जाता। परन्तु अनुयाईयों की शास्त्रविरूद्ध साधना जो उनके गुरू ऋषि ने बताई थी उस से कोई लाभ नहीं होता था। श्रद्धालु मानते थे कि हम जो भक्ति कर रहे हैं इसी से हमें लाभ हो रहा है। जिस कारण से उन ऋषियों के अनुयाई शास्त्रविरूद्ध साधना पर आरूढ़ होते चले गये। इसके पीछे काल भगवान (काल रूपी ब्रह्म, जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव का पिता है) की चाल है। वह चाहता है कि सर्व प्राणी शास्त्रविरूद्ध साधना करके मेरे (काल के) जाल में फंसे रहें। यदि कोई ज्ञानी व्यक्ति परमात्मा को वेदों के अपने आधार से समझ कर कि केवल एक पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने से मोक्ष होता है। वह वेदों के अनुसार साधना करके भी काल जाल से नहीं निकल सकता। क्योंकि वेदों में भक्ति विधि केवल ब्रह्म तक की है। पूर्ण मोक्ष तो परम अक्षर ब्रह्म की उपासना से ही सम्भव है। उसको तत्वदर्शी सन्त बताता है। वह तत्व दृष्टा सन्त उन ऋषियों को नहीं मिला। उन ऋषियों के अनुयाई अपने गुरूदेव जी के बताए अनुसार किसी भी मन्त्र का जाप करते, या किसी दरिया (नदी) में स्नान करने या कोई पत्थर का या मिट्टी का लींग बनाकर उसकी पूजा करते उनको उस ऋषि की भक्ति कमाई से आशीर्वाद द्वारा तथा अपनी पूर्व जन्म की भक्ति से वांच्छित लाभ मिल जाता। क्योंकि सत्ययुग में बहुत ही पुण्यकर्मी मानव जन्म लेते हैं। उनके पूर्व जन्म के शुभकर्म अत्यधिक होते हैं। अधिकतर उनकी मनोकामना पूर्ती पूर्व जन्म के पुण्यों से ही होती है। वे श्रद्धालु उस शास्त्र विरूद्ध साधना को सत्य जानकर करते थे तो वे समझते थे कि जो साधना (नाम जाप, मूर्ति पूजा या नदी स्नान) की है उसी से मेरी मनोकामना पूर्ण हुई है। वास्तव में वह लाभ उन साधकों को पूर्व जन्म के शुभ कर्मों से प्राप्त होता था। कुछ उस ऋषि गुरु के आशीर्वाद से प्राप्त होता था। उस ऋषि गुरु की भक्ति कम हो जाती थी। जैसे कोई धनी व्यक्ति अपने प्रशंसकों को अपने पास से धन दे देता है तो उसका धन क्षय हो जाता है। उसी से उसके साथियों को आर्थिक लाभ हो जाता है यदि वह धनी व्यक्ति अपना कारोबार न करके केवल धन बांटता रहता है तो वह निर्धन हो जाता है। इसी प्रकार ऋषिजन कुछ दिन जंगल में जाकर सिद्धियाँ प्राप्ति की साधना करके आते। पश्चात् उसी को अपने अनुयाईयों में बांट देते। अन्त में भक्तिहीन होकर पितर योनि को प्राप्त हो जाते थे। ऋषियों के ऋषि शिष्य अपने गुरू जी ऋषि से कहते हैं हे*

*गुरूवर ! आपने जो मन्त्र जाप (ओम् गुरू, ओम् नमोंः भगवते् वासुदेवायः, ओम् ऐ नमः आदि) अमूक व्यक्ति को जाप करने को दिया तथा नदी में स्नान करने की विधि बताई थी तथा मूर्ति पूजन, लींग पूजना का विधान बताया था जिससे उस व्यक्ति को मन वांछित फल प्राप्त हुआ। यह सर्व मन्त्र व विधि वेदों में कहीं नहीं लिखी है। इनको करना तो शास्त्रविरूद्ध साधना है। जो हानीकारक बताई है। आप यह शास्त्रविरूद्ध साधना किस लिए बताते हो? इस शास्त्रविधि विरूद्ध साधना से लाभ भी उनको हो रहा है। जबकि वेदों व गीता में लिखा है कि शास्त्रविधि को त्याग कर जो साधक मनमाना आचरण (पूजा) करता है उसको कोई लाभ नहीं होता। न तो उससे सिद्धी की प्राप्ति होती है। न कोई सुख होता है, न उसकी परम गति होती है (गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में भी प्रमाण है)। आपके द्वारा बताई विधि से लाभ मिलता है तो क्या वेदों व गीता में लिखा विवरण ठीक नहीं है। ऋषि जी उत्तर देते थे :- यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 व 13 में (तथा गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में) लिखा है कि जिस तत्वज्ञान को वेद भी नहीं जानते उसको तत्वदर्शी सन्त जन (ऋषिजन) जानते हैं। वह तत्वज्ञान हमारे पास है। उसी के आधार से हम यह साधना बताते हैं। इस कारण वे ऋषियों के शिष्य ऋषिजन भी अपने गुरूदेव के अज्ञान को तत्वज्ञान जानकर शास्त्रविधि त्यागकर मनमुखी जाप करने लगे। जब किसी को लाभ नहीं होता तो वे अज्ञानी ऋषि गुरूजन अपने ऋषि शिष्यों को कठिन हठ योग करने को कहने लगे। किसी को जल में खड़ा होकर, किसी को शिर्षासन पर (ऊपर पैर करके सिर जमीन पर रख कर), किसी को पदमासन पर बैठकर साधना करने को कहने लगे। जिस कारण से उन शिष्य ऋषियों में कुछ अपने पूर्व जन्म के शुभ कर्मों से तथा सिद्धियाँ वर्तमान के हठयोग तप से तथा कुछ गुरूजी की कमाई से आर्शीवाद द्वारा(यदि उस ऋषि की शेष हो तो) सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती। उसके पश्चात् वो शिष्य स्वयं गुरू बनकर अपने अनुयाईयों को अन्य मनमुखी साधना बताने लगे। जिसकारण से सर्व भक्त समाज शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करने लगा है।*

*प्रमाण :- (1) श्री देवी पुराण छठा स्कन्ध अध्याय 10 पृष्ठ 414 पर महर्षि व्यास जी* ***राजा जनमेजय को ज्ञान सुना रहे हैं*** कहा हे राजन् ! यह निश्चय है कि सतयुग में ब्राह्मण वेद के पूर्ण विद्वान थे।। वे भगवती जगदम्बा की निरन्तर आराधना करते थे। भगवती के दर्शन करने के लिए वे सदा ललायित रहते थे। गायत्री के ध्यान, प्राणायाम् और जप में वे अपना सारा समय व्यतीत करते थे। माया बीज का जाप करना उनका प्रधान कार्य था। प्रत्येक गाँव में शक्ति (दुर्गा) का मन्दिर स्थापित हो यह उन सतयुग के ब्राह्मणों की हार्दिक इच्छा रहती थी। तत्वज्ञान के पारगामी उन ब्राह्मणों द्वारा जो भी कर्म होता था। उस में सत्य, दया और शौच ये तीन गुण निहित रहते थे।(लेख समाप्त)

*सार विचार :- उपरोक्त उल्लेख श्री देवी पुराण से है। इसमें कहा है कि सतयुग के ब्राह्मण वेद के पूर्ण विद्वान होते थे अर्थात् तत्वदर्शी होते थे। पूजा देवी की करते थे।*

***गाँव-गाँव दुर्गा के मन्दिर बनवाना चाहते थे।***

अन्य प्रमाण :— (2) श्री देवी पुराण प्रथम स्कन्ध अध्याय 4 पृष्ठ 28-29 पर श्री ब्रह्मा जी के पूछने पर श्री श्री विष्णु जी ने कहा मैं श्री भगवती शक्ति के सदा आधीन रहता हूँ उसी के आधीन होकर मैं शेष शय्या पर सोता हूँ उत्पत्ति समय जागता हूँ। मैं निरन्तर उसी भगवती शक्ति (दुर्गा) का ध्यान करता हूँ मेरे विचार में इस शक्ति से बढकर कोई देवता नहीं है। मैं अधिकतर समय तप करने तथा राक्षसों का संहार करने में ही व्यतीत करता हूँ।

***विशेष विचार :- विचार करने योग्य बात है कि वेदों में कहीं पर भी दुर्गा (प्रकृति) की पूजा करने का प्रावधान नहीं है। केवल ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष की साधना ॐ नाम के जाप द्वारा करने का उल्लेख है। पूर्ण ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर पुरूष की पूजा से पूर्ण मोक्ष होता है। उसका ओम्-तत्-सत् मन्त्र जाप हैं जिस में तत् तथा सत् मन्त्र सांकेतिक हैं। जिनके विषय में तत्वदर्शी सन्त बताएगा। यह उल्लेख वेदों तथा श्री मद्भगवत् गीता में है। ब्रह्म साधना का ॐ (ओं) मन्त्र है। परन्तु यह भी पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है। इस प्रकार वेद ज्ञान हीनों को तत्वदर्शी कहा जाता था। तथा उनके द्वारा बताया भक्ति मार्ग सर्व श्रद्धालुओं ने ग्रहण कर लिया। जो व्यर्थ है। जबकि श्री देवी जी (दुर्गा जी) ने (श्री देवी पुराण के सातवें स्कन्ध के अध्याय 36 पृष्ठ 562 से 563 तक में) कहा है कि*** "उस ब्रह्म का क्या स्वरूप है ?— यह बतलाया जाता है। जो प्रकाश स्वरूप, सबके अत्यन्त समीप में स्थित महान् पद अर्थात् परम प्राप्य है। वह समस्त पूजा के ज्ञान से परे है— अर्थात् किसी कि बुद्धि में आने वाला नहीं है। यह तुम जानो। जो प्रकाश स्वरूप है, जो सुक्ष्म से भी अत्यन्त सुक्ष्म है। जिसमें सम्पूर्ण लोक और उन लोकों में निवास करने वाले प्राणी स्थित हैं। यह वह "अक्षर ब्रह्म" है। वह परम सत्य और अमृत—अविनाशी तत्व है। तुम उस वेधने योग्य लक्ष्य का तुम वेधन करो—मन लगाकर उसमें तन्मय हो जाओ। उस एक परमात्मा को ही जानों दूसरी बातें छोड़ दो। वह परमात्मा सर्व प्राणियों के हृदय में अन्तर्यामी रूप से वर्तमान रहता है। इस विश्वात्मा अर्थात् ब्रह्म का ॐ नाम के जाप के साथ ध्यान करो। इस से अज्ञानमय अन्धकार से सर्वथा परे और संसार समुन्द्र से उस पार जो ब्रह्म है। उसको पा जाओगे। वह सबका आत्मा ब्रह्म—ब्रह्मलोक रूप दिव्य आकाश में स्थित है। उसे धीर पुरूष अर्थात् तत्वदर्शी सन्त (धीर—बुद्धिमान पुरूष) अपने विज्ञान (तत्वज्ञान) के द्वारा उस अविनाशी ब्रह्म को देख लेते हैं। उस पुरूषोतम् को देख लेने पर इस जीव की अविद्या नष्ट हो जाती है। वह निर्मल और निष्कलंक ब्रह्म प्रकाशमय पर दिव्य परम धाम में विराजित है। यह सम्पूर्ण विश्व सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म ही है। जो श्रेष्ठ पुरूष इस प्रकार अनुभव करते हैं वे ही कृतार्थ हैं। वे ब्रह्म को प्राप्त पुरूष नित्य प्रसन्नचित रहते हैं। (लेख समाप्त)

***सार विचार :- पूर्वोक्त उल्लेख में श्री देवी पुराण के छठे स्कन्ध के अध्याय 10 पृष्ठ 414 पर व्यास जी ने बताया है कि सतयुग के ब्राह्मण वेद के महाविद्वान अर्थात् तत्वदर्शी थे। वे देवी की अराधना करते थे। उपरोक्त उल्लेख में इसी श्री देवी पुराण में श्री देवी जी कह रहीं हैं कि उस ब्रह्म की उपासना करो उसका ॐ मन्त्र जाप करने***

*का है। अन्य सर्व बातें त्याग दो। वह ब्रह्म, ब्रह्मलोक में है। उसी की पूजा से संसार समुद्र से उस पार जो ब्रह्म है उसको पा जाओगे। वह निर्मल और निष्कलंक ब्रह्म दिव्य धाम में विराजित है। श्री विष्णु भगवान तो (श्री देवी पुराण प्रथम स्कन्ध अ. 4 पृष्ठ 28-29) कह रहे हैं कि देवी दुर्गा से बढ़कर कोई भगवान नहीं है। मैं इसी की पूजा करता हूँ अन्य ऋषि जन भी देवी दुर्गा को ही प्रभु मानकर पूजा करते थे। उसके मन्दिर भी बनाए जाते थे। जबकि देवी दुर्गा (प्रकृति) कह रही है कि कोई अन्य पूर्ण परमात्मा है उसकी पूजा करनी चाहिए। इससे सिद्ध हुआ कि न तो श्री विष्णु जी को वेदों का ज्ञान है न अन्य ऋषियों को वेदों का ज्ञान था। केवल लोक वेद (सुना सुनाया क्षेत्रीय ज्ञान) ही सुनते सुनाते थे। श्री देवी यह भी कह रही है कि सर्व संसार ही ब्रह्म है। यह ज्ञान विचलित करने वाला है। इस से ऊपर का वेद ज्ञान है जो श्री देवी (दुर्गा) ने बताया है। ब्रह्म काल तथा दुर्गा (प्रकृति देवी) जी दोनों यथार्थ ज्ञान के साथ-2 भ्रमित ज्ञान भी प्रदान करते हैं। कारण यह है कि ये नहीं चाहते की काल ब्रह्म के अन्तर्गत प्राणियों को तत्वज्ञान हो जाए। इसलिए भ्रमित ज्ञान देकर ऋषि, महर्षि तथा देव व ब्राह्मण व श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी भी तत्वज्ञान से परिचित नहीं है। इसी कारण से सर्व का जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है। पूर्ण परमात्मा स्वयं इस ब्रह्म काल के लोक में प्रकट होकर तत्वदर्शी सन्त की भूमिका करके तत्वज्ञान प्रदान करते हैं।*

*उदाहरण :- संक्षिप्त ब्रह्म पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के अध्याय ''अहिल्या संगम तीर्थ का महात्यम्'' पृष्ठ 158-159* श्री ब्रह्मा जी ने कहा :– मैंने एक सुन्दर कन्या की उत्पत्ति की युवा होने पर उसकी शादी करने का विचार आया। उस लड़की को पत्नी रूप में प्राप्त करने के लिए इन्द्र, वरूण, आदि कई देवता आए। मेरे से उस कन्या को पत्नी रूप में देने की प्रार्थना करने लगे। मैं उस कन्या का विवाह गौतम ऋषि से करना चाहता था। अधिक देवगण होने के कारण मैंने एक शर्त रखी की जो पृथ्वी की प्रदीक्षणा देकर (पृथ्वी का चक्कर लगाकर) सर्वप्रथम आएगा उसी के साथ अहिल्या नामक कन्या का विवाह किया जाएगा। सर्व देव चले गए। गौतम ऋषि ने एक गाय देखी जो बच्चे को जन्म दे रही थी। आधा बच्चा बाहर था आधा अन्दर। गौतम ऋषि ने उस सुरभी की पृथ्वी भाव से परीकृमा की। इसके साथ ही गौतम ऋषि ने शिव लींग की भी प्रदक्षिणा की और सर्वप्रथम लौट कर मेरे पास (ब्रह्मा के पास) आ गया। मैं (ब्रह्मा) भी उस कन्या अहिल्या का विवाह गौतम से करना चाहता था। गौतम ने मुझसे कहा '' कमलासन ! विश्वात्मन् आप को बारम्बार नमस्कार है। ब्रह्मन् ! मैने सारी वसुधा की प्रदक्षिणा कर ली ! (ब्रह्मा जी ने कहा है) मैंने ध्यान द्वारा देखा सब बातें जान कर गौतम से कहा ब्रह्मर्षे ! तुम्हीं को यह सुन्दर कन्या दी जाती है। वास्तव में तुमने पृथ्वी की प्रदक्षिणा कर ली है। जो वेदों के लिए भी दुर्बोध है (अर्थात् जिस बात का ज्ञान वेदों में भी नहीं है) उस धर्म का स्वरूप तुम जानते हो। जो गाय आधा प्रसव कर चुकी हो वह सात द्वीपों वाली पृथ्वी के तुल्य है। उसकी प्रदक्षिणा की जाए तो समूची पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है। शिव लिंग की प्रदक्षिणा का भी यही फल है''

***विचार करें :- श्री ब्रह्मा जी को काल सृष्टी में वेदों का उत्कृष्ट विद्वान माना जाता हैं उसके द्वारा कहे वचन वेद वचन माने जाते हैं। ब्रह्मा जी को वेदों का बिल्कुल ज्ञान नहीं है। इसी का प्रमाण उनके द्वारा बताए उपरोक्त ज्ञान से मिलता है। गौतम के मन में प्रेरणा काल ब्रह्म ने की तथा फिर ब्रह्म ने अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए उस शास्त्रविरूद्ध साधना की पुष्टि अपने पुत्र रजगुण ब्रह्मा में प्रेतवत् प्रवेश होकर कर दी की गाय की प्रदक्षिणा और शिव लींग की प्रदक्षिणा का फल पूरी पृथ्वी की परिक्रमा का ही फल होता है। श्री ब्रह्मा जी के मुख से निकले वचनों को सर्व देवताओं तथा ऋषियों को स्वीकार करना पड़ता है। इस प्रकार इन पुराणों की रचना हुई। जो बाद में महर्षि वेद व्यास (कृष्ण द्वैपायान) ने लीपी बद्ध किया।*** विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय 15 श्लोक 11 से 51 पृष्ठ 63 से 66 पर लिखा है ''पूर्व समय में वेद वेताओं (तत्वदर्शी सन्तों में) श्रेष्ठ एक कण्डु नामक मुनिश्वर थे। उसने गोमती नदी पर घोर तप किया। फिर एक प्रम्लोचा अप्सरा ने उनका तप खण्ड किया उसके साथ नौ सौ वर्ष विलास किया फिर वह चली गई। ***विचार करे :- पवित्र गीता जी जो वेदों का सारांश है, उसके अध्याय 16 व 17 तथा अध्याय 3 में प्रमाण है। हठ योग द्वारा घोर तप करना व्यर्थ है जैसे गीता अध्याय 3 श्लोक 4 से 8 में कहा है कि जो व्यक्ति एक स्थान पर बैठकर तप को तपता है वह शास्त्रविरूद्ध साधक है। गीता अध्याय 17 श्लोक 5 तथा 6 में घोर तप करना मना है। श्री गौतम ऋषि, कण्डू आदि ऋषियों ने जो वेद विरूद्ध वचन कहे उनके कारण अन्य अनुयाईयों को उन ऋषियों की भक्ति कमाई से लाभ हुआ। जिस कारण से उन तत्वज्ञान हीन ऋषियों को तत्वेता(तत्वज्ञान को जानने वाला) कहा जाने लगा। जबकि पवित्र श्रीमदभगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में वर्णित तत्वदर्शी सन्त की पहचान गीता अध्याय 15 में 1 से 4, 16 से 17 श्लोकों में बताई है कि जो सन्त या ऋषि उल्टे लटके संसार रूपी वृक्ष का विस्तृत विवरण बताए वह (वेदवित्) वेद के तात्पर्य को जानने वाला अर्थात् तत्वदर्शी सन्त है। जैसे ऊपर को जड़ (मूल) तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म जानों। जमीन से बाहर जो वृक्ष का हिस्सा तुरन्त दिखाई देता है। वह तना अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने की एक मोटी डार को क्षर पुरूष अर्थात् ब्रह्म जानों तथा उस मोटी डार की तीन शाखाओं को रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तथा तमगुण शिव जी जानों, उन शाखाओं पर लगे पतों को अन्य संसारी प्राणी जानो। यह उपरोक्त ज्ञान स्वयं पूर्ण परमात्मा ही बताता है। वह स्वयं कुछ दिन इस काल के लोक में अतिथी की तरह रहता है। अपने तत्वज्ञान को लोकोक्तियों, दोहों व साखीयों तथा कविताओं (शब्दों-भजनों) के द्वारा उच्चारण करता है। उसी पूर्ण परमात्मा ने कलयुग में अवतरित हो कर सन् 1398 से सन् 1518 तक 120 वर्ष काशी में जुलाहे की भूमिका करके अपने तत्वज्ञान को बताया।***

***कबीर :-*** अक्षर पुरूष एक पेड़ है निरंजन वाकी डार। तीनों देवा शाखा है ये पात रूप संसार।।

***यही तत्वदर्शी संत का प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मन्त्र 16 से 20 में है।***

जिस तत्वज्ञान का (संसार रूपी वृक्ष का प्रत्येक अंग का) ज्ञान किसी ऋषि व संत को नहीं था। वह स्वयं परमात्मा कबीर बन्दी छोड़ ने जी ने बताया था। जो वर्तमान में मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा उजागर किया गया है। वह तत्वज्ञान वर्तमान में मुझ दास के अतिरिक्त किसी के पास नहीं है।

दूसरा कारण पुराण रचना का :- श्री ब्रह्मा जी सर्वप्रथम उत्पन्न हुए थे। जिस कारण से उनके वंशजों ने श्री ब्रह्मा जी को सर्वज्ञ मानकर संसार रचना का कारण व सर्व की रचना करने वाले परमेश्वर के विषय में जानना चाहा। देवी पूराण तीसरे स्कंद अध्याय 3 से 6 में श्री ब्रह्मा जी स्वयं कह रहे हैं कि जब मैं सचेत हुआ तो अपने आप को कमल के फूल पर बैठा पाया। मुझे नहीं पता इस अगाध जल में कहां से उत्पन्न हो गया। मुझे उत्पन्न करने वाला कौन प्रभु है?''। इससे सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी सर्वज्ञ नहीं हैं। उनके द्वारा बताया सृष्टी रचना का ज्ञान भी सत्य नहीं हो सकता। हाँ अपने जन्म के पश्चात् का वर्णन पुराणों में घटनाक्रम का ज्ञान ठीक है परन्तु जो भक्तिसाधना की विधि व परमेश्वर परिचय यदि वेदों से नहीं मिलता है वह असत्य है।

श्री शिव पुराण, श्री विष्णु पुराण, श्री ब्रह्म पुराण तथा श्री देवी पुराण आदि इन पुराणों का ज्ञान दाता श्री ब्रह्मा जी भगवान हैं। श्री देवी पुराण के तीसरे स्कन्ध (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित है जिसके अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी) में ब्रह्माण्ड की रचना का ज्ञान देते समय श्री ब्रह्मा जी ने अपने पुत्र नारद से कहा बेटा नारद जब मेरी उत्पति हुई तो मैं कमल के फूल पर बैठा हुआ था। मुझे नहीं पता कि मेरा उत्पति कर्ता कौन है? इस अगाध जल में मैं कैसे उत्पन्न हो गया- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -''

श्री ब्रह्मा जी द्वारा दिया गया पुराणों का ज्ञान अधूरा है। सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है क्योंकि श्री ब्रह्मा जी ने ब्रह्माण्ड की रचना का ज्ञान भी देने का प्रयत्न किया है। जो संस्य युक्त तथा सुना सुनाया है जो तोड़-मरोड़ कर बताया है। क्योंकि श्री ब्रह्माजी को पूर्ण परमात्मा एक ऋषि के रूप में अग्नि ऋषि के नाम से प्रकट होकर मिले थे तथा पांचवें शवस्म (सुक्ष्म) वेद से सृष्टी रचना का ज्ञान व काल का जाल समझाया था। श्री ब्रह्मा जी ने उस ऋषि से उपदेश ग्रहण किया। परन्तु बाद में काल रूपी ब्रह्म ने श्री ब्रह्मा जी की बुद्धि बदल दी, अन्दर से प्रेरणा की कोई पांचवां वेद नहीं है केवल चार ही वेद हैं। इन्हीं का ज्ञान श्रेष्ठ है अन्य किसी की बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए। तू जगत का ज्ञान दाता है तुझे किसी से ज्ञान ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है।

इस कारण से श्री ब्रह्मा जी ने परमेश्वर से सुने ज्ञान को सत्य न मानकर अपनी बुद्धि द्वारा काल रूपी ब्रह्म की गुप्त प्रेरणा से उसे तोड़-मरोड़ कर अपने वंशजों को बताया जो पुराणों में लिपीबद्ध है। श्री ब्रह्म जी ने अपने जन्म के पश्चात् ही सत्य घटनाओं का सत्य विवरण बताया है। जो पूर्वोक्त पुराणों में लिखा है।

जिन्दा वेश धारी परमेश्वर ने कहा हे धर्मदास! आप जो यह तीर्थ यात्रा करते हो

*इसका गीता जी में कोई विवरण नहीं हैं।*

## ''तीर्थ तथा धाम क्या है''

### "पवित्र तीर्थ तथा धाम की जानकारी"

*किसी साधक ऋषि जी ने किसी स्थान या जलाशय पर बैठ कर साधना की या अपनी आध्यात्मिक शक्ति का प्रदर्शन किया। वह अपनी भक्ति कमाई करके साथ ले गया तथा अपने ईष्ट लोक को प्राप्त हुआ। उस साधना स्थल का बाद में तीर्थ या धाम नाम पड़ा। अब कोई उस स्थान को देखने जाए कि यहां कोई साधक रहा करता था। उसने बहुतों का कल्याण किया। अब न तो वहाँ संत जी है, जो उपदेश दे। वह तो अपनी कमाई करके चला गया।*

*विचार करें :- कृप्या तीर्थ व धाम को हमोमदस्ता (हमामदस्ता) जानें। (एक डेढ़ फुट का लोहे का गोल पात्र लगभग नौ इंच परिधि का उखल जैसा होता है तथा डेढ़ फुट लम्बा तथा दो इन्च परिधि का गोल लोहे का डंडा-सा मूसल जैसा होता है जो सामग्री व दवाईयाँ आदि कूटने के काम आता है, उसे हमोमदस्ता (हमामदस्ता) कहते हैं।) एक व्यक्ति अपने पड़ौसी का हमोम दस्ता मांग कर लाया। उसने हवन की सामग्री कूटी तथा मांज-धोयकर लौटा दिया। जिस कमरे में हमोम दस्ता रखा था उस कमरे में सुगंध आने लगी। घर के सदस्यों ने देखा कि यह सुगन्ध कहां से आ रही है तो पता चला कि हमोम दस्ते से आ रही है। वे समझ गए कि पड़ौसी ले गया था, उसने कोई सुगंध युक्त वस्तु कूटी है। कुछ दिन बाद वह सुगंध भी आनी बंद हो गई।*

*इसी प्रकार तीर्थ व धाम को एक हमोमदस्ता (हमामदस्ता) जानों। जैसे सामग्री कूटने वाले ने अपनी सर्व वस्तु पोंछ कर रख ली। खाली हमोम दस्ता लौटा दिया। अब कोई उस हमोम दस्ते को सूंघकर ही कृत्यार्थ माने तो नादानी है। उसको भी सामग्री लानी पड़ेगी, तब पूर्ण लाभ होगा।*

*ठीक इसी प्रकार किसी धाम व तीर्थ पर रहने वाला पवित्र आत्मा तो राम नाम की सामग्री कूट कर झाड़-पौंछ कर अपनी सर्व भक्ति साधना की कमाई को साथ ले गया। बाद में अनजान श्रद्धालु, उस स्थान पर जाने मात्र से कल्याण समझें तो उनके मार्ग दर्शकों (गुरुओं) की शास्त्र विधि रहित बताई साधना का ही परिणाम है। उस महान आत्मा सन्त की तरह प्रभु साधना करने से ही कल्याण सम्भव है। उसके लिए तत्वदर्शी संत की खोज करके उससे उपदेश लेकर आजीवन भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुकूल सत साधना मुझ दास (रामपाल दास) के पास उपलब्ध है कृप्या निःशुल्क प्राप्त करें।*

## ''तीर्थ स्थापना के प्रमाण''

***1. शुक्र तीर्थ कैसे बना? :-*** श्री ब्रह्मा पुराण लेखक कृष्णद्वेपायन अर्थात व्यास जी प्रकाशक गीता प्रैस गोरखपुर पृष्ठ 167-168 पर भृगु ऋषि का पुत्र कवि अर्थात शुक्र ने गौतमी नदी के उत्तर तट पर जहाँ भगवान महेश्वर की आराधना करके विद्या पायी थी, वह स्थान शुक्र तीर्थ कहलाता है।

***2. ➽ सरस्वती संगम तीर्थ तथा पुरूरव तीर्थ :-*** श्री ब्रह्मा पुराण पृष्ठ 172-173 पर एक दिन राजा पुरूरवा, ब्रह्मा जी की सभा में गये, वहाँ ब्रह्मा जी की पुत्री सरस्वती को देखकर उससे मिलने की इच्छा प्रकट की। सरस्वती ने हाँ कर दी। सरस्वती नदी के तट पर सरस्वती तथा पुरूरवा ने अनेक वर्षों तक संभोग (सैक्स) किया। एक दिन ब्रह्मा ने उनको विलास करते देख लिया। अपनी बेटी को शाप दे दिया। वह नदी रूप में समा गई। जहाँ पर पुरूरवा तथा सरस्वती ने संभोग किया था। वह पवित्र तीर्थ सरस्वती संगम नाम से विख्यात हुआ। जहाँ पर पुरूरवा ने महादेव की भक्ति की वह स्थान पुरूरवा तीर्थ नाम से विख्यात हुआ।

***3. वृद्धा संगम तीर्थ :-*** श्री ब्रह्मा पुराण पृष्ठ 173 से 175 एक गौतम ऋषि थे। उनका एक हजार वर्ष की आयु तक विवाह नहीं हुआ। वह वेद ज्ञान भी नहीं पढ़ा था केवल गायत्री मंत्र याद था। उसी का जाप करता था। एक दिन वह एक पर्वत पर एक गुफा में गया। वहाँ पर नब्बे हजार वर्ष की आयु की एक वृद्धा स्त्री मिली। दोनों ने विवाह किया। एक दिन वशिष्ठ ऋषि तथा वाम देव ऋषि वहाँ गुफा में अन्य ऋषियों के साथ आए। उन्होंने गौतम ऋषि का उपहास किया कहा हे गौतम जी! यह वृद्धा आप की माँ है या दादी माँ? उनके जाने के पश्चात् दोनों बहुत दुःखी हुए। अगस्त ऋषि की राय से गोदावरी नदी के गौतमी तट पर गये और कठोर तपस्या करने लगे। उन्होंने भगवान शंकर और विष्णु का स्तवन किया तथा पत्नी के लिए गंगा जी को भी खुश किया। गंगा ने उनके तप से प्रशन्न होकर कहा :– ब्राह्मण आप मन्त्र पढ़ते हुए मेरे जल से अपनी पत्नी का अभिषेक करो। इससे वह रूपवती हो जाएगी। गंगा जी के आदेश से दोनों ने एक दुसरे के लिए ऐसा ही किया। दोनों पति–पत्नी सुन्दर रूप वाले हो गये। वह जल जो मन्त्रों का था। उससे वृद्धा नाम नदी बह चली। उसी स्थान पर गौतम ऋषि ने उस वृद्धा के साथ जो युवती हो गई थी। मन भरकर संभोग किया। तब से उस स्थान का नाम ''वृद्धा संगम'' तीर्थ हो गया। वहीं पर गौतम ऋषि ने साधनार्थ एक शिवलिंग स्थापित किया था। वह भी वृद्वा के नाम पर वृद्वेश्वर कहलाया। इस वृद्वा संगम तीर्थ की कथा सब पापों का नाश करने वाली है। वहाँ किया हुआ स्नान–दान सब मनोरथों को सिद्ध करने वाला है।

***4. अश्वतीर्थ अर्थात् भानु तीर्थ तथा पंचवटी आश्रम की स्थापना :-*** श्री ब्रह्मा पुराण पृष्ठ 162-163 तथा श्री मार्कण्डेय पुराण पृष्ठ 173 से 175 पर लिखा है ''महर्षि

कश्यप के ज्येष्ठ पुत्र आदित्य (सूर्य) है, उनकी पत्नी का नाम उषा है (मार्कण्डेय पुराण में सूर्य की पत्नी का नाम संज्ञा लिखा है जो महर्षि विश्वकर्मा की बेटी है) सूर्य पत्नी अपने पति सूर्य के तेज को सहन न कर सकने के कारण दुःखी रहती थी। एक दिन अपनी सिद्धि शक्ति से अन्य स्त्री अपनी ही स्वरूप की उत्पन्न की उसे कहा आप मेरे पति की पत्नी बन कर रहो तेरी तथा मेरी शक्ल समान है। आप यह भेद मेरी सन्तान तथा पति को भी नहीं बताना यह कह कर संज्ञा (उषा) तप करने के उद्देश्य से उत्तर कुरूक्षेत्र में चली गई वहाँ घोड़ी का रूप धारण करके तपस्या करने लगी। भेद खुलने पर सूर्य भी घोड़े का रूप धारण करके वहाँ गया जहाँ संज्ञा (उषा) घोड़ी रूप में तपस्या कर रही थी। घोड़े रूप में सूर्य ने घोड़ी रूप धारी संज्ञा से संभोग करना चाहा। उषा (संज्ञा) घोड़ी रूप में वहाँ से भाग कर गौतमी नदी के तट पर आई घोड़ा रूप धारी सूर्य ने भी पीछा किया। वहाँ आकर घोड़ी रूप में अपने पतिव्रत धर्म की रक्षा के लिए घोड़ा रूप धारी पति को न पहचान कर उस की ओर अपना पृष्ठ भाग न करके मुख की ओर से ही सामना किया। दोनों की नासिका मिली। सूर्य वासना के वेग को रोक नहीं सके तथा घोड़ी रूप धारी उषा (संज्ञा) के मुख ओर ही संभोग करने के उद्देश्य से प्रयत्न किया। नासिका द्वारा वीर्य प्रवेश से घोड़ी रूप धारी उषा के मुख से दो पुत्र अश्वनी कुमार (नासत्य तथा दस्र) उत्पन्न हुए तथा शेष वीर्य जमीन पर गिरने से रेवन्त नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। वह स्थान अश्व तीर्थ भानु तीर्थ तथा पंचवटी आश्रम नाम से विख्यात हुआ। उसी स्थान पर सूर्य की बेटियों का अरूणा तथा वरूणा नामक नदियों के रूप में समागम हुआ। उसमें भिन्न–2 देवताओं और तीर्थों का पृथक–पृथक समागम हुआ है। उक्त संगम में सताईस हजार तीर्थों का समुदाय है। वहाँ किया हुआ स्नान व दान अक्षय पुण्य देने वाला है। नारद! उस तीर्थ के स्मरण से कीर्तन और श्रवण से भी मनुष्य सब पापों से मुक्त हो धर्मवान् और सुखी होता है।

***5. जन स्थान तीर्थ की स्थापना :-*** श्री ब्रह्म पुराण (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित) पृष्ठ 161-162 पर ऋषि याज्ञवल्क्य से राजा जनक ने पूछा कि हे द्विजश्रेष्ठ! बड़े–2 मुनियों ने निर्णय किया है कि भोग और मोक्ष दोनों श्रेष्ठ हैं। आप बताऐं! भोग से भी मुक्ति प्राप्त कैसे होती है? ऋषि याज्ञवल्क्य जी ने कहा इस प्रश्न का उत्तर आप श्वशुर वरूण जी ठीक–2 बता सकते हैं। चलो उनसे पूछते हैं। दोनों भगवान वरूण के पास गए तथा वरूण ने बताया कि ''वेद में यह मार्ग निश्चित किया है कि कर्म न करने की उपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है। धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष ये चारों पुरूषार्थ कर्म से बंधे हुए हैं। नृप श्रेष्ठ! कर्म द्वारा सब प्रकार से साध्यों की सिद्धी होती है, इसलिए मनुष्यों को सब तरह से वैदिक कर्म का अनुष्ठान करना चाहिए। इससे वे इस लोक में भोग तथा मोक्ष दोनों प्राप्त करते हैं। अकर्म से कर्म पवित्र इसके पश्चात् राजा जनक ने ऋषि याज्ञवल्क्य को पुरोहित बनाकर गंगा के तट पर अनेकों यज्ञ किए। इसलिए उस स्थान का नाम ''जन स्थान'' तीर्थ के नाम से विख्यात हुआ। उस तीर्थ का चिन्तन करने, वहाँ

जाने और भक्ति पूर्वक उसका सेवन (पूजन) करने से मनुष्य सब अभिलाषित वस्तुओं को पाता है और मोक्ष का भोगी होता है।

*उपरोक्त पुराणों के लेखों का निष्कर्ष :- प्रमाण संख्या 1 में कहा है कि भृगु ऋषि के पुत्र शुक्र ने गौतमी नदी के उत्तर तट पर साधना की थी जिस कारण से वह स्थान शुक्र तीर्थ नाम से विख्यात हुआ। यदि कोई उस शुक्र तीर्थ में केवल स्नान व वहाँ पर बैठे कामचोर व्यक्तियों को दान करने से ही मोक्ष मानता है वह ज्ञानहीन व्यक्ति है। परमात्मा की साधना जैसे शुक्राचार्य ने की थी। वैसी ही साधना किसी भी स्थान पर कोई साधक करेगा तो शुक्राचार्य को जो लाभ हुआ था वह प्राप्त होगा। यही स्थिती प्रमाण संख्या 5 की समझें की गंगा के तट पर जिस स्थान पर राजा जनक ने अनेकों अश्वमेघ यज्ञ किए। एक अश्वमेघ यज्ञ में करोंड़ों रूपये (वर्तमान में अरबों रूपये) खर्च हुए थे। तब राजा जनक को स्वर्ग प्राप्ति हुई थी। यदि कोई अज्ञानी कहे कि उस जन स्थान तीर्थ पर जाने व स्नान करने तथा वहाँ उपस्थित ऐबी (शराब,तम्बाकू व मांस सेवन करने वाले) व्यक्तियों कों दान करने से राजा जनक वाला लाभ मिलेगा। क्या यह बात न्याय संगत है? इतना कुछ करने के पश्चात् भी राजा जनक मुक्त नहीं हो सका। वही आत्मा कलयुग में सन्त नानक जी के रूप में श्री कालु राम महता के घर जन्मा। फिर पूर्ण परमात्मा की भक्ति पूर्ण गुरु कबीर परमेश्वर से नाम प्राप्त करके की तब मोक्ष प्राप्त हुआ। प्रमाण संख्या 2 में ब्रह्मा की बेटी सरस्वती ने पूरूरवा नामक राजा के साथ अपने पिता से छुपकर सैक्स (संभोग) किया। जब पिता जी ने उन्हें ऐसा करते देखा तो श्राप दे दिया। वह स्थान जहाँ पर सरस्वती ने तथा राजा पुरूरवा ने दुराचार किया उस स्थान का नाम सरस्वती संगत तीर्थ विख्यात हुआ।*

*विचार करें :- क्या ऐसे स्थान पर जाने व स्नान करने से कोई लाभ हो सकता है? प्रमाण संख्या 3 में कहा है कि एक गौतम नामक ऋषि ने एक हजार वर्ष की आयु में नब्बे हजार वर्ष की आयु की वृद्धा से विवाह किया। अपने को युवा बनाने के उद्देश्य से दोनों ने गोदावरी नदी के गौतमी तट पर कठोर तप किया। पश्चात् मन्त्रों से जल मन्त्रित करके एक-दूसरे पर डाला। दोनों युवा हो गये। तत्पश्चात् उस स्थान पर दोनों ने मन भर कर संभोग अर्थात् विलास (सैक्स) किया। वह स्थान वृद्धा संगम तीर्थ कहलाया।*

*विचार करने योग्य बात है कि ऐसे स्थानों पर जाने से आत्मकल्याण के स्थान पर पतन ही होगा। आत्म उद्धार नहीं। प्रमाण संख्या 4 में कहा है कि सूर्य की पत्नी घोड़ी का रूप धारण करके तपस्या कर रही थी। सूर्य काम वासना (सैक्स प्रैसर) के वश होकर घोड़ा रूप धारण करके घोड़ी रूप धारी अपनी पत्नी के पास गया। घोड़ी ने उसे अपने पृष्ठ भाग (पीछे) की ओर नहीं जाने दिया। सूर्य इतना सैक्स प्रैसर (काम वासना के दबाव) में था कि उसने घोड़ी के मुख की ओर ही संभोग*

***क्रिया प्रारम्भ की जिस कारण से उन्हें तीन पुत्र प्राप्त हुए। वह स्थान अश्व तीर्थ नाम से विख्यात हुआ। वहीं पर सूर्य की दो बेटियाँ जाकर नदी बन कर बहने लगी। जिस कारण से वही स्थान पंचवटी आश्रम नाम से भी प्रसिद्ध हुआ। उसी स्थान को भानू तीर्थ भी कहा जाता है। इस तीर्थ का लाभ लिखा है कि इसके स्मरण से तथा कीर्तन करने से तथा इसकी कथा श्रवण करने से सब पापों से मुक्त होकर धर्मवान और सुखी होता है विचार करो पुण्यात्माओं क्या ऐसी कथाओं को सुनने तथा ऐसे स्थान पर जाने से आत्म कल्याण सम्भव है। इसलिए शास्त्रों (पाचों वेदों, गीता जी) के अनुसार भक्ति करने से सर्व पापों से मुक्त होकर पूर्ण मोक्ष सम्भव है।***

## चित शुद्ध तीर्थ

***चितशुद्ध तीर्थ अर्थात् तत्वदर्शी सन्त का सत्संग सर्व तीर्थों से श्रेष्ठ :-*** श्री देवी पुराण छठा स्कन्द अध्याय 10 पृष्ठ 417 पर लिखा है व्यास जी ने राजा जनमेजय से कहा राजन्! यह निश्चय है कि तीर्थ देह सम्बन्धी मैल को साफ कर देते हैं, किन्तु मन के मैल को धोने की शक्ति तीर्थों में नहीं है। चितशुद्ध तीर्थ गंगा आदि तीर्थों से भी अधिक पवित्र माना जाता है। यदि भाग्यवश चितशुद्ध तीर्थ सुलभ हो जाए तो अर्थात् तत्वदर्शी संतों का सत्संग रूपी तीर्थ प्राप्त हो जाए तो मानसिक मैल के धुल जाने में कोई संदेह नहीं। परन्तु राजन्! इस चितशुद्ध तीर्थ को प्राप्त करने के लिए ज्ञानी पुरूषों अर्थात् तत्वदर्शी सन्तों के सत्संग की विशेष आवश्यकता है। वेद, शास्त्र, व्रत, तप, यज्ञ और दान से चितशुद्ध होना बहुत कठिन है। वशिष्ठ जी ब्रह्मा जी के पुत्र थे। उन्होंने वेद और विद्या का सम्यक प्रकार से अध्ययन किया था। गंगा के तट पर निवास करते थे। तथापि द्वेष के कारण उनका विश्वामित्र के साथ वैमनस्य हो गया और दोनों ने परस्पर श्राप दे दिए तथा उनमें भयंकर युद्ध होने लगा। इससे सिद्ध हुआ कि संतों के सत्संग से चितशुद्ध कर लेना अति आवश्यक है अन्यथा वेद ज्ञान, तप, व्रत, तीर्थ, दान तथा धर्म के जितने साधन है वे सबके सब कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध नहीं कर सकते (श्री देवी पुराण से लेख समाप्त)

***विशेष विचार :- उपरोक्त श्री देवी पुराण के लेख से स्पष्ट है कि तत्वदर्शी सन्तों के सत्संग से श्रेष्ठ कोई भी तीर्थ नहीं है तथा तत्वदृष्टा सन्त के बताए मार्ग से साधना करने से कल्याण सम्भव है। तीर्थ, व्रत, तप, दान आदि व्यर्थ प्रयत्न है। तत्वदर्शी सन्त के अभाव के कारण केवल चारों वेदों में वर्णित भक्ति विद्यी से पूर्ण मोक्ष लाभ नहीं है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-***

सतगुरु बिन वेद पढ़ें जो प्राणी, समझे ना सार रहे अज्ञानी।।
सतगुरु बिन काहू न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुष छिड़ै मूढ किसाना।।
अड़सठ तीर्थ भ्रम–भ्रम आवै सर्व फल सतगुरू चरणा पावै।।

कबीर तीर्थ करि–करि जग मुआ, उड़ै पानी नहाय। सत्नाम जपा नहीं, काल घसीटें जाय।।

## "श्री अमरनाथ धाम की स्थापना कैसे हुई?"

*भगवान शंकर जी ने पार्वती जी को एकांत स्थान पर उपेदश दिया था जिस कारण से माता पार्वती जी इतनी मुक्त हो गई कि जब तक प्रभु शिव जी (तमोगुण) की मृत्यु नहीं होगी, तब तक उमा जी की भी मृत्यु नहीं होगी। सात ब्रह्मा जी (रजोगुण) की मृत्यु के उपरान्त भगवान विष्णु (सतोगुण) की मृत्यु होगी। सात विष्णु जी की मृत्यु के पश्चात् शिवजी की मृत्यु होगी। तब माता पार्वती जी भी मृत्यु को प्राप्त होगी, पूर्ण मोक्ष नहीं हुआ। फिर भी जितना लाभ पार्वती जी को हुआ वह भी अधिकारी से उपदेश मंत्र ले कर आजीवन जाप करने से हुआ। बाद में श्रद्धालुओं ने उस स्थान की याद बनाए रखने के लिए मन्दिर नुमा यादगार बनाकर उसको सुरक्षित रखा तथा दर्शक जाने लगे।*

*जैसे यह दास (सन्त रामपाल) स्थान-स्थान पर जा कर सत्संग करता है। वहाँ पर खीर व हलवा भी बनाऐं जाते हैं। जो भक्तात्मा उपदेश प्राप्त कर लेता है, उसका कल्याण हो जाता है। सत्संग समापन के उपरान्त सर्व टैंट आदि उखाड़ कर दूसरे स्थान पर सत्संग के लिए चले जाते हैं, पूर्व स्थान पर केवल मिट्टी या ईंटों की बनाई भट्ठी व चूल्हे शेष रह जाते हैं। फिर कोई उसी शहर के व्यक्ति से कहे कि आओ आप को वह स्थान दिखा कर लाता हूँ, जहां संत रामपाल दास जी का सत्संग हुआ था, खीर बनाई थी। बाद में उन भट्ठियों को देखने जाने वाले को न तो खीर मिले, न ही सत्संग के अमृत वचन सुनने को मिले, न ही उपदेश प्राप्त हो सकता जिससे कल्याण हो सके। उसके लिए संत ही खोजना पड़ेगा, जहां सत्संग चल रहा हो, वहाँ पर सर्व कार्य सिद्ध होंगे।*

*ठीक इसी प्रकार तीर्थों व धामों पर जाना तो उस यादगार स्थान रूपी भट्ठी को देखना मात्र ही है।*

*यह पवित्र गीता जी में वर्णित न होने से शास्त्र विरूद्ध हुई। जिससे कोई लाभ नहीं (प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24)।*

*तत्व ज्ञान हीन सन्तों व महंतों तथा आचार्यों द्वारा भ्रमित श्रद्धालु तीर्थों व धामों पर आत्म कल्याणार्थ जाते हैं। श्री अमरनाथ जी की यात्रा पर गए श्रद्धालु तीन-चार बार बर्फानी तुफान में दब कर मृत्यु को प्राप्त हुए। प्रत्येक बार मरने वालों की संख्या हजारों होती थी। विचारणीय विषय है कि यदि श्री अमरनाथ जी के दर्शन व पूजा लाभदायक होती तो क्या भगवान शिव उन श्रद्धालुओं की रक्षा नहीं करते? अर्थात् प्रभु शिव जी भी शास्त्र विरूद्ध साधना से अप्रसन्न हैं।*

## ''वैष्णो देवी के मन्दिर की स्थापना कैसे हुई?''

*जब सती जी (उमा देवी) अपने पिता राजा दक्ष के हवन कुण्ड में छलांग*

*लगाने से जलकर मृत्यु को प्राप्त हुई। भगवान शिव जी सती जी के अद्ध जले शरीर की अस्थियों के कंकाल को मोहवश सती जी (पार्वती जी) जान कर दस हजार वर्ष तक कंधे पर लिए पागलों की तरह घूमते रहे। भगवान विष्णु जी ने सुदर्शन चक्र से सती जी के कंकाल को छिन्न-भिन्न कर दिया। जहां धड़ गिरा वहाँ पर उस को जमीन में गाढ़ दिया गया। इस धार्मिक घटना की याद बनाए रखने के लिए उसके उपर एक मन्दिर जैसी यादगार बना दी कि कहीं आने वाले समय में कोई यह न कह दे कि पुराण में गलत लिखा है। उस मन्दिर में एक स्त्री का चित्र रख दिया उसे वैष्णो देवी कहने लगे। उसकी देख-रेख व श्रद्धालु दर्शकों को उस स्थान की कहानी बताने के लिए एक नेक व्यक्ति नियुक्त किया गया। उसको अन्य धार्मिक व्यक्ति कुछ वेतन देते थे। बाद में उसके वंशजों ने उस पर भेंट (दान) लेना प्रारम्भ कर दिया तथा कहने लगे कि एक व्यक्ति का व्यापार ठप्प हो गया था, माता के सौ रूपये संकल्प किए, एक नारियल चढ़ाया। वह बहुत धनवान हो गया। एक निःसन्तान दम्पति था, उसने माता के दो सौ रूपए, एक साड़ी, एक सोने का गले का हार चढ़ाने का संकल्प किया। उसको पुत्र प्राप्त हो गया।*

*इस प्रकार भोली आत्माऐं इन दन्त कथाओं पर आधारित होकर अपनी पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों को भूल गए, जिसमें वह सर्व साधनाएं शास्त्र विधि रहित लिखी हैं। जिसके कारण न कोई सुख होता है, न कोई कार्य सिद्ध होता है, न ही परम गति अर्थात् मुक्ति होती है। (प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24)। इसी प्रकार जहां देवी की आँखे गिरी वहाँ नैना देवी का मन्दिर व जहां जिह्वा गिरी वहाँ श्री ज्वाला जी के मन्दिर तथा जहां धड़ गिरा वहाँ वैष्णो देवी के मन्दिर की स्थापना हुई।*

*विशेषः- वैष्णो देवी पर दर्शनार्थ जाने वालों में से बहुत से श्रद्धालु दुर्घटना से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। एक समय गांव लखन माजरा (जि. रोहतक) के पास दो रोडवेज की बसें आपस में टकराई जिनमें लगभग 30 व्यक्ति मारे गये, मरने वालों की संख्या उस बस में अधिक थी, जो वैष्णों देवी से आई थी।*

## “पुरी में श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम कैसे बना”

*उड़ीसा प्रांत में एक इन्द्रदमन नाम का राजा था। वह भगवान श्री कृष्ण जी का अनन्य भक्त था। एक रात्री को श्री कृष्ण जी ने राजा को स्वपन में दर्शन देकर कहा कि जगन्नाथ नाम से मेरा एक मन्दिर बनवा दे। श्री कृष्ण जी ने यह भी कहा था कि इस मन्दिर में मूर्ति पूजा नहीं करनी है। केवल एक संत छोड़ना है जो दर्शकों को पवित्र गीता अनुसार ज्ञान प्रचार करे। समुद्र तट पर वह स्थान भी दिखाया जहाँ मन्दिर बनाना था। सुबह उठकर राजा इन्द्रदमन ने अपनी पत्नी को बताया कि आज रात्री को भगवान श्री कृष्ण जी दिखाई दिए। मन्दिर बनवाने के*

*लिए कहा है। रानी ने कहा शुभ कार्य में देरी क्या? सर्व सम्पत्ति उन्हीं की दी हुई है। उन्हीं को समर्पित करने में क्या सोचना है? राजा ने उस स्थान पर मन्दिर बनवा दिया जो श्री कृष्ण जी ने स्वपन में समुद्र के किनारे पर दिखाया था। मन्दिर बनने के बाद समुद्री तुफान उठा, मन्दिर को तोड़ दिया। निशान भी नहीं बचा कि यहाँ मन्दिर था। ऐसे राजा ने पाँच बार मन्दिर बनवाया। पाँचों बार समुद्र ने तोड़ दिया।*

*राजा ने निराश होकर मन्दिर न बनवाने का निर्णय ले लिया। यह सोचा कि न जाने समुद्र मेरे से कौन-से जन्म का प्रतिशोध ले रहा है। कोष रिक्त हो गया, मन्दिर बना नहीं। कुछ समय उपरान्त पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) ज्योति निरंजन (काल) को दिए वचन अनुसार राजा इन्द्रदमन के पास आए तथा राजा से कहा आप मन्दिर बनवाओ। अब के समुद्र मन्दिर (महल) नहीं तोड़ेगा। राजा ने कहा संत जी मुझे विश्वास नहीं है। मैं भगवान श्री कृष्ण (विष्णु) जी के आदेश से मन्दिर बनवा रहा हूँ। श्री कृष्ण जी समुद्र को नहीं रोक पा रहे हैं। पाँच बार मन्दिर बनवा चुका हूँ, यह सोच कर कि कहीं भगवान मेरी परीक्षा ले रहे हों। परन्तु अब तो परीक्षा देने योग्य भी नहीं रहा हूँ क्योंकि कोष भी रिक्त हो गया है। अब मन्दिर बनवाना मेरे वश की बात नहीं। परमेश्वर ने कहा इन्द्रदमन जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है, वही सर्व कार्य करने में सक्षम है, अन्य प्रभु नहीं। मैं उस परमेश्वर की वचन शक्ति प्राप्त हूँ। मैं समुद्र को रोक सकता हूँ (अपने आप को छुपाते हुए यर्थाथ कह रहे थे)। राजा ने कहा कि संत जी मैं नहीं मान सकता कि श्री कृष्ण जी से भी कोई प्रबल शक्ति युक्त प्रभु है। जब वे ही समुद्र को नहीं रोक सके तो आप कौन से खेत की मूली हो। मुझे विश्वास नही होता तथा न ही मेरी वितिय स्थिति मन्दिर (महल) बनवाने की है। संत रूप में आए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने कहा राजन् यदि मन्दिर बनवाने का मन बने तो मेरे पास आ जाना मैं अमूक स्थान पर रहता हूँ। अब के समुद्र मन्दिर को नहीं तोड़ेगा। यह कह कर प्रभु चले आए।*

*उसी रात्री में प्रभु श्री कृष्ण जी ने फिर राजा इन्द्रदमन को दर्शन दिए तथा कहा इन्द्रदमन एक बार फिर महल बनवा दे। जो तेरे पास संत आया था उससे सम्पर्क करके सहायता की याचना कर ले। वह ऐसा वैसा संत नहीं है। उसकी भक्ति शक्ति का कोई वार-पार नहीं है।*

*राजा इन्द्रदमन नींद से जागा, स्वपन का पूरा वृतान्त अपनी रानी को बताया। रानी ने कहा प्रभु कह रहे हैं तो आप मत चुको। प्रभु का महल फिर बनवा दो। रानी की सद्भावना युक्त वाणी सुन कर राजा ने कहा अब तो कोष भी खाली हो चुका है। यदि मन्दिर नहीं बनवाऊंगा तो प्रभु अप्रसन्न हो जायेंगे। मैं तो धर्म संकट में फंस गया हूँ। रानी ने कहा मेरे पास गहने रखे हैं। उनसे आसानी से*

मन्दिर बन जायेगा। आप यह गहने लो तथा प्रभु के आदेश का पालन करो, यह कहते हुए रानी ने सर्व गहने जो घर रखे थे तथा जो पहन रखे थे निकाल कर प्रभु के निमित अपने पति के चरणों में समर्पित कर दिये। राजा इन्द्रदमन उस स्थान पर गया जो परमेश्वर ने संत रूप में आकर बताया था। कबीर प्रभु अर्थात् अपरिचित संत को खोज कर समुद्र को रोकने की प्रार्थना की। प्रभु कबीर जी (कविर्देव) ने कहा कि जिस तरफ से समुद्र उठ कर आता है, वहाँ समुद्र के किनारे एक चौरा (चबूतरा) बनवा दे। जिस पर बैठ कर मैं प्रभु की भक्ति करूंगा तथा समुद्र को रोकूंगा।

राजा ने एक बड़े पत्थर को कारीगरों से चबूतरा जैसा बनवाया, परमेश्वर कबीर उस पर बैठ गए। छटी बार मन्दिर बनना प्रारम्भ हुआ। उसी समय एक नाथ परम्परा के सिद्ध महात्मा आ गए। नाथ जी ने राजा से कहा राजा बहुत अच्छा मन्दिर बनवा रहे हो, इसमें मूर्ति भी स्थापित करनी चाहिए। मूर्ति बिना मन्दिर कैसा? यह मेरा आदेश है। राजा इन्द्रदमन ने हाथ जोड़ कर कहा नाथ जी प्रभु श्री कृष्ण जी ने मुझे स्वपन में दर्शन दे कर मन्दिर बनवाने का आदेश दिया था तथा कहा था कि इस महल में न तो मूर्ति रखनी है, न ही पाखण्ड पूजा करनी है। राजा की बात सुनकर नाथ ने कहा स्वपन भी कोई सत होता है। मेरे आदेश का पालन कीजिए तथा चन्दन की लकड़ी की मूर्ति अवश्य स्थापित कीजिएगा। यह कह कर नाथ जी बिना जल पान ग्रहण किए उठ गए। राजा ने डर के मारे चन्दन की लकड़ी मंगवाई तथा कारीगर को मूर्ति बनाने का आदेश दे दिया। एक मूर्ति श्री कृष्ण जी की स्थापित करने का आदेश श्री नाथ जी का था। फिर अन्य गुरुओं-संतों ने राजा को राय दी कि अकेले प्रभु कैसे रहेंगे? वे तो श्री बलराम को सदा साथ रखते थे। एक ने कहा बहन सुभद्रा तो भगवान श्री कृष्ण जी की लाड़ली बहन थी, वह कैसे अपने भाई बिना रह सकती है? तीन मूर्तियाँ बनवाने का निर्णय लिया गया। तीन कारीगर नियुक्त किए। मूर्तियाँ तैयार होते ही टुकड़े-टुकड़े हो गई। ऐसे तीन बार मूर्तियाँ खण्ड हो गई। राजा बहुत चिन्तित हुआ। सोचा मेरे भाग्य में यह यश व पुण्य कर्म नहीं है। मन्दिर बनता है वह टूट जाता है। अब मूर्तियाँ टूट रही हैं। नाथ जी रूष्ट हो कर गए हैं। यदि कहूँगा कि मूर्तियाँ टूट जाती हैं तो सोचेगा कि राजा बहाना बना रहा है, कहीं मुझे शाप न दे दे। चिन्ता ग्रस्त राजा न तो आहार कर रहा है, न रात्री भर निन्द्रा आई। सुबह अशान्त अवस्था में राज दरबार में गया।

उसी समय पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर प्रभु एक अस्सी वर्षीय कारीगर का रूप बनाकर राज दरबार में उपस्थित हुआ। कमर पर एक थैला लटकाए हुए था जिसमें आरी बाहर स्पष्ट दिखाई दे रही थी, मानों बिना बताए कारीगर का परिचय दे रही थी तथा अन्य बसोला व बरमा आदि थेले में भरे थे। कारीगर वेश में प्रभु

ने राजा से कहा मैंने सुना है कि प्रभु के मन्दिर के लिए मूर्तियाँ पूर्ण नहीं हो रही हैं। मैं 80 वर्ष का वृद्ध हो चुका हूँ तथा 60 वर्ष का अनुभव है। चन्दन की लकड़ी की मूर्ति प्रत्येक कारीगर नहीं बना सकता। यदि आप की आज्ञा हो तो सेवक उपस्थित है। राजा ने कहा कारीगर आप मेरे लिए भगवान ही कारीगर बन कर आये लगते हो। मैं बहुत चिन्तित था। सोच ही रहा था कि कोई अनुभवी कारीगर मिले तो समस्या का समाधान बने। आप शीघ्र मूर्तियाँ बना दो। वृद्ध कारीगर रूप में आए कविर्देव (कबीर प्रभु) ने कहा राजन मुझे एक कमरा दे दो, जिसमें बैठ कर प्रभु की मूर्ति तैयार करूंगा। मैं अंदर से दरवाजा बंद करके स्वच्छता से मूर्ति बनाऊंगा। ये मूर्तियां जब तैयार हो जायेंगी तब दरवाजा खुलेगा, यदि बीच में किसी ने खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनेगी उतनी ही रह जायेंगी। राजा ने कहा जैसा आप उचित समझो वैसा करो।

बारह दिन मूर्तियाँ बनाते हो गए तो नाथ जी आ गए। नाथ जी ने राजा से पूछा इन्द्रदमन मूर्तियाँ बनाई क्या? राजा ने कर बद्ध हो कर कहा कि आप की आज्ञा का पूर्ण पालन किया गया है महात्मा जी। परन्तु मेरा दुर्भाग्य है कि मूर्तियाँ बन नहीं पा रही हैं। आधी बनते ही टुकड़े-टुकड़े हो जाती हैं नौकरों से मूर्तियों के टुकड़े मंगवाकर नाथ जी को विश्वास दिलाने के लिए दिखाए। नाथ जी ने कहा कि मूर्ति अवश्य बनवानी है। अब बनवाओं मैं देखता हूँ कैसे मूर्ति टूटती है। राजा ने कहा नाथ जी प्रयत्न किया जा रहा है। प्रभु का भेजा एक अनुभवी 80 वर्षीय कारीगर बन्द कमरें में मूर्ति बना रहा है। उसने कहा है कि मूर्तियाँ बन जाने पर मैं अपने आप द्वार खोल दूंगा। यदि किसी ने बीच में द्वार खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनी होंगी उतनी ही रह जायेंगी। आज उसे मूर्ति बनाते बारह दिन हो गये। न तो बाहर निकला है, न ही जल पान तथा आहार ही किया है। नाथ जी ने कहा कि मूर्तियाँ देखनी चाहिये, कैसी बना रहा है? बनने के बाद क्या देखना है। ठीक नहीं बनी होंगी तो ठीक बनायेंगे। यह कहकर नाथ जी राजा इन्द्रदमन को साथ लेकर उस कमरे के सामने गए जहाँ मूर्ति बनाई जा रही थी तथा आवाज लगाई कारीगर द्वार खोलो। कई बार कहा परन्तु द्वार नहीं खुला तथा जो खट-खट की आवाज आ रही थी, वह भी बन्द हो गई। नाथ जी ने कहा कि 80 वर्षीय वृद्ध बता रहे हो, बारह दिन खाना-पिना भी नहीं किया है। अब आवाज भी बंद है, कहीं मर न गया हो। धक्का मार कर दरवाजा तोड़ दिया, देखा तो तीन मूर्तियाँ रखी थी, तीनों के हाथ के व पैरों के पंजे नहीं बने थे। कारीगर अन्तर्ध्यान था।

मन्दिर बन कर तैयार हो गया और चारा न देखकर अपने हठ पर अडिग नाथ जी ने कहा ऐसी ही मूर्तियों को स्थापित कर दो, हो सकता है प्रभु को यही स्वीकार हो, लगता है श्री कृष्ण ही स्वयं मूर्तियां बना कर गए हैं।

मुख्य पांडे ने शुभ मूहूर्त निकाल कर अगले दिन ही मूर्तियों की स्थापना कर

*दी। सर्व पाण्डे तथा मुख्य पांडा व राजा तथा सैनिक व श्रद्धालु मूर्तियों में प्राण स्थापना करने के लिए चल पड़े। पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) एक शुद्र का रूप धारण करके मन्दिर के मुख्य द्वार के मध्य में मन्दिर की ओर मुख करके खड़े हो गए। ऐसी लीला कर रहे थे मानों उनको ज्ञान ही न हो कि पीछे से प्रभु की प्राण स्थापना की सेना आ रही है। आगे-आगे मुख्य पांडा चल रहा था। परमेश्वर फिर भी द्वार के मध्य में ही खड़े रहे। निकट आ कर मुख्य पांडे ने शुद्र रूप में खड़े परमेश्वर को ऐसा धक्का मारा कि दूर जा कर गिरे तथा एकान्त स्थान पर शुद्र लीला करते हुए बैठ गए। राजा सहित सर्व श्रद्धालुओं ने मन्दिर के अन्दर जा कर देखा तो सर्व मूर्तियाँ उसी द्वार पर खड़े शुद्र रूप परमेश्वर का रूप धारण किए हुए थी। इस कौतूक को देखकर उपस्थित व्यक्ति अचम्भित हो गए। मुख्य पांडा कहने लगा प्रभु क्षुब्ध हो गया है क्योंकि मुख्य द्वार को उस शुद्र ने अशुद्ध कर दिया है। इसलिए सर्व मूर्तियों ने शुद्र रूप धारण कर लिया है। बड़ा अनिष्ठ हो गया है। कुछ समय उपरान्त मूर्तियों का वास्तविक रूप हो गया। गंगा जल से कई बार स्वच्छ करके **प्राण स्थापना की गई।*** {कविर्देव ने कहा अज्ञानता व पाखण्ड वाद की चरम सीमा देखें। कारीगर मूर्ति का भगवान बनता है। फिर पूजारी या अन्य संत उस मूर्ति रूपी प्रभु में प्राण डालता है अर्थात् प्रभु को जीवन दान देता है। तब वह मिट्‌टी या लकड़ी का प्रभु कार्य सिद्ध करता है, वाह रे पाखण्डियों खूब मूर्ख बनाया प्रभु प्रेमी आत्माओं को।}

*मूर्ति स्थापना हो जाने के कुछ दिन पश्चात् लगभग 40 फूट ऊँचा समुद्र का जल उठा जिसे समुद्री तुफान कहते हैं तथा बहुत वेग से मन्दिर की ओर चला। सामने कबीर परमेश्वर चौरा (चबुतरे) पर बैठे थे। अपना एक हाथ उठाया जैसे आर्शीवाद देते हैं, समुद्र उठा का उठा रह गया तथा पर्वत की तरह खड़ा रहा, आगे नहीं बढ़ सका। विप्र रूप बना कर समुद्र आया तथा चबूतरे पर बैठे प्रभु से कहा कि भगवन आप मुझे रास्ता दे दो, मैं मन्दिर तोड़ने जाऊंगा। प्रभु ने कहा कि यह मन्दिर नहीं है। यह तो महल (आश्रम) है। इस में विद्वान् पुरुष रहा करेगा तथा पवित्र गीता जी का ज्ञान दिया करेगा। आपका इसको विधवंश करना शोभा नहीं देता। समुद्र ने कहा कि मैं इसे अवश्य तोडूंगा। प्रभु ने कहा कि जाओ कौन रोकता है? समुद्र ने कहा कि मैं विवश हो गया हूँ। आपकी शक्ति अपार है। मुझे रस्ता दे दो प्रभु। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हो? विप्र रूप में उपस्थित समुद्र ने कहा कि जब यह श्री कृष्ण जी त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र रूप में आया था तब इसने मुझे अग्नि बाण दिखा कर बुरा भला कह कर अपमानित करके रास्ता मांगा था। मैं वह प्रतिशोध लेने जा रहा हूँ।*

*परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि प्रतिशोध तो आप पहले ही ले चुके हो। आपने द्वारिका को डूबो रखा है। समुद्र ने कहा कि अभी पूर्ण नहीं डूबा पाया हूँ, आधी रहती है। वह भी कोई प्रबल शक्ति युक्त संत सामने आ गया था जिस कारण से*

*मैं द्वारिका को पूर्ण रूपेण नहीं समा पाया। अब भी कोशिश करता हूँ तो उधर नहीं जा पा रहा हूँ। उधर जाने से मुझे बांध रखा है।*

*तब परमेश्वर कबीर (कविर्देव) ने कहा वहाँ भी मैं ही पहुँचा था। मैंने ही वह अवशेष बचाया था। अब जा शेष बची द्वारिका को भी निगल ले, परन्तु उस यादगार को छोड़ देना, जहाँ श्री कृष्ण जी के शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया था* (श्री कृष्ण जी के अन्तिम संस्कार स्थल पर बहुत बड़ा मन्दिर बना दिया गया। यह यादगार प्रमाण बना रहेगा कि वास्तव में श्री कृष्ण जी की मृत्यु हुई थी तथा पंच भौतिक शरीर छोड़ गये थे। नहीं तो आने वाले समय में कहेंगे कि श्री कृष्ण जी की तो मृत्यु ही नहीं हुई थी)*। आज्ञा प्राप्त कर शेष द्वारिका को भी समुद्र ने डूबो लिया। परमेश्वर कबीर जी (कविर्देव) ने कहा अब आप आगे से कभी भी इस जगन्नाथ मन्दिर को तोड़ने का प्रयत्न न करना तथा इस महल से दूर चला जा। आज्ञा प्रभु की मान कर प्रणाम करके समुन्द्र मन्दिर से दूर लगभग डेढ़ किलोमीटर अपने जल को ले गया। ऐसे श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम स्थापित हुआ।*

## "श्री जगन्नाथ के मन्दिर में छुआछात प्रारम्भ से ही नहीं है"

*कुछ दिन पश्चात जिस पांडे ने प्रभु कबीर जी को शुद्र रूप में धक्का मारा था उसको कुष्ट रोग हो गया। सर्व औषधी करने पर भी स्वस्थ नहीं हुआ। कुष्ट रोग का कष्ट अधिक से अधिक बढ़ता ही चला गया। सर्व उपासनायें भी की, श्री जगन्नाथ जी से रो-रोकर संकट निवार्ण के लिए प्रार्थना की, परन्तु सर्व निष्फल रही। स्वपन में श्री कृष्ण जी ने दर्शन दिए तथा कहा पांडे उस संत के चरण धोकर चरणामृत पान कर जिसको तुने मन्दिर के मुख्य द्वार पर धक्का मारा था। तब उसके आशीर्वाद से तेरा कुष्ट रोग ठीक हो सकता है। यदि उसने तुझे हृदय से क्षमा किया तो, तेरा कुष्ट रोग समाप्त होगा अन्यथा नहीं। मरता क्या नहीं करता?*

*वह मुख्य पांडा सवेरे उठा। कई सहयोगी पांडों को साथ लेकर उस स्थान पर गया जहाँ पर प्रभु कबीर जी शुद्र रूप में विराजमान थे। ज्यों ही पांडा प्रभु के निकट आया तो परमेश्वर उठ कर चल पड़े तथा कहा हे पांडा मैं तो अछूत हूँ मेरे से दूर रहना, कहीं आप अपवित्र न हो जायें। पांडा निकट पहूँचा, परमेश्वर और आगे चल पड़े। तब पांडा फूट-फूट कर रोने लगा तथा कहा परवरदीगार मेरा दोष क्षमा कर दो। तब दयालु प्रभु रूक गए। पांडे ने आदर के साथ एक स्वच्छ वस्त्र जमीन पर बिछा कर प्रभु को बैठने की प्रार्थना की। प्रभु उस वस्त्र पर बैठ गए। तब उस पांडे ने स्वयं चरण धोए तथा चरणामृत को पात्र में वापिस डाल लिया। प्रभु कबीर जी ने कहा पांडे चालीस दिन तक इसे पीना भी तथा स्नान करने वाले जल में कुछ डाल कर स्नान करते रहना। चालीसवें दिन तेरा कुष्ट रोग समाप्त होगा तथा कहा कि भविष्य में भी इस जगन्नाथ जी के मन्दिर में किसी ने छूआछात*

*किया तो उसको भी दण्ड मिलेगा। सर्व उपस्थित व्यक्तियों ने वचन किए कि आज के बाद इस पवित्र स्थान पर कोई छुआ-छात नहीं की जायेगी।*

*विचार करें :- हिन्दुस्तान का एकमात्र ऐसा मन्दिर है जिसमें प्रारम्भ से ही छूआ-छात नहीं रही है।*

*मुझ दास को भी उस स्थान को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। कई सेवकों के साथ उस स्थल को देखने के लिए गया था कि कुछ प्रमाण प्राप्त करूं। वहाँ पर सर्व प्रमाण आज भी साक्षी मिले। जिस पत्थर के चबूतरे (चौरा) पर बैठ कर कबीर परमेश्वर जी ने मन्दिर को बचाने के लिए समुद्र को रोका था वह आज भी विद्यमान है। उसके उपर एक यादगार रूप में गुमज बना रखा है। वहाँ पर बहुत पुरातन महन्त (रखवाला) परम्परा से एक आश्रम भी विद्यमान है। वहाँ पर लगभग 70 वर्षीय वृद्ध महन्त जी से उपरोक्त मन्दिर की समुद्र से रक्षा की जानकारी चाही तो उसने भी यही बताया तथा कहा कि मेरे पूर्वज कई पीढ़ीयों से यहाँ पर महन्त (रखवाले) रहे हैं। यहाँ पर ही श्री धर्मदास साहेब व उनकी पत्नी भक्तमति आमनी देवी ने शरीर त्यागा था। दोनों की समाधियाँ भी साथ-साथ बनी दिखाई।*

*हम श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर में भी गए। वहाँ पर मूर्ति पूजा आज भी नहीं है। परन्तु प्रदर्शनी अवश्य लगा रखी है। जो तीन मूर्तियाँ भगवान श्री कृष्ण जी तथा श्री बलराम जी व बहन सुभद्रा जी की मन्दिर के अन्दर स्थापित हैं उनके दोनों हाथों के पंजे नहीं हैं, दोनों हाथ टूंडे हैं। उन मूर्तियों की भी पूजा नहीं होती, केवल दर्शनार्थ रखी हैं। वहाँ पर एक गाईड पांडे से पूछा कि सुना है कि यह मन्दिर पाँच बार समुद्र ने तोड़ा था पुनर बनवाया था। समुद्र ने क्यों तोड़ा? फिर किसने समुद्र को रोका। पांडे ने कहा इतना तो मुझे पता नहीं। यह सर्व कृपा जगन्नाथ जी की थी, उन्होंने ही समुद्र को रोका था, सुना तो है कि समुद्र ने तीन बार मन्दिर को तोड़ा था। मैंने फिर प्रश्न किया कि प्रथम वार ही क्यों न समुद्र रोका प्रभु ने। पांडे ने उत्तर दिया कि लीला है जगन्नाथ की।*

*मैंने फिर पूछा कि इस मन्दिर में छूआछात है या नहीं? उसने कहा जब से मन्दिर बना है यहाँ कोई छूआछात नहीं है। मन्दिर में शुद्र तथा पांडा एक थाली या पतल में खाना खा सकते हैं कोई मना नहीं करता। मैंने प्रश्न किया पांडे जी अन्य हिन्दु मन्दिरों में तो पहले बहुत छुआछात थी, इसमें क्यों नहीं? प्रभु तो वही है। पांडे का उतर था लीला है जगन्नाथ की।*

*अब पुण्यात्माएें विचार करें कि सत को कितना दबाया गया है, एक लीला जगन्नाथ की कह कर। पवित्र यादगारें आदरणीय हैं, परन्तु आत्म कल्याण तो केवल पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों में वर्णित तथा परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिए तत्वज्ञान के अनुसार भक्ति साधना करने मात्र से ही सम्भव है, अन्यथा शास्त्र विरुद्ध होने से मानव जीवन व्यर्थ हो जाएगा। प्रमाण गीता अध्याय 16 मंत्र 23-*

*24 । श्री जगन्नाथ के मन्दिर में प्रभु के आदेशानुसार पवित्र गीता जी के ज्ञान की महिमा का गुणगान होना ही श्रेयकर है तथा जैसा श्रीमद्भगवत गीता जी में भक्ति विधि है उसी प्रकार साधना करने मात्र से ही आत्म कल्याण संभव है, अन्यथा जगन्नाथ जी के दर्शन मात्र या खिचड़ी प्रसाद खाने मात्र से कोई लाभ नहीं, क्योंकि यह क्रिया श्री गीता जी में वर्णित न होने से शास्त्र विरुद्ध हुई, जो अध्याय 16 मंत्र 23-24 में प्रमाण है।*

## ''मूर्ति पूजा करना उचित या अनुचित''

*कबीर परमेश्वर ने कहा हे धर्मदास! आप मूर्ति पूजा (सालिगराम की पूजा) करते हो यह पूजा भी गीता जी में नहीं कही है। प्रश्न :- धर्मदास जी ने प्रश्न किया, हे महात्मा जी क्या मूर्ति रखना ही नहीं चाहिए?*

*परमेश्वर ने उत्तर दिया :- जैसे आम या सेब के फल की पत्थर या मिट्टी की मूर्ति किसी ने ले रखी है या कागज पर सुन्दर चित्र बना रखा है वह केवल चित्र है वास्तविक वस्तु नहीं है। उस फल के चित्र से फल के गुणों का ज्ञान होता है उस को प्राप्त करके खाने को मन करता है। उस फल को जिसका चित्र आपके पास है प्राप्त करके खाने से लाभ होगा न की उस फल के चित्र या मूर्ति की पूजा करने मात्र से। आम के फल की मूर्ति आम का फल नहीं हैं उस मूर्ति वाले फल को प्राप्त करने की विद्यी भिन्न है। जैसे मजदूरी परिश्रम करके रूपये प्राप्त करे तत् पश्चात् बाजार में जाकर फल प्राप्त करके खाए। इसी प्रकार जिस देव की मूर्ति है उस देव को प्राप्त करने की विधि भिन्न है। किसी तत्वदर्शी सन्त गुरु के पास जाकर उस प्रभु को प्राप्त करने की साधना (पूजा) करके उस परमात्मा के लाभ को प्राप्त करें। ध्यान रहे कि वह मूर्ति परमात्मा की है वह मूर्ति परमात्मा नहीं है। मूर्ति को देखकर उसे प्राप्त करने की प्रेरणा होती है इसलिए अपने इष्ट देव की मूर्ति रखना अच्छी बात है उसे नमस्कार करने से साधक में आधीनी का भाव बना रहता है जो भक्ति मार्ग में अति आवश्यक है तथा प्रभु को पसन्द है परन्तु उस मूर्ति व चित्र वाले परमात्मा को प्राप्त करने पर ही उसका वास्तविक लाभ अर्थात् मोक्ष प्राप्त होगा केवल मूर्ति पूजा से नहीं।*

❑❑❑

*प्रश्न :- पूर्ण सन्त की क्या पहचान है? जिस भी सन्त के विचार सुनते हैं वह पूर्ण लगता है। राधास्वामी पंथ में तो हमें बताया है कि सतलोक अर्थात सतनाम में सतपुरूष निराकार है। केवल प्रकाश ही प्रकाश है। आत्मा का सतपुरूष में विलीन हो जाना ही मोक्ष है। धुन सुनना ही सतपुरूष प्राप्ति है। मैंने 4 से 8 घण्टे तक अभ्यास कर के देख लिया कोई मण्डल दिखाई नहीं दिए। जो प्रकाश व धुन कुछ दिन बाद दिखने तथा सुनने लगा था वही चल रहा है, कान भी खराब हो गए, पैरों में भी कमजोरी आ गई है। आप के द्वारा लिखी पुस्तकों ''परमेश्वर का सार संदेश'' तथा ''गहरी नजर गीता में'' ने तो आँखें खोल दी हैं। समाचार पत्रों में आप के लेख पढ़ने से लग रहा है कि शायद परमात्मा फिर से निकट आ रहा है। कृप्या पूर्ण सन्त की प्रमाणित पहचान बताऐं।*

*उत्तरः- पूर्ण सन्त की पहचान(1):- राधास्वामी पंथ के प्रथम सन्त माने जाने वाले श्री शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी जी को ज्ञान ही नहीं कि सतनाम क्या वस्तु है। श्री शिव दयाल जी तथा उनके अनुयाई मोक्ष प्राप्त ही नहीं कर सकते। वे सतनाम को स्थान भी कहते हैं कहीं पर कहा है सतनाम हमारी जाति है, कहीं पर सतपुरूष कहते हैं, कहीं पर सारनाम कहते हैं, कहीं पर सतलोक कहते हैं तथा पांच नाम सतनाम का जाप भी है। जब की सतनाम दो अक्षर का मन्त्र है। जिसमें एक ओम् तथा दूसरा तत्(जो सांकेतिक है केवल उपदेशी को ही बताया जाएगा) तथा इस दो अक्षर के सतनाम की कमाई करने के पश्चात् एक मन्त्र और दिया जाएगा जो सारनाम (सत शब्द) कहा जाता है।*

*कृप्या पढ़ें पूर्ण सन्त की पहचान :- जैसे राजा का संविधान है। ऐसे ही पवित्र शास्त्र परमात्मा का संविधान है जो किसी व्यक्ति विशेष का बनाया हुआ नहीं है। स्वयं प्रभु प्रदत्त है। पवित्र चारों वेद ब्रह्म सृष्टी के आदि ग्रन्थ हैं जो ब्रह्म(काल अर्थात ज्योति निरंजन) द्वारा बोले गए हैं। इन्हीं चारों वेदों का सारांश पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी है जो काल भगवान(ब्रह्म/क्षर पुरूष) द्वारा श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके बोला गया अमृत ज्ञान है। जिसमें काल प्रभु की भक्ति तक का ज्ञान है तथा पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष) का तथा सतलोक का भी ज्ञान है। परन्तु भक्ति विधि केवल काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) तक की ही है परन्तु पूर्ण परमात्मा की साधना तथा तत्व ज्ञान को किसी तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त से जानने को कहा है (गीता अध्याय 4 श्लोक 34)। क्योंकि पवित्र चारों वेद तथा पवित्र श्री मद्भगवत गीता जी को ऐसा ज्ञान जानो जैसे दसवीं कक्षा तक का पाठ्यक्रम। पाँचवां वेद जिसे स्वसम वेद(सूक्ष्म वेद) कहते हैं जिसमें चारों वेद तथा गीता जी तथा इनसे ऊपर का भी ज्ञान है। वह पूर्ण परमात्मा अर्थात*

*सत्पुरूष कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ने स्वयं सतलोक से आकर काल लोक में अपनी अमृत वाणी(कबीर वाणी) द्वारा स्वयं प्रकट किया है। जो काल भगवान(क्षर पुरूष) ने समाप्त कर दिया था। जैसे किसी अपराध की धारा के विषय में पाँच वकील अपना-2 मत व्यक्त कर रहे हैं। एक कहता है इस अपराध पर संविधान की धारा 304 लगेगी, दूसरा कहता है 307 लगेगी, तीसरा कहता है 305 लगेगी, चौथा कहता है 376 लगेगी, पाँचवा कहता है 311-बी लगेगी। वे पाँचों वकील ठीक नहीं हो सकते। कौन सी धारा ठीक है यह निर्णय देश के संविधान से ही होगा। संविधान में लिखा विवरण अन्तिम तथा सत्य मान्य होता है।*

*ठीक इसी प्रकार परमात्मा के ज्ञान तथा भक्ति मार्ग की जांच के लिए पवित्र सद्ग्रन्थों को ही आधार माना जाएगा। पवित्र गीता जी में तथा पवित्र चारों वेदों में तथा(पांचवें वेद) कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की अमृत वाणी में सर्व ज्ञान तथा भक्ति विधि स्पष्ट लिखी है। पहले पवित्र गीता जी को आधार मान कर ज्ञान ग्रहण करते हैं। पवित्र गीता जी में तीनों प्रभुओं {ब्रह्म (क्षर पुरूष/काल) तथा परब्रह्म (अक्षर पुरूष) तथा पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरूष अर्थात सतपुरूष)} की भी जानकारी है।*

*गीता जी का ज्ञान ब्रह्म (क्षर पुरूष/काल) द्वारा दिया गया है। गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए ॐ-तत्-सत् इस तीन मन्त्र के जाप करने का निर्देश है। गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा कि पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का ॐ-तत्-सत् तीन मन्त्र का जाप है उस मन्त्र में मेरी भक्ति (साधना) का केवल एक ओम् (ॐ) अक्षर है जिसका उच्चारण करके स्मरण करना है। जो साधक अन्तिम स्वांस तक मेरा स्मरण करता हुआ प्राण त्याग जाता है उसे परमगति प्राप्त होती है। अकेला ॐ नाम का जाप काल ब्रह्म की साधना का है। तथा ब्रह्म साधना का प्रतिफल स्वर्ग- महास्वर्ग प्राप्ति, फिर पाप कर्म आधार से नरक का भोग तथा चौरासी लाख योनियों में जन्म-मृत्यु का कष्ट सदा बना रहेगा। केवल जैसा कर्म प्राणी (पाप-पुण्य) करता है वह दोनों का फल भोगता है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता (केवल पूर्ण परमात्मा की साधना करने से पाप कर्म दण्ड समाप्त होता है)।*

*इसी का प्रमाण गीता ज्ञान दाता प्रभु गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में कहता है कि अर्जुन तेरे तथा मेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में भी यही प्रमाण है तथा गीता अध्याय 2 श्लोक 17 तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62, गीता अध्याय 15 श्लोक 4, 17 में अपने से अन्य पूर्ण परमात्मा (परमेश्वर) के विषय में कहा है तथा वही वास्तव में अविनाशी परमात्मा है। वही सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार है। उसी की शरण में जाने से जन्म-मृत्यु का रोग पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगा अर्थात पूर्ण मोक्ष प्राप्त हो जाएगा।*

*उसे पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष अर्थात अविनाशी परमेश्वर) के तत्वज्ञान तथा भक्ति विधि के विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा हे कि परमेश्वर को प्राप्त करने के लिए बहुत विस्तृत साधनाओं का ज्ञान स्वयं परमेश्वर ने अपने मुख से मुख्य ज्ञान में अर्थात् तत्वज्ञान में कहा फिर गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा कि उस तत्वज्ञान को समझ उसको समझने के लिए तत्वदर्शी सन्तों की खोज कर। फिर उन तत्वदर्शी सन्तों को विनम्र भाव से डण्डवत् प्रणाम करके प्रार्थना पूर्वक प्रश्न करने पर वे तत्व ज्ञान को जानने वाले तत्वदर्शी सन्त तुझे तत्वज्ञान सुनाऐंगे। उस पूर्ण परमात्मा के तत्व ज्ञान को समझ तथा जैसे वे साधना बतायें वैसे कर। (प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में है।)*

*गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो जिसकी मूल तो ऊपर को है तथा शाखाएं नीचे को हैं। ऊपर को जड़ें तो पूर्ण परमात्मा जानो तथा तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्माजी, सतगुण-विष्णुजी तथा तमगुण-शिवजी) रूपी शाखाऐं जानो। गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि मेरे तथा तेरे इस विचार काल में अर्थात् गीता ज्ञान में आपको मैं पूर्ण रूप से इस संसार रूपी वृक्ष (सृष्टी रचना) का ज्ञान नहीं बता सकता।*

*क्योंकि इसके आदि तथा अंत से मैं अपरीचित हूँ। इस उलझी हुई ज्ञान गुत्थी को तत्व ज्ञान रूपी शस्त्र द्वारा ही काटा जा सकता है अर्थात समझा जा सकता है। सृष्टी रचना के विषय में तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त ही बता सकता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में तत्वदर्शी (पूर्ण) सन्त की पहचान बताते हुए कहा है कि इस उल्टे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष के भिन्न-2 भागों को जो सन्त बतावे(सः वेद वित्) वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है अर्थात तत्वदर्शी (पूर्ण) सन्त है। क्योंकि गीता ज्ञान दाता ने तो केवल इतना ही बताया है कि ऊपर को तो जड़(मूल) है तथा नीचे को तीनों गुण रूपी शाखाएं हैं। फिर कहा है कि मुझे पूर्ण ज्ञान नहीं है। जो संसार रूपी वृक्ष के सर्व भागों जैसे मूल, तना, डार, शाखाऐं, पत्तों का ज्ञान भिन्न-2 बताए उसे तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त जानना।*

*परमेश्वर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने स्वयं अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान दिया।*

''कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।''

*कृप्या देखें उल्टा लटके हुए संसार रूपी वृक्ष का चित्रः-*

*इस उल्टे संसार रूपी वृक्ष की जड़ें तो पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म अर्थात पूर्ण ब्रह्म/सतपुरूष) है। जमीन से बाहर तुरन्त जो हिस्सा दृष्टिगोचर होता है जिसे तना कहते हैं वह अक्षर पुरूष (परब्रह्म) जानो तथा मोटी डार को क्षर पुरूष (ब्रह्म/काल) जानो तथा डार की तीनों शाखाओं को श्री ब्रह्माजी(रजगुण), श्री विष्णुजी(सतगुण) तथा श्री शिवजी(तमगुण) रूपी तीनों देव जानो तथा पात रूप में संसार समझें। अब*

*समझें कि पूर्ण परमात्मा (जड़ों) से सर्व वृक्ष का पालन होता है। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 16 में लिखा है। दो प्रभु तो इस पृथ्वी लोक में हैं (ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों को पृथ्वी वाला लोक कहा जाता है। क्योंकि यह नाशवान है) एक क्षर पुरूष (ब्रह्म/काल) तथा दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तथा दोनों ही प्रभुओं (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) के लोकों में दोनों प्रभुओं के तथा इनके अन्तर्गत प्राणियों के स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम पुरूष (वास्तव में श्रेष्ठ परमात्मा) तो इन (उपरोक्त) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य ही है। जो परमात्मा(परम अक्षर ब्रह्म) कहा जाता है वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।*

*उदाहरणार्थः- जैसे एक मूर्ति तो मिट्टी की बनी हो जो स्पष्ट नाशवान दिखाई देती है। गिरते ही टुकड़े-2 हो जाएगी। ऐसी स्थिती तो क्षर पुरूष (ब्रह्म) की जानो तथा दूसरी मूर्ति स्टील(इस्पात) की बनी हो जो मिट्टी वाली मूर्ति की तुलना में अधिक टिकाऊ है। परन्तु स्टील (इस्पात) को भी जंग लगेगा। एक दिन नष्ट हो जाएगी। भले ही समय अधिक लगे। इसी प्रकार अक्षर पुरूष को भी अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी तो तीसरी धातु स्वर्ण की बनी मूर्ति होती है जिसका कभी विनाश नहीं होता। ऐसी स्थिति परम अक्षर ब्रह्म अर्थात पूर्ण ब्रह्म (सतपुरूष) की जानो। वही तीसरा पूर्ण परमात्मा जो संसार रूपी वृक्ष की जड़(मूल) है सर्व का पालन पोषण करने वाला है। उसी पूर्ण परमात्मा की साधना तत्वदर्शी सन्त बताएगा। इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि पूर्ण सन्त(तत्वदर्शी) के मिल जाने के पश्चात् उस परमेश्वर(सतपुरूष) के उस स्थान की खोज करनी चाहिए जिस स्थान(सतलोक) में जाने के पश्चात् साधक पुनर् लौटकर संसार में नहीं आते अर्थात् जन्म-मृत्यु से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाते हैं तथा जिस आदि पुरूष अर्थात पूर्ण परमात्मा(सतपुरूष) से संसार रूपी वृक्ष का विस्तार हुआ है अर्थात जिसने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है। स्वयं गीता ज्ञान दाता प्रभु ने भी कहा है कि मैं भी उसी की शरण में हूँ। उसी परमात्मा की भक्ति विश्वास के साथ करनी चाहिए। यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में है कि गीता ज्ञान दाता प्रभु किसी अन्य पूर्ण परमात्मा की ओर संकेत कर रहा है। कहा है कि हे अर्जुन ! तू सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कृपा से तू परम शान्ति तथा सतलोक(शाश्वत स्थान) को प्राप्त होगा। गीता अध्याय 18 श्लोक 64 में कहा है कि मेरा पूज्य देव भी यही पूर्ण परमात्मा है।*

*विशेषः- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि तत्वदर्शी अर्थात पूर्ण सन्त वह है जो संसार रूपी उल्टे वृक्ष के सर्वांगों का भिन्न-2 विवरण बताए। जिसे गीता ज्ञान दाता प्रभु भी नहीं जानता। वह विवरण आप जी ने ऊपर पढ़ा तथा उल्टे संसार रूपी वृक्ष का चित्र भी देखा। आगे पढ़े पूर्ण सन्त की अन्य पहचान तथा कैसे मिले वह पूर्ण*

*परमात्मा जिस के विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में व अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है।*

*-दासन दास रामपाल दास*

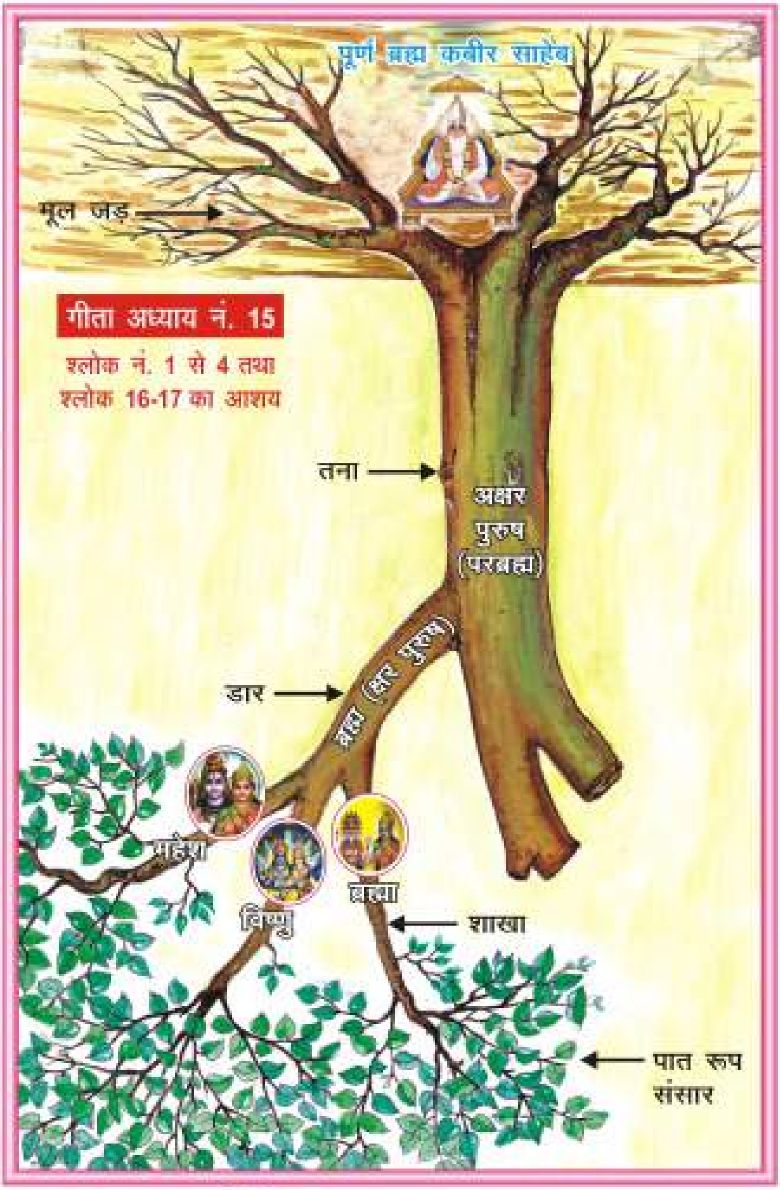


ऊपर जड नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ
संसार रूपी वृक्ष का चित्र

# पूर्ण सन्त की पहचान (2)

**नानक साहेब जी कहते हैं :-**

सोई सतगुरू पूरा कहावै। दोय अख्खर का भेद बतावै।।
एक छुड़ावै एक लखावै। तो प्राणी निज घर जावै।।

*गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में उस पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष) की साधना का भी संकेत दिया है। कहा है कि उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का तो केवल ॐ-तत्-सत् इस तीन मन्त्र के जाप का निर्देश है। जिसका तीन विधि से स्मरण किया जाता है। यही साधना साधक जन सृष्टी के प्रारम्भ में करते थे। तीन मन्त्र के स्मरण की विधि तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त बताएगा। क्योंकि गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा के विषय में तत्वदर्शी सन्त से पूछो।*

*ओम् शब्द- यह ब्रह्म(क्षर पुरूष) का जाप है। तत् शब्द यह परब्रह्म का जाप है। यहाँ तत् शब्द सांकेतिक है। जो यह दास केवल उपदेशी को ही बताएगा।*

*ओम्+तत् (सांकेतिक) मिलकर सतनाम (दो अक्षर का मन्त्र) बनता है तथा सत् शब्द(सांकेतिक) तीसरा मन्त्र है इसे सारनाम भी कहते हैं। इसी को आदि नाम भी कहते हैं। जो गुप्त है उसको पूर्ण सन्त ही बताएगा जो स्मरण करने का है। ओम मन्त्र का जाप काल (ब्रह्म) के ऋण से मुक्त कराएगा (काल से छुड़वाएगा) तथा दूसरा तत्(सांकेतिक) परब्रह्म का मन्त्र है। जिसका जाप परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों को पार करने का किराया है। यह भंवर गुफा तक पहुँचाएगा अर्थात पूर्ण परमात्मा को दिखाएगा(लखाएगा) तथा तीसरा मन्त्र सारनाम पूर्ण परमात्मा के सतलोक में स्थाई करेगा। फिर साधक का जन्म-मृत्यु सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। सतलोक में पूर्ण परमात्मा अर्थात् सतपुरूष मानव सदृश आकार में है। जिसके एक रोम कूप की शोभा करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है। जीव आत्मा भी साकार मानव सदृश शरीर में रहती है तथा आत्मा के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान है। आत्मा अपने साकार परमात्मा के सिर पर चंवर करती है(प्रमाण कबीर परमेश्वर की अमृतवाणी शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' जो सन्तमत प्रकाश भाग-3 के प्रथम पृष्ठ पर लिखा है)।*

*राधास्वामी पन्थ तथा धन-धन सतगुरू पंथ वाले सन्तों का कहना है कि सतलोक में तो केवल प्रकाश ही प्रकाश है। सतपुरूष निराकार है। आत्मा सतलोक में जा कर परमात्मा में ऐसे समा जाती है जैसे बूंद समुंद्र में समा जाती है। परमात्मा और आत्मा का भिन्न अस्तित्व नहीं रहता। जबकि वास्तविकता ऊपर वर्णित है वह सही है जो परमात्मा पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) ने स्वयं बताई है। मुझ दास को अपनी कृपा से दर्शन कराए हैं।*

*उपरोक्त सतनाम जो दो अक्षर (ओम् + तत् सांकेतिक) के योग से बनता है का*

*उदाहरण स्वयं श्री सावन सिंह जी महाराज (जो श्री खेमामल उर्फ शाहमस्ताना जी के गुरु जी है। शाहमस्ताना जी ने धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा सिरसा में स्थापित किया है) ने पुस्तक संतमत प्रकाश भाग-4 के पृष्ठ 261-262 पर लिखा है। परन्तु स्वयं ज्ञान नहीं है, ग्रंथ साहेब का प्रमाण लिया है। नानक साहेब कहते हैं कि -*

सोई सतगुरु पूरा कहावै, दोय अख्खर का भेद बतावै। एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर जावै।

***फिर कहते हैं*** - जे तू पढ़या पंडित बीना दोय अख्खर दुयनावां। प्रणवत नानक एक लंघाए जे कर सच्च समावां। ***(आदि गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 1171)***

***फिर कबीर परमेश्वर जी की वाणी का प्रमाण दिया है :-*** **कह कबीर अक्षर दुय भाख। होयगा खसम त लेयगा राख।** *(आदि गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 329)*

***फिर लिखा है :- ओम् शब्द, सोहं शब्द, सतशब्द***

***विचार करें :- उपरोक्त मंत्र पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति तथा सतलोक निवास के हैं जिसका पवित्र गीता जी में तथा पवित्र अमृत वाणी कबीर साहेब तथा प्रभु प्राप्त संतों की अमृतवाणी में भी प्रमाण है। परंतु राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरु पंथ तथा जयगुरुदेव तथा दिनोंद भिवानी आदि राधास्वामी वाले पंथों के संतों को ज्ञान नहीं है। सतनाम जो दो अक्षर के योग से बनता है उस के विषय में गोल-मोल लिख दिया कि ये आगे पारब्रह्म में हैं तथा एक अक्षर(सारनाम) के विषय में लिखा है कि वह भी पारब्रह्म में मिलेगा। स्वयं वे ''ज्योति निरंजन'', ''औंकार'', ''ररंकार'', ''सोहं'' तथा ''सतनाम'' ये पांच नाम देते हैं तथा धन-धन सतगुरू सच्चा सौदा वाले सन्त पहले तो यही पांच नाम देते थे अब, ''सतपुरुष'', ''अकाल मूर्ति'', ''शब्द स्वरूपी राम'' ये अन्य तीन नाम देते हैं। दिनोंद भिवानी वाले ताराचन्द जी महाराज वाला पंथ केवल ''राधास्वामी'' नाम देता है, स्वयं दो अख्खर के वास्तविक मंत्र से अपरिचित हैं। इसलिए कबीर परमेश्वर की अमृतवाणी तथा श्री नानक जी की अमृतवाणी के आधार से जो दो अक्षर का भेद नहीं जानता वह पूरा गुरु (पूर्ण संत) नहीं है। इससे सिद्ध हुआ कि राधा स्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा पंथ तथा श्री ठाकुर सिंह, श्री कृपाल सिंह तथा जय गुरूदेव मथुरा वाले तथा दिनोद भिवानी वाले राधास्वामी के सन्त जी पूर्ण सन्त नहीं हैं क्योंकि उनको दो अक्षर का ज्ञान नहीं है।***

***पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 262 में लिखा है सतनाम हमारी जाति है, सतपुरूष हमारा धर्म है, सच्चखण्ड(सतलोक) हमारा देश है। यहाँ पर सतनाम, सतपुरूष, सच्चखण्ड तीनों को भिन्न-2 बताया है। इसी पुस्तक के पृष्ठ 21 पर सतनाम को स्थान कहा है। पुस्तक सारवचन वार्तिक प्रथम भाग के वचन 4 में सतनाम, सच्चखण्ड, सतपुरूष, सारशब्द, सतशब्द को एक बताया है। क्या ये विचार परम सन्त के हो सकते हैं? {कृप्या पढ़ें सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261-262 से***

*फोटो कापी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 43-44 पर}*

***अधूरे सन्तों के विषय में पूज्य कबीर परमेश्वर जी कहते हैं:-***

सतगुरू बिन काहु न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुस छिड़ै मूढ किसाना।
सतगुरू बिन बेद पढें जो प्राणी, समझे ना सार रहे अज्ञानी।
वस्तु कहीं खोजे कहीं, किस विद्य लागे हाथ।
एक पलक में पाईए, भेदी लिजै साथ।

***एक समय एक व्यक्ति की अचानक मृत्यु हो गई। उसने बहुत सारा धन जमीन में दबा रखा था। उस का विवरण एक बही(पैड) में लिखा था जो सांकेतिक था। उस व्यक्ति ने अपने मकान के एक कोने में मन्दिर बनवा रखा था। बही में लिखा था चाँदनी चौदस रात्रि के बारह बजे मन्दिर के गुमज में सर्व धन दबा रखा है। लड़कों ने रात्री में मन्दिर का गुमज फोड़ा। उसमें कुछ नहीं पाया। उनके पिता का एक दोस्त दूसरे गांव में रहता था। बच्चों ने उसको सर्व विवरण बताया तथा कहा कि पिता जी ने झूठ लिखा है। मन्दिर के गुमज में धन नहीं मिला। पिता जी के दोस्त ने उस लेख को पढ़ा तथा कहा कि आप मन्दिर के गुमज का पुनर् निर्माण् करवाएं। मन्दिर के गुमज का पुनर् निर्माण होने के पश्चात् चांदनी चौदस (शुद्धि चतुर्दशी) को रात्रि के बारह बजे जहां पर गुमज की छाया थी उस स्थान को खोदा गया तो सर्व धन मिल गया।***

***अपने सद्ग्रन्थों में प्रभु ज्ञान का अपार धन छुपा है जो सांकेतिक है। वह पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) के बिना किसी को नहीं मिला। इसीलिए राधास्वामी तथा धन-धन सतगुरू वाले पंथों के सन्तों ने श्रद्धालुओं को भ्रमित कर दिया कि वेद तथा गीता आदि शास्त्र तो व्यर्थ हैं। कबीर परमेश्वर तो कहते हैं :-***

वेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहीं।

***भावार्थ है कि वेद तथा गीता जी व कुर्आन झूठे नहीं हैं। जो इन्हें समझ नहीं सके वे अज्ञानी हैं। राधास्वामी तथा धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा वाले पंथों के सन्त जी कहते हैं कि गीता व वेदों में पूर्ण परमात्मा का ज्ञान नहीं है। स्वयं लोक वेद(दंत कथाओं) के आधार पर ढेर सारी पुस्तकें रच कर गलत ज्ञान प्रचार कर डाला। अब श्रद्धालुओं को शास्त्रों का ज्ञान समझाना कठिन हो रहा है। वर्तमान में मुझ दास को पूर्ण परमात्मा ने आप सर्व प्रभु प्रेमियों को छुपा धन बताने भेजा है। कृप्या अविलम्ब प्राप्त करें। वर्तमान में दो अक्षर से बने ''सतनाम'' का तथा एक अक्षर ''सारनाम'' का केवल मुझ दास (रामपाल दास) ही को दान करने का अधिकार पूज्य गुरूदेव तथा परमात्मा कबीर साहेब ने स्वयं प्रदान किया है। मुझ दास से विमुख एक-दो पापात्माऐं तीनों मंत्रों को प्राप्त करके स्वयंभू गुरू बन कर नाम दान करने लगे हैं। वे अधिकारी नहीं। उन्हें भक्त समाज के पक्के दुश्मन जानना। न तो वे स्वयं पार हो सकते हैं तथा न ही उनसे उपदेश प्राप्त भक्तजन पार हो सकते हैं। ऐसे ही लालची व्यक्तियों ने***

*परमात्मा कबीर जी के साथ भी धोखा किया था जो अभी तक तत्वज्ञान समझने में बाधक सिद्ध हो रहा है। उनके तो दर्शन करना भी पाप है। जिनके विषय में ''परमेश्वर का सार संदेश'' पुस्तक के अध्याय पन्द्रह में ''शंका समाधान विषय'' में विस्तृत वर्णन है। एक समय में सन्त एक ही होता है वह पूरे विश्व को नाम देकर पार कर सकता है। जैसे परमपूज्य कबीर परमेश्वर जी काशी में आए थे उस समय पूरे विश्व में अकेले ही नाम दान करते थे। उनके चौसठ लाख शिष्य सर्व धर्मों के हुए थे। अपने रहते उन्होंने कोई उत्तराधिकारी नहीं बनाया था। इसलिए नकली संतों से सावधान रहें।*

*किस्त संख्या चार तथा किस्त संख्या छः के प्रमाणों से आपजी को स्पष्ट हुआ कि पूर्ण संत की क्या पहचान है ?*

''कैसे मिले भगवान?''

*शेष अगले अंक में ----------------*

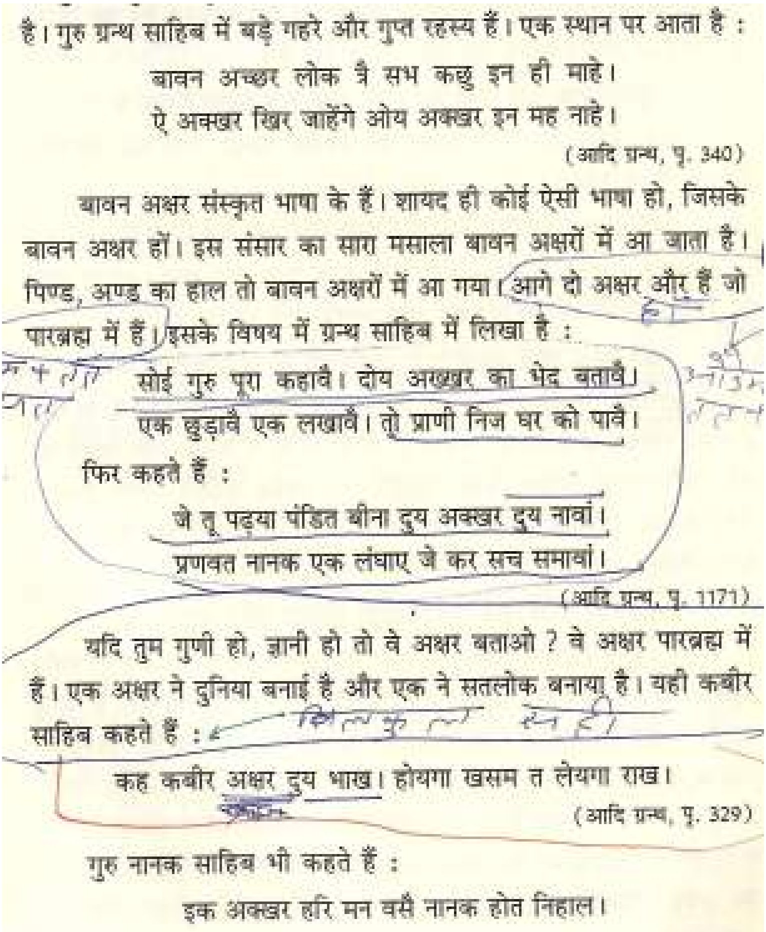

है। गुरु ग्रन्थ साहिब में बड़े गहरे और गुप्त रहस्य हैं। एक स्थान पर आता है :

बावन अच्छर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहे।
ऐ अक्खर खिर जाहिंगे ओय अक्खर इन मह नाहे।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 340)

बावन अक्षर संस्कृत भाषा के हैं। शायद ही कोई ऐसी भाषा हो, जिसके बावन अक्षर हों। इस संसार का सारा मसाला बावन अक्षरों में आ जाता है। पिण्ड, अण्ड का हाल तो बावन अक्षरों में आ गया। आगे दो अक्षर और हैं जो पारब्रह्म में हैं। इसके विषय में ग्रन्थ साहिब में लिखा है :

सोई गुरु पूरा कहावै। दोय अक्खर का भेद बतावै।
एक छुड़ावै एक लखावै। तो प्राणी निज घर को पावै।

फिर कहते हैं :

जे तू पढ़या पंडित बीना दुय अक्खर दुय नावां।
प्रणवत नानक एक लंघाए जे कर सच समावां।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 1171)

यदि तुम गुणी हो, ज्ञानी हो तो वे अक्षर बताओ ? वे अक्षर पारब्रह्म में हैं। एक अक्षर ने दुनिया बनाई है और एक ने सतलोक बनाया है। यही कबीर साहिब कहते हैं :

कह कबीर अक्षर दुय भाख। होयगा खसम त लेयगा राख।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 329)

गुरु नानक साहिब भी कहते हैं :

इक अक्खर हरि मन वसै नानक होत निहाल।

*(पुस्तक 'संतमत प्रकाश' भाग-4 पृष्ठ 261 से फोटो कॉपी)*

262 सन्तमत प्रकाश

एक स्थान पर फिर गुरु साहिब कहते हैं :

बेद कतेब सिमृत सभ सासत इन पढ़या मुकत न होई।
एक अक्खर जो गुरमुख जापै तिस की निरमल सोई।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 747)

वह अक्षर आपके अन्दर है और पारब्रह्म में जाकर मिलेगा। यह धर्म हमारा धर्म नहीं, यह जाति हमारी जाति नहीं। यह देश हमारा देश नहीं। हमारा देश सचखण्ड, हमारी जाति सतनाम और हमारा धर्म सत्पुरुष है यह पराया देश छोड़कर आत्मा अपने उस देश को जा रही है।

**सूरत साफ़ उड़ी ऊँचे को। छूट गया सब महल पुराना।।**

अब आत्मा इस पुराने महल को, जिसमें लाखों जन्म रही, छोड़कर सतनाम में जा रही है।

**आगे चढ़ चढ़ अधर समानी। शब्द शब्द का मर्म पिछाना।।**

अन्दर शब्द के दरजे हैं–ओम शब्द, सोहं शब्द, सत शब्द। आत्मा दरजे के अनुसार अपने असली मकसद भाव असली देश को जा रही है।

*(पुस्तक 'संतमत प्रकाश' भाग-4 पृष्ठ 262 से फोटो कॉपी)*

## ''कैसे मिले भगवान?''

*सावधान :- राधास्वामी पंथ में पाँच नाम देते हैं। ज्योति निरंजन, ओंकार, रंरंकार, सोहं और सतनाम, इसी पंथ की शाखा धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा सिरसा वाले अब तीन नाम 1. सतपुरूष 2. अकाल मूर्ति 3. शब्द स्वरूपी राम तथा जगमालवाली वाले ''धन-धन सतगुरू तेरा ही आसरा'' एक नाम देते हैं, पहले पांच नाम ही दान किए जाते थे। दिनोंद (जिला भिवानी) हरियाणा में श्री ताराचन्द जी वाला पंथ एक ''राधा स्वामी'' नाम देता है इसी को सारनाम बताता है*

*श्री आसाराम जी (अहमदाबाद वाला) सोहं मन्त्र को दो भागों में स्मरण करने को कहता है तथा कई अन्य मन्त्र भी देता है। जिन में से रूची अनुसार साधक को स्वयं चुनना होता है।*

*1. गायत्री मन्त्र (ओम् भूर्भुवः ------) 2. ओम् नमः शिवाय 3. ओम् नमः भगवते वासुदेवाय 4.------*

*श्री सुधांशु जी (बकरवाला दिल्ली वाले) हरि ओम्-तत्-सत् का जाप मन्त्र देता है। श्री शिव भगवान को अजन्मा-अजर-अमर अर्थात् मृत्युंज्य तथा सर्वेश्वर आदि बताते हैं। जब कि श्री देवी महापुराण तथा शिव महापुराण में श्री शिव का जन्म मृत्यु लिखा है।*

*''निरंकारी '' पंथ वाले एक नाम'' तू ही एक निरंकार। मैं तेरी शरण मुझे बख्स लो'' देते हैं तथा परमात्मा को निराकार बताते हैं। जबकि परमात्मा सशरीर है।*

*उपरोक्त मन्त्र शास्त्रविरूद्ध होने से मोक्ष दायक नहीं हैं।*

*''हंसा देश पंथ''(श्री सतपाल जी महाराज पंजाबी बाग दिल्ली वाला तथा श्री प्रेम रावत उर्फ बालयोगेश्वर जी महरौली दिल्ली वाला) हंस का जाप दो हिस्से करके जाप करने को देते हैं। इसको उल्टा करके सहं करके सोहं को भी दो हिस्से करके जाप करने को देते है तथा आँख बन्द करके हठ योग क्रियाऐं देते हैं जो शास्त्रविरूद्ध हैं मोक्ष दायक नहीं हैं।*

*भावार्थ है कि ओम्-तत्(सांकेतिक) तथा सत्(सांकेतिक) के अतिरिक्त सर्व साधना शास्त्र विरूद्ध अर्थात् मनमाना आचरण (पूजा) है। जो पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक (मन्त्र) 23 में व्यर्थ कहा है तथा (श्लोक) मन्त्र 24 में कहा है कि परमात्मा की भक्ति के लिए शास्त्रों(वेदों) को ही आधार मानें।*

*उपरोक्त साधना शास्त्र विरूद्ध है, मोक्ष दायक नहीं है।*

**कृप्या पढ़ें मोक्ष दायक साधना :-**

*सर्वप्रथम उपदेश प्राप्त करने वाले को मानव शरीर में बने कमलों को खोलने का मन्त्र जाप दिया जाएगा। जिससे आपकी कुण्डलनी शक्ति जागृत हो जाएगी अर्थात् कमल खिल जाएगें। आप का त्रिकुटी तक जाने का रास्ता साफ हो जाएगा। मानव*

*शरीर में कमल (चक्र) बने हैं। 1. मूल कमल में देव (स्वामी) गणेश जी का कार्यालय है, 2. स्वाद कमल में भगवान (स्वामी) ब्रह्मा जी का कार्यालय है, 3.नाभि कमल में भगवान(स्वामी) विष्णु जी का कार्यालय है, 4. हृदय कमल में भगवान(स्वामी) शिव जी का कार्यालय है, 5. कण्ठ कमल में शक्ति दुर्गा का कार्यालय है। इन पांचों शक्तियों के पांच नाम (मंत्र) जाप के हैं जो आपको प्रथम दिए जाएगें। जिनके जाप से आपको आगे जाने का रास्ता मिलेगा अर्थात् आपकी कुण्डलनी शक्ति जागृत हो जाएगी। दूसरे शब्दों में आपके कमल खुल जाएंगे।(योगीजनों ने इन्हीं कमलों को हठ योग से खोलने का व्यर्थ प्रयत्न किया।) तब आप त्रिकुटी पर पहुंच पाओगे। यह तो प्राथमिक पढ़ाई है जो पांच नामों की है। केवल बात बनाने से कि हम तो सीधे त्रिकुटी में जाते हैं, कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा।*

*जैसे हम विदेश(काल लोक) में आए हैं। स्वदेश(सतलोक) जाना है। हमारे ऊपर विदेश के कार्यालयों (बिजली-पानी-टेलिफोन आदि) का बिल बकाया है तथा कुछ ऋण भी शेष है। प्रथम ऋण मुक्त प्रमाण पत्र लेने होंगे। फिर आप त्रिकुटी अर्न्तराष्ट्रीय हवाई अड्डे (इन्टरनैशल एयर पोर्ट) पर पहुंच सकते हैं अन्यथा नहीं। आप यहां विदेश (काल के लोक) में ऋणी हो गए हैं। आप पर बहुत कर्जा है। जिस कारण से आपकी सर्व सुविधाएं छीनी जा चुकी हैं। जैसे बिजली का बिल न भरने से कनेक्शन कट जाता है। लाभ समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार आपके सर्व कार्य उल्ट-पुल्ट हो गए हैं। सतगुरू आपका जमानती (गारन्टर) बनेगा तथा श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी आदि से आपके सर्व लाभ पुनर् चालु कराएगा। फिर उपरोक्त पांचों शक्तियों के नाम जाप की मजदूरी करके आपने ऋण मुक्त भी होना है तथा जब तक इस विदेश(काल लोक) में रहोगे सांसारिक सुविधाएं भी प्राप्त करते रहना है। सतनाम दो अक्षर (मन्त्र) के जाप (ओम् + तत्) में एक ओम् (ऊँ) अक्षर है। इस ओम् नाम के जाप की कमाई से ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों का ऋण चुकाना है। हम पहले ओम् नाम की कमाई स्वर्ग-महास्वर्ग में खर्च करते रहे। अब हम ओम् (ऊँ) मंत्र के जाप की पूजा ब्रह्म (काल) को दे देंगे। यह हमें छोड़ देगा। भावार्थ है कि सतनाम के इस एक अक्षर ''ओम्'' के जाप की कमाई साधक को काल जाल से छुड़ाएगी। आप जी ने श्री नानक जी की वाणी में पढ़ा कि पूरा सतगुरू दो अक्षर का भेद बताएगा एक अक्षर छुड़ाएगा दूसरा तत् मन्त्र (जो सांकेतिक है) प्रभु को भंवर गुफा से पारदर्शक पर्त के पार सतलोक में सतपुरूष को लखाएगा अर्थात् दर्शन कराएगा।*

*यह एक अक्षर ओम् ही ब्रह्म अर्थात् काल का वास्तविक जाप का मन्त्र है का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में है कि ''ओम् इति एक अक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्। य प्रयाति त्यजन देहम् सः याति परमाम् गतिम्।''(8/13) शब्दार्थ :- काल ब्रह्म ने कहा है कि जो मुझ ब्रह्म के एक अक्षर ओम्(ॐ) का जाप*

*अन्तिम स्वांस तक करता है वह मेरे वाली भक्ति का पूर्ण लाभ प्राप्त करता है।*

*गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में गीता ज्ञान दाता (काल-ब्रह्म) ने कहा है कि यदि तूने उस परमात्मा की शरण में जाना है तो (सर्व धर्मान् परित्यज्य माम्) मेरे स्तर की सर्व धार्मिक पूजाऐं अर्थात् ओम् नाम का जाप यज्ञ आदि मुझमें छोड़ कर (एकम् शरणम्) उस एक सर्वशक्तिमान की शरण में (व्रज) जा(अहम् त्वा सर्व पापेभ्यः मोक्षयिष्यामि मा शुचः) मैं तुझे सर्व पापों से छुड़ा दूंगा, तू चिंता मत कर। जब हम शरीर त्याग कर सतलोक को प्रस्थान करेंगे तब काल(ब्रह्म) को ओम् (ऊँ) नाम की कमाई त्रिकुटी पर सौंप देंगे। यह काल हमें ऋण मुक्त कर देगा (पवित्र गीता जी का हिन्दी अनुवाद कर्ताओं ने गलत अनुवाद किया है। गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में व्रज का अर्थ आना किया है जबकि व्रज का अर्थ जाना होता है) फिर हम तत् मन्त्र(जो सांकेतिक है) के जाप की कमाई परब्रह्म को दे देगें। वह हमें अपने सात शंख ब्रह्मण्डों से पार करके भंवर गुफा तक पहुंचा देगा। वहां पर पूर्ण परमात्मा को हम केवल देख(लख) सकते हैं। जैसे शीशे के पार वस्तु को देखा जा सकता है प्राप्त नहीं किया जा सकता। तत् पश्चात सारनाम के जाप की कमाई भंवर गुफा से पार करके सतलोक में स्थाई स्थान प्राप्त कराएगी। फिर अपना जन्म मृत्यु कभी नहीं होगा। सतपुरुष (पूर्ण परमात्मा) की प्राप्ति होगी। सतलोक में सर्व आत्माओं का साकार अभौतिक शरीर है जो एक नूर तत्व से बना है पूर्ण परमात्मा का भी (अकायम् अश्नाविरम्) अभौतिक नूरी शरीर है परन्तु आत्मा और पूर्ण परमात्मा के शरीर के प्रकाश का अत्यधिक अन्तर है ऊपर के अन्य(अलख, अगम, अनामय) लोकों में जाने की भक्ति वहां सतलोक में प्रारम्भ होगी। वहां सतलोक में कोई कष्ट नहीं है। इसलिए ऊपर के लोकों की प्राप्ति की ईच्छा कोई बिरला ही करता है।*

*तत्व ज्ञान के अभाव से सर्व पवित्र हिन्दु समाज तथा राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरु सच्चा-सौदा तथा अन्य पंथों के पवित्र आत्मा संत तथा श्रद्धालु अपना जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। सर्व से नम्र निवेदन है कि वह वास्तविक दो अक्षर(ओम् + तत् सांकेतिक) का मंत्र जाप तथा एक अक्षर सारनाम मुझ दास (जगत् गुरू तत्वदर्शी सन्त रामपाल दास जी महाराज) के पास है तथा इस दो मंत्र के योग से बने मंत्र(जिसे सतनाम कहते हैं) की कमाई पूरी होने के पश्चात आपको सत्शब्द अर्थात सारनाम जो एक अक्षर का है दिया जाएगा। फिर परमात्मा प्राप्ति होगी।*

*उदाहरण :- जैसे जल को प्राप्त करने के लिए नल लगाना होता है। दो अक्षर के नाम को बोकी लगाना जानो। ओम + तत् (जिसमें तत् मंत्र अन्य है जो साधक को बताया जाएगा) का जाप स्वांस-उस्वांस से किया जाता है।*

***कबीर साहेब जी कहते हैं कि*** ''स्वांस–उस्वांस में जाप जपो, व्यर्था स्वांस न खो। न जाने इस स्वांस को आवन हो के न हो।।''

*दो अक्षर से बने सतनाम से स्वांस-उस्वांस की बोकी लगाई जाएगी जो पाईप को जल तक पहुंचाएगी। फिर सारनाम रूपी हैंड पंप की मशीन लगाई जाएगी। उस सारनाम का भी स्मरण करना होता है। जैसे हैंड पम्प की हत्थी को हिला-हिला कर गति दी जाती है तब पानी प्राप्त होता है। इसी प्रकार सारनाम फिर एक ही रह जाता है उसका स्मरण करने से सतपुरूष(अविनाशी परमात्मा) की प्राप्ति होती है। पवित्र गीता जी के अध्याय 17 श्लोक 23 में यह भी स्पष्ट किया है कि ओम्-तत्-सत् मंत्र को तीन विधि से स्मरण किया जाता है। यह विधि केवल पूर्ण सन्त रामपाल दास जी महाराज के पास है जिसमें तीनों मंत्रों ओम् + तत् (सतनाम) है तथा सत्शब्द(जो सारनाम) है को तीन प्रकार से ही स्मरण करना होता है।*

*कृप्या देखें तथा पढें इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 44 पर फोटो कॉपी ''सन्तमत प्रकाश'' भाग 4 पृष्ठ 262 में जिसमें तीनों मन्त्रों का स्पष्ट वर्णन भी किया है कि एक ओम् शब्द दूसरा सोहं शब्द तीसरा सतशब्द। राधास्वामी पंथ वालों को दो अक्षर से बने सतनाम का तथा आदि नाम (जिसे सारनाम भी कहते हैं) का ज्ञान नहीं वे पाँचों नाम काल के देते हैं। जिसके विषय में तुलसी साहेब कृत घट रामायाण प्रथम भाग पृष्ठ-27 पर लिखा है कि पाँचों नाम काल के हैं इन पाँचों से भिन्न सतनाम तथा आदि नाम अर्थात् सारनाम है। जबकी आदि ग्रन्थ साहेब तथा कबीर जी की वाणी का प्रमाण बताया है वह सही है कि पूरा सन्त दो अक्षर का नाम जाप(ओम्+तत्) बताएगा। वही पूरा सन्त होगा।*

***श्री नानक साहेब जी की वाणी में स्पष्ट है कि*** “इक अख्खर हरि मन वसै नानक होत निहाल'' ***फिर ग्रन्थ साहेब के पृष्ठ 747 की वाणी का प्रमाण लिखा है कि*** ''एक अख्खर जो गुरू मुख जापै तिस की निरमल होई'' ।

*उपरोक्त वाणी स्पष्ट कर रही है कि एक अक्षर(जो सारनाम है) है वह भी गुरू मुख(पूर्ण सन्त के शिष्य) को जाप करना होता है। राधास्वामी पंथ वाले इसे वाणी को अपनी शास्त्रविरूद्ध साधना से जोड़ते हैं कि एक धुन अन्दर सुनने के विषय में कहा है ''एक अख्खर का जाप करै'' विचार करें धुन का जाप नहीं होता। वह तो केवल सुनी जाती है। जाप का संकेत एक मन्त्र सारनाम की ओर न की धुन सुनने के लिए है। पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261,262 की फोटो कापी में श्री सावन सिंह जी ने कहा है कि दो अक्षर पारब्रह्म में हैं। फिर कहा है कि वह एक अक्षर भी पारब्रह्म में मिलेगा। आप स्वयं विचार करें राधास्वामी पंथ के सन्त ज्ञानी है या अज्ञानी।*

*परंतु पूर्ण परमात्मा को प्राप्ति की विधि स्वयं पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने बताई है जो वर्तमान में पूरे विश्व में केवल पूर्ण सन्त रामपाल दास जी महाराज को प्राप्त है। अविलम्ब तथा निःशुल्क प्राप्त करें। यदि कोई उपरोक्त विधि को मुझ दास (सन्त रामपाल दास जी महाराज) से प्राप्त करके स्वयंभू गुरू बन कर नामदान करता है तो उसे अनाधिकारी जान कर सावधान रहें। वह अपना तथा भोले*

*श्रद्धालुओं का जीवन नाशक है। ऐसे-2 स्वयंभू नकली सन्तों ने प्रभु मार्ग को बिगाड़ रखा है। जिस समय भक्त समाज को ज्ञान हो जाएगा कि ऐसे नकली गुरू मानव जीवन के लिए कितने घातक हैं तब इन नकली गुरूओं को छुपने को स्थान नहीं मिलेगा। यह जागृति अति शीघ्र आने वाली है। उन्हीं के शिष्य इन सर्व शास्त्रविरूद्ध साधना बताने वाले गुरूओं तथा स्वयंभू गुरूओं को फाटक में रोकेगें ताकि ये समाज को गुमराह न कर सकें। सर्व भक्त समाज से प्रार्थना है कि झूठे तथा कपटी गुरूओं को त्याग कर मुझ दास (सन्त रामपाल दास जी महाराज) से सत्य साधना निःशुल्क प्राप्त करें।*

*कुछेक श्रद्धालु कहते हैं कि क्या गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? उन श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जैसे एक डाक्टर(वैद्य) से उपचार नहीं होता है तो दूसरा डाक्टर बदलने में लाभ होता है हानि नहीं होती ठीक इसी प्रकार गुरू को जानो। इसलिए शास्त्रविधि विरूद्ध ज्ञान वाले गुरू को त्यागकर पूर्ण गुरू धारण करना हितकर है। पाप नहीं अपितु पुण्य है। कुछ श्रद्धालु संकोच करते हैं कि हमारी तीस वर्ष की साधना का क्या होगा? अब कैसे छोड़ें? उन श्रद्धालुओं से निवेदन हैं कि विचार करें कि आपको किसी शहर में जाना है, तीस किलोमीटर जाने के बाद पता चले कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं, तो तुरंत मुड़ जाना चाहिए। नहीं तो मंजिल दूर होती जाएगी। फिर भी कोई कहे कि हम तो तीस किलोमीटर सफर तय कर चुके हैं, अब कैसे छोड़ें इस रास्ते को? यह विचार तो बालक के या शराबी के हो सकते हैं। समझदार तो तुरंत मुड़ जाएगा। इसलिए उस साधना को तुरंत त्यागकर वास्तविक शास्त्रविधि अनुसार साधना ग्रहण करें।*

*रामपाल दास*

❑❑❑

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

## (प्रथम किस्त)

(8 मार्च 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

*श्री कृष्ण सिंह लाठर ट्रस्टी ने बताया कि सतलोक आश्रम करौंथा जि. रोहतक (हरियाणा) में सात दिवसीय सत्संग 6 मार्च को प्रारम्भ हुआ। जो 12 मार्च 2006 तक चलेगा। काशी में 120 वर्ष लीला करके सन् 1518 में मगहर स्थान से सशरीर सतलोक जाने के 209 वर्ष बाद इस दिन (फाल्गुन शुद्धी द्वादशी) को पूर्ण परमात्मा सतपुरूष कर्विदेव (कबीर परमेश्वर) सतलोक से चलकर सशरीर गाँव छुड़ानी जि. झज्जर (हरियाणा) में सन् 1727 में दिन के सुबह 10 बजे खेतों में प्रकट हुए थे। जहाँ पर दस वर्षीय बालक गरीबदास साहेब जी गायों को चरा रहे थे। कई अन्य बड़े ग्वाले भी थे। एक कंवारी गाय का दूध अपने आर्शीवाद से निकाला। उसे स्वयं भी पीया तथा बालक गरीब दास जी को भी पिलाया। नाम दान करके उसकी आत्मा को सतलोक ले गए। पीछे से बालक गरीबदास जी को मृत जानकर अन्तिम संस्कार के लिए चिता पर लिटा लिया गया था। लगभग आठ घण्टे के बाद गरीबदास जी की आत्मा को सर्व ब्रह्मण्डों तथा सतलोक का दर्शन करा कर वापिस छोड़ दिया। चिता पर से इकलौते पुत्र को जीवित देख कर माता-पिता की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। परन्तु आदरणीय गरीबदास जी महाराज पहले वाली भाषा नहीं बोल रहे थे। वे आँखों देखा सतलोक का हाल अमृतवाणी (दोहों-लोकोक्तियों) के द्वारा बोलने लगे। जो आज सद्ग्रन्थ साहेब नाम से लिपि बद्ध है। यही ज्ञान परम पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की अमृतवाणी में है। इस दिन (फाल्गुन मास शुद्धी द्वादशी) को प्रति वर्ष आदरणीय गरीबदास जी के बोध दिवस के उपलक्ष में सतलोक आश्रम करौंथा में मनाया जाता है। सत्संग में उपरोक्त जानकारी सन्त रामपाल जी महाराज ने सर्व संगत को दी तथा भक्तों की शंकाओं का समाधान करते हुए राधास्वामी पंथ की पुस्तकों को पर्दे पर प्रोजैक्टर द्वारा सर्व को दिखाया। सर्व तथ्यों को आँखों देख कर सर्व संगत ने दांतों तले ऊंगली दबाई। राधास्वामी पंथ से जुड़े सैकड़ों भक्तों ने सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त किया।*

*कुछ श्रद्धालुओं ने शंका व्यक्त की कि क्या गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? सन्त रामपाल जी महाराज ने कहा : जैसे एक वैद्य (डाक्टर) से उपचार नहीं होता तो दूसरा बदल लेना हितकर होता है। इसी प्रकार सर्व सृष्टि को जन्म-मृत्यु का रोग लगा है। गुरू बदलने से लाभ होता है हानि नहीं होती।*

''राधा स्वामी पंथ'' का मूल सिद्धांत:-

*परमात्मा निराकार है। गुरू रूप में प्रकट सन्त ही प्रभु का साकार रूप है। सतलोक(सच्चखण्ड) में केवल प्रकाश ही प्रकाश है। अभ्यासी को शरीर(घट) में जो धुन सुन रही है तथा जो प्रकाश दिखाई देता है यही प्रभु प्राप्ति है। पाँच नामों के जाप से पाँच मण्डलों में साधक पहुँच जाता है। नाम इस प्रकार है- ज्योति निरंजन, ओंकार, ररंकार, सोहं तथा सतनाम। इन नामों के जाप से शब्द खुलता है। धुन सुनाई देती है। जिस के सहारे आत्मा सतलोक में जाकर निराकार सतपुरूष में लीन हो जाती है। जैसे समुन्द्र में बूंद मिल जाती है। सर्व उपलब्धी भी शरीर अर्थात् पिण्ड (घट) में ही मानते हैं।*

"राधा स्वामी पंथ की संक्षिप्त जानकारी''

*राधा स्वामी पंथ का प्रवर्तक श्री हजूर शिवदयाल जी महाराज को माना जाता है जिनका जन्म आगरा शहर की मुहल्ला पन्ना गली में श्री सेठ दिलवाली सिंह जी के घर माता महामाया जी की पवित्र कोख से 25 अगस्त 1818 (सम्वत् 1875 भादव बदी अष्टमी के दिन) को हुआ। स्वामी शिवदयाल जी महाराज के माता-पिता जी श्री तुलसी साहेब हाथरस वाले सन्त जी के भक्त थे। जो उनके घर पर आते रहते थे। जो उस तुलसी दास गोसांई वाली आत्मा थी जिसने पहले श्री रामचरित्र मानस अर्थात रामायण को लिखा था(यह विवरण घट रामायण भाग पहला के पहले लिखे इनके जीवन चरित्र में है) श्री तुलसी साहेब जी हाथरस वाले का कोई गुरू नहीं था।*

*इसी तुलसी साहेब हाथरस वाले के वचन श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी पंथ के प्रथम सन्त) सुना करते थे। परन्तु श्री शिवदयाल जी ने भी कोई गुरू धारण नहीं किया था। {उपरोक्त विवरण पुस्तक''सार वचन राधा स्वामी'' नजम यानि छन्द-बन्द भूमिका पृष्ठ क-ख पर तथा पुस्तक ''सार वचन राधास्वामी (वार्तिक) भूमिका पृष्ठ I-II1 पर है।}*

*श्री शिवदयाल जी स्वयं ही छः वर्ष की आयु में हठयोग क्रिया करके, बन्द कमरे में सुरत-शब्द का अभ्यास किया करते थे। दो-दो, तीन-तीन दिन तक बाहर नहीं निकलते थे। इस प्रकार लगभग पंद्रह वर्ष तक करते रहे। संवत् 1917 (सन् 1860) को 42 वर्ष की आयु में पहला सत्संग किया। श्री शिवदयाल जी का विवाह भक्तमति नारायणी देवी से हुआ जिसे बाद में ''राधा'' कहने लगे थे।*

*प्रमाण:- पुस्तक ''उपदेश राधा स्वामी(प्रकाशक- एस. एल. सौंधी, सैक्रेटरी राधा स्वामी सत्संग ब्यास जि. अमृतसर, प्रांत पंजाब) पृष्ठ 30-31 तथा पुस्तक''जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह'' लेखक संत कृपाल सिंह पृष्ठ 56 पर है।*

*''वचन आखिरी'' जो संवत् 1935 (1878) को शरीर छोड़ते समय श्री शिवदयाल जी ने अपने मुख कमल से उच्चारण किए।*

*वचन आखिरी सं. 5 में लिखा है कि अन्त समय में सर्व संगत से कहा था कि मेरे बाद ''राधा जी'' (नारायणी देवी) को मेरे समान समझना (राधा श्री शिवदयाल जी की पत्नी थी)*

*वचन आखिरी सं. 9-10 में कहा है कि गृहस्थी औरतों के लिए राधा जी मेरा उतराधिकारी है। वे राधा जी के दर्शन व पूजा करें। साधुओं के लिए सनमुख दास जी को ठहराया।*

*वचन आखिरी सं. 12 में अपने भाई प्रताप सिंह से कहा है कि आप बाग में सत्संग करो और कराओ।*

*वचन आखिरी सं. 14 में कहा है कि मेरा मत तो सतनाम और अनामी का था और राधा स्वामी मत तो सालगराम का चलाया हुआ है। मेरा है ही नहीं, इसे भी चलने देना। सतसंग जारी रहे और सतसंग पहले से बढ़कर होगा।*

*उपरोक्त विवरण पुस्तक ''सार वचन राधास्वामी'' नजम यानि छन्द-बन्द की भूमिका पृष्ठ ा से ढ तक लिखा है।*

*विशेष विचार:- उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि (1) श्री शिवदयाल जी का कोई गुरू नहीं था।*

*(2) श्री शिवदयाल जी मनमाना आचरण (पूजा) करते थे। हठ योग द्वारा बन्द कमरे में दो-तीन दिन तक बैठे रहते थे। जो सन्त मत के विरूद्ध है, क्योंकि सन्त मत तो सहज मार्ग है। जो साधना श्री शिवदयाल जी करते थे उसे जनसाधारण नहीं कर सकता।*

*(3) उपरोक्त विवरण वचन आखिरी से यह भी प्रमाणित हुआ कि श्री शिवदयाल जी ने श्री जयमल सिंह जी महाराज (जिन्होंने राधास्वामी व्यास डेरा नाम से पंथ पंजाब में चलाया) को नाम दान करने का आदेश नहीं दिया, न श्री सालिगराम जी को नामदान करने का आदेश दिया। यदि नाम दान करने का आदेश दिया होता तो अवश्य आखिरी वचनों में वर्णन होता। राधास्वामी पंथ की पुस्तकों में लिखा है कि वक्त गुरु के बिना जीव मुक्त नहीं हो सकता। कृप्या विचार करें कि श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) तथा श्री जयमल सिंह जी (डेरा बाबा व्यास) तथा उनके अनुयाईयों श्री सावन सिंह जी तथा श्री कृपाल सिंह जी तथा सच्चा सौदा सिरसा के प्रवर्त्तक श्री खेमामल जी उर्फ बिलोचिस्तानी शाह मस्ताना जी जो श्री सावन सिंह जी राधास्वामी के शिष्य हैं। जिन्हें श्री सावन सिंह जी ने कोई नामदान करने का आदेश नहीं दिया। क्या होगा, क्योंकि मुखिया (श्री शिवयाल जी) ही वक्त गुरु रहित थे ?*

*(4) राधा स्वामी पंथ श्री शिवदयाल जी का चलाया हुआ नहीं है:-*

*वचन आखिरी सं. 14 में स्पष्ट है कि स्वामी जी महाराज ने कहा है कि मेरा मत तो सतनाम और अनामी का है। राधा स्वामी पंथ सालगराम जी का चलाया*

*हुआ है। श्री शिवदयाल ने स्पष्ट संकेत किया है'' बुद्धिमान व्यक्ति को संकेत ही होता है।''*

*शंका (1) एक श्रद्धालु ने शंका व्यक्त की :- वचन आखिरी सं. 14 में यह भी तो लिखा है कि राधा स्वामी मत सालगराम का चलाया हुआ है। इसे भी चलने देना।*

*शंका समाधानः- आपके दृष्टिकोण से राधा स्वामी पंथ को चलते रहने का आदेश श्री शिवदयाल जी महाराज का है तो भी राधा स्वामी पंथ के प्रवर्तक श्री सालगराम जी हुए। जिन्होंने वर्तमान में राधा स्वामी नाम से पंथ व आश्रम बनाए हैं। वे श्री सालगराम जी के अनुसार हुए न कि श्री शिवदयाल जी के। क्योंकि श्री शिवदयाल जी ने तो कहा है कि मेरा मत तो सतनाम और अनामी का है राधास्वामी का नहीं है।*

*वास्तविकता यह है कि :- श्री शिवदयाल जी की धर्मपत्नी श्रीमति नारायणी देवी को राधा कहते थे तथा श्री शिवदयाल जी को राधा का स्वामी (पति) अर्थात राधास्वामी कहने लगे।*

*उदाहरण जैसेः- भगवान शिव जी को उमा स्वामी भी कहते हैं। उमा (पार्वती) का पति(स्वामी) होने से उमास्वामी नाम श्री शिव जी का ही बोधक है। इसी प्रकार ''राधा स्वामी'' नाम श्री शिव दयाल जी का बोधक है।*

*श्री सालगराम जी ने श्री शिवदयाल महाराज को पूर्ण परमात्मा मान कर उन्हीं की पूजा का प्रावधान कर दिया तथा नाम जाप भी राधा स्वामी ही दान करने लगा। जिसका प्रमाण पुस्तक सार वचन राधा स्वामी नजम (छन्द-बन्द) में है कि* ''राधा स्वामी नाम जो गावे सोई तरे''

*अन्य प्रमाण हैः- जिला भिवानी (हरियाणा) गांव दिनोद में श्री ताराचन्द जी महाराज ने यही नाम दान किया है।*

*प्रश्नः शंका नं. 2 :- स्वामी जी ने यह किसलिए कहा कि यह सालगराम का चलाया हुआ है। इसे भी चलने देना।*

*उत्तरः शंका समाधानः- स्वामी जी महाराज श्री शिवदयाल जी का अंतिम समय था। उन्होंने देख लिया था कि सालगराम ने मनमुखी मार्ग मेरी आज्ञा के विपरित चला दिया है। मना करने से भी नहीं मानता है। कहीं अधिक जोर देने के कारण यह किसी अन्य नाम से पंथ न चला ले। इसलिए विवश्ता में कहा कि इसे भी कुछ मत कहना, करने दो इस मनमुखी को जो करता है।*

*उदाहरणः- एक समय श्री नानक जी साहेब अपने शिष्यों के साथ गांव-गांव नगर-नगर में भ्रमण करके सत्संग कर रहे थे। एक गांव में उनको पत्थर मारे तथा अभद्र व्यवहार किया। श्री नानक साहेब ने कहा ''यहीं बसते रहो'' दूसरे गांव में उनका बहुत आदर हुआ तथा भोजन आदि का प्रबन्ध प्रेम व श्रद्धा से किया गया।*

*चलते समय श्री नानक जी ने कहा ''आप उजड़ जाओ''*

*शिष्यों ने पूछा है गुरूदेव! आपने शरारती व्यक्तियों को यहीं बसते रहने का आर्शीवाद दिया तथा नेक व्यक्तियों का उजड़ने का श्राप दे दिया, कारण क्या है?*

*श्री नानक जी ने उत्तर दिया :- जो व्यक्ति नेक नहीं हैं वे एक ही नगर में रहें तो अच्छा है। यदि कहीं अन्य स्थानों पर बसेंगे तो उन्हें भी अपने जैसा बना देगें। जो नेक व्यक्ति है वे किसी अन्य स्थान पर जाकर रहेगें तो अन्य को भी अपने जैसा नेक बनाएगें। इसलिए इनको उजड़ने को कहा है।*

*उपरोक्त उदारहण से स्पष्ट है कि संत का कहने का दृष्टिकोण कुछ अन्य ही होता है। ठीक इसी तरह श्री शिवदयाल जी ने विवश होकर कहा है कि इसे (राधा स्वामी पंथ को) भी चलने देना। नहीं तो वे नहीं कहते कि मेरा मत राधा स्वामी नहीं है मेरा मत तो सतनाम और अनामी का है।*

*प्रश्नः शंका 3 :- मैंने पुस्तक ''सन्तमत प्रकाश भाग-3'' पढ़ी है उसमें श्री सावन जी महाराज के सत्संग वचन हैं {श्री सावन सिंह जी, श्री जयमल सिंह जी महाराज के शिष्य तथा उत्तराधिकारी डेरा व्यास (पंजाब) हुए है।} पृष्ठ 76 पर लिखा है कि सतनाम या सचखण्ड चौथा लोक है। फिर पृष्ठ नं. 79 पर चार राम का विवरण करते हुए बताया है कि:-* एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम मन, तीसरा राम ब्रह्म, चौथा राम सतनाम है, यह असली राम है।

*''सार वचन वार्तिक'' नामक पुस्तक (भाग-1) जिसके प्रकाशक हैं एस. एल. सौंधी, सैक्रेटरी, राधा स्वामी व्यास डेरा बाबा जयमल सिंह, जि. अमृतसर(पंजाब) है। पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि ''सार वचन वार्तिक'' हजूर स्वामी जी महाराज (श्री शिवदयाल जी)के वचनों का संग्रह जो बाद में पुस्तक के रूप में छपवाया गया तथा सन् 1902 में बाबा जयमल सिंह द्वारा गुरुमुखी लीपी (पंजाबी) में छपवाया।*

*पृष्ठ सं. 3 पर वचन सं. 4 में लिखा है:- (भाग-1) (ज्यों का त्यों लेख)*

(4) अब समझना चाहिए की राधा स्वामी पद सबसे ऊंचा मुकाम है और यही नाम कुल मालिक और सच्चे साहिब, और सच्चे खुदा का है और इस मुकाम से दो स्थान नीचे सतनाम का मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सारशब्द और सतशब्द और सतनाम और सतपुरूष करके ब्यान किया है।

*पृष्ठ 5 पर वचन सं. 7 में लिखा है (ज्यों का त्यों लेख)*

ऊपर जिकर हुआ है कि सतनाम स्थान जिसको सतलोक और सच्चखण्ड भी कहते हैं।*(लेख समाप्त) फिर हमारे को पाँच नाम (ज्योति निरंजन, ओंकार, ररंकार, सोहं तथा सतनाम) दिए हैं। इनमें मन्त्र रूप से सतनाम जाप करने को भी दिया है। मैं बीस वर्ष से इस राधा स्वामी पंथ से जुड़ा हूँ। मैं यह नहीं समझ पाया हूँ कि सतनाम क्या चीज है? सतनाम स्थान है या भगवान है या मन्त्र का*

*जाप है या कोई पशु पक्षी है। ऊपर के वचन सं. 7 में लिखा है- सतनाम का स्थान जिसको सतलोक और सच्चखण्ड भी कहते हैं। फिर वचन 4 में लिखा है सारशब्द-सतशब्द-सतपुरूष और सतनाम भी इसी को कहते हैं। फिर वचन सं. 4 में ही एक बार तो लिखा है राधास्वामी पद सबसे ऊंचा मुकाम (स्थान) है। फिर तुरन्त ही लिखा है कि यह नाम सच्चे मालिक का है। जैसे कोई कहे कि दिल्ली बहुत अच्छा स्थान है। इसी को प्रधानमन्त्री भी कहते हैं। इस तरह की दो तरफा बातें अब समझ में आने लगी हैं। जब आप के द्वारा लिखी पुस्तकें ''परमेश्वर का सार संदेश'' तथा ''गहरी नजर गीता में'' तथा आप द्वारा समाचार पत्रों में लिखे लेखों को पढ़कर ध्यान से राधास्वामी पंथ की पुस्तकों को फिर पढ़ा जो पृष्ठ आपने लिखे थे। उन का मिलान किया वे अब समझ में आए। सचमुच हमारे साथ धोखा हो रहा है? नोट :- कृप्या पाठक वृन्द पढ़ें फोटो कापी उपरोक्त पुस्तकों से वचन सं. 4 तथा 7 इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 57-58 पर तथा स्वयं निर्णय करें।*

*सन्त रामपाल जी महाराज ने सर्व संगत को अवगत कराया कि :- राधास्वामी पंथ वाले सरे आम झूठ बोल रहे हैं कि:- सतनाम स्थान जिसको सतलोक और सच्चखण्ड भी कहते हैं बहुत ऊँचा है और संतों का दरबार है और उसके ऊपर तीन स्थान और हैं जिनको किसी सन्त ने नहीं खोला अब राधास्वामी(श्री शिवदयाल जी) ने खोला है। इन्हीं की पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-1 में प्रथम पृष्ठ पर ही पूज्य कबीर परमेश्वर की अमृत वाणी में एक शब्द लिखा है ''कर नैनों दिदार महल में प्यारा है'' जो 32 कली का है। जिसका अनुवाद श्री सावन सिंह जी महाराज(जो श्री जयमल जी महाराज डेरा व्यास वाले के उतराधिकारी थे) ने अनुवाद किया है। उस शब्द में सर्व स्थानों व लोकों का वर्णन भिन्न-2 है। जो वाणी परमेश्वर कबीर सतपुरूष की राधास्वामी(श्री शिवदयाल जी) के जन्म से भी चार सौ वर्ष पूर्व की लिखी हुई है।*

*इससे स्पष्ट है कि परमेश्वर कबीर सतपुरूष जी की वाणी को चुरा कर अपनी फोक्ट महिमा बनाई है। जिसकी अब पोल खुल गई है। पुस्तक सारवचन राधास्वामी वार्तिक के पृष्ठ 5 पर वचन 7 से स्पष्ट है कि श्री शिवदयाल जी को ही राधास्वामी कहा गया है। क्योंकि यह पुस्तक ''सारवचन वार्तिक'' की भूमिका में लिखा है कि इस पुस्तक में हजुर जी महाराज शिव दयाल जी के वचनों को संग्रह करके लिखा है। इस वचन 7 में कहा है कि राधास्वामी जी ने भेद खोला है यदि राधास्वामी (श्री शिवदयाल महाराज) का अपना अनुभव होता तो उपरोक्त पुस्तक के फोटो कापी में ऊवा-बाई (कहीं की ईट कहीं का रोड़ा) ज्ञान नहीं बोलते।*

*शंका समाधान :- वास्तव में ----------*

*(शेष फिर)*

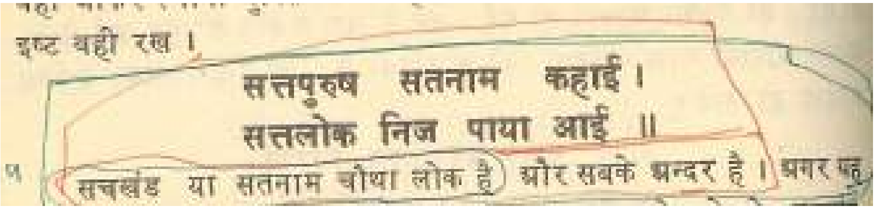
दृष्ट यही रख ।

सत्तपुरुष सतनाम कहाई ।
सत्तलोक निज पाया आई ॥

सचखंड या सतनाम चौथा लोक है और सबके अन्दर है । अगर यह

*(पुस्तक संतमत प्रकाश भाग-3 के पृष्ठ 76 की फोटो कॉपी)*

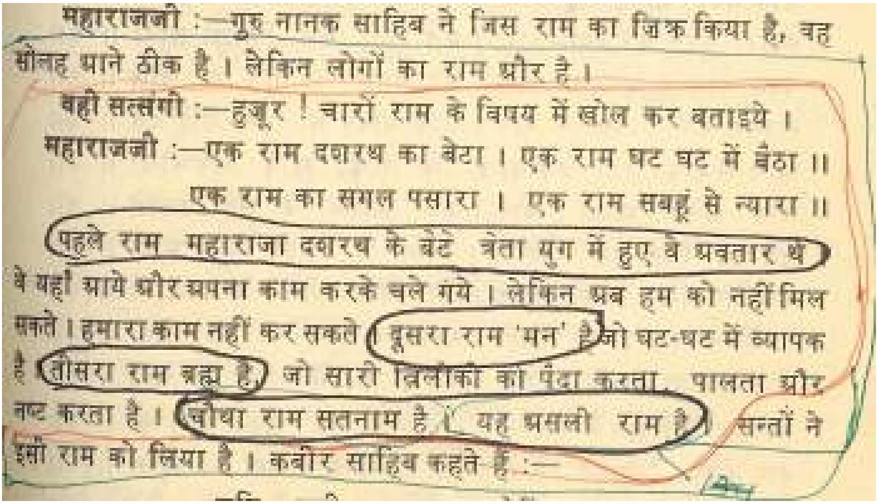
महाराजजी :—गुरु नानक साहिब ने जिस राम का जिक्र किया है, वह सोलह आने ठीक है । लेकिन लोगों का राम और है ।

वही सत्संगी :—हुजूर ! चारों राम के विषय में खोल कर बताइये ।

महाराजजी :—एक राम दशरथ का बेटा । एक राम घट घट में बैठा ॥
एक राम का सगल पसारा । एक राम सबहूं से न्यारा ॥

पहले राम महाराजा दशरथ के बेटे त्रेता युग में हुए वे अवतार थे वे यहां आये और अपना काम करके चले गये । लेकिन अब हम को नहीं मिल सकते । हमारा काम नहीं कर सकते । दूसरा राम 'मन' है जो घट-घट में व्यापक है । तीसरा राम ब्रह्म है जो सारी त्रिलोकी को पैदा करता, पालता और नष्ट करता है । चौथा राम सतनाम है । यह असली राम है । सन्तों ने इसी राम को लिया है । कबीर साहिब कहते हैं :—

*(पुस्तक संतमत प्रकाश भाग-3 के पृष्ठ 79 की फोटो कॉपी)*

*निष्कर्ष :- उपरोक्त फोटो कापी पुस्तक ''संतमत प्रकाश भाग-3 के पृष्ठ 76 व 79 के अंशों की है। जिसके लेखक संत सावन सिंह जी महाराज हैं। उपरोक्त लेखों से पता चलता है कि सन्त सावन सिंह को सन्तमत का कोई ज्ञान नहीं था। उन्हें यही नहीं पता था कि ''सतनाम'' क्या है। पृष्ठ 76 पर सतनाम को सच्चखण्ड (सतलोक) बताया है पृष्ठ 79 पर सतनाम को चौथा राम बताया है तथा पाँच नामों में सतनाम को जाप का मन्त्र बताया है। यही विचार राधास्वामी पंथ के प्रमुख हजूर साहेब शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी जी के हैं जो पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 3 व 5 पर लिखे हैं उन की फोटो कापी कृप्या इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 57-58 पर है।*

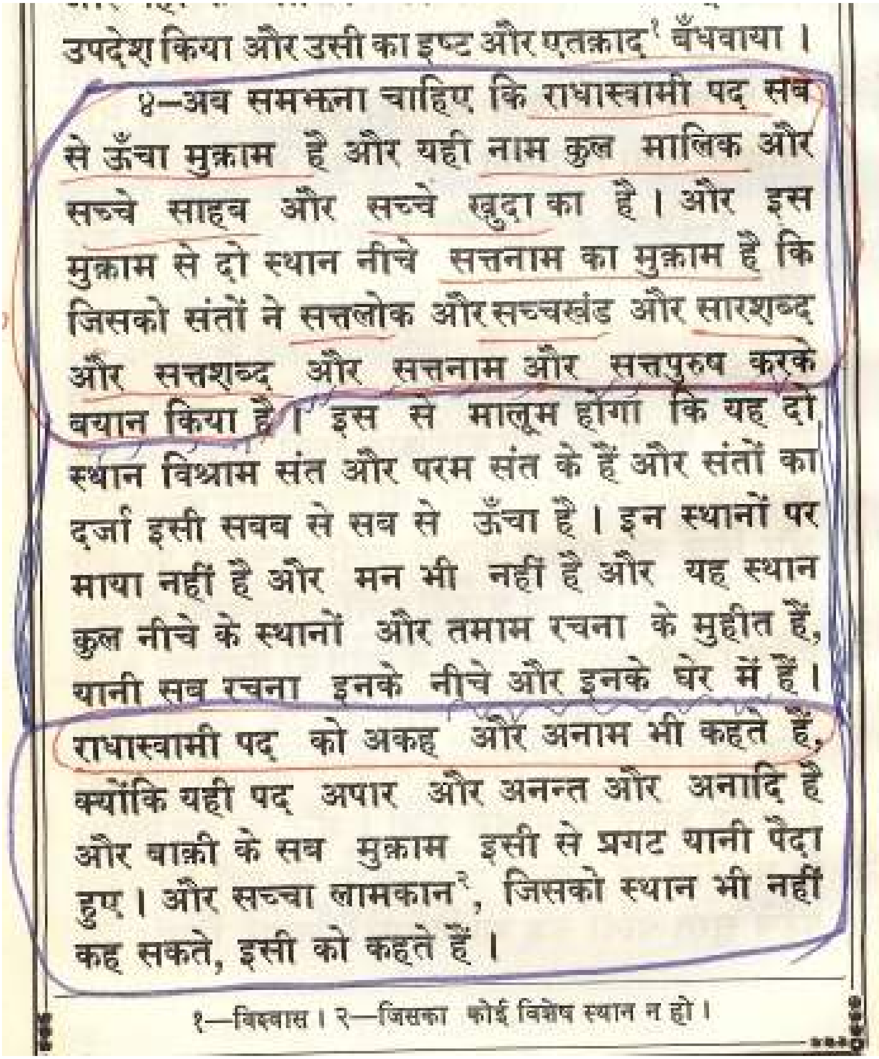
उपदेश किया और उसी का इष्ट और एतक़ाद[1] बँधवाया ।

४—अब समझना चाहिए कि राधास्वामी पद सब से ऊँचा मुक़ाम है और यही नाम कुल मालिक और सच्चे साहब और सच्चे खुदा का है। और इस मुक़ाम से दो स्थान नीचे सत्तनाम का मुक़ाम है कि जिसको संतों ने सत्तलोक और सच्चखंड और सारशब्द और सत्तशब्द और सत्तनाम और सत्तपुरुष करके बयान किया है। इस से मालूम होगा कि यह दो स्थान विश्राम संत और परम संत के हैं और संतों का दर्जा इसी सबब से सब से ऊँचा है। इन स्थानों पर माया नहीं है और मन भी नहीं है और यह स्थान कुल नीचे के स्थानों और तमाम रचना के मुहीत हैं, यानी सब रचना इनके नीचे और इनके घेर में हैं। राधास्वामी पद को अकह और अनाम भी कहते हैं, क्योंकि यही पद अपार और अनन्त और अनादि है और बाक़ी के सब मुक़ाम इसी से प्रगट यानी पैदा हुए। और सच्चा लामकान[2], जिसको स्थान भी नहीं कह सकते, इसी को कहते हैं।

१—विश्वास। २—जिसका कोई विशेष स्थान न हो।

*(पुस्तक सारवचन राधास्वामी वार्तिक के वचन संख्या 4 पृष्ठ 3 की फोटो कॉपी)*

... और दहाका, उस पहुँचने वाले में बिलकुल नहीं रहती है।

७—ऊपर ज़िक्र हुआ है कि सत्तनाम स्थान, जिसको सत्तलोक और सच्चखंड भी कहते हैं, निहायत ऊँचा है और संतों का दरबार है और उसके ऊपर तीन स्थान और हैं कि जिनको किसी संत ने नहीं खोला[1]। अब परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी दयाल ने जीवों पर निहायत[2] कृपा करके उन मुक़ामों को खोलकर साफ़ साफ़ वर्णन किया है और उनका भेद और कैफ़ियत भी ज़ाहिर की और सबसे ऊँचा और धुर स्थान राधास्वामी पद, जो सब की आदि और भंडार है और परम संतों का निज महल है, उसका भेद दया करके बख़्शा। इसी स्थान से शुरू में सुरत उतरी थी और इसके नीचे जितने स्थान हैं वे सब सुरत के उतार के हैं। और अब

जीवात्मा यानी सुरत या रूह इस जिस्म यानी देह में सहसदलकमल के नीचे ठहरी हुई है और वहाँ से इसकी रोशनी और ताक़त तमाम जिस्म में उतर कर और फैल कर मन और इंद्रियों के द्वारे कुल जिस्मानी[1] और नफ़सानी[2] यानी स्थूल और सूक्ष्म कारज दे रही है।

८—मन दो हैं—एक ब्रह्मांडी और दूसरा पिंडी।

*(पुस्तक सारवचन राधास्वामी वार्तिक के पृष्ठ 5 वचन संख्या 7 की फोटो कॉपी)*

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

## (धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

## (द्वितीय किस्त)

**(12 मार्च 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)**

*भक्त कृष्ण सिंह लाठर ट्रस्टी ने बताया कि सतलोक आश्रम करौंथा में संत गरीबदास जी महाराज के बोध दिवस के उपलक्ष में चल रहे सात दिवसीय सत्संग समारोह में जगत गुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज ने श्रद्धालुओं की शंकाओं का समाधान किया तथा शास्त्रों में छुपी सच्चाई को तथा अन्य संतों व पंथों की पुस्तकों को प्रोजैक्टर के द्वारा पर्दे पर दिखा कर श्रद्धालुओं को सत्य से अवगत कराया।*

*शंका समाधान :- वास्तव में आदरणीय श्री शिवदयाल जी महाराज (राधास्वामी) जी पूर्व जन्म के भक्ति युक्त पुण्य आत्मा थे। वर्तमान में उन्हें शास्त्र अनुकूल सत्य भक्ति नहीं मिली। जिस कारण से वे अपनी पूर्व जन्म की कमाई के आधार से ही भक्ति के प्यासे थे। 5-6 वर्ष की आयु में बचपन से ही स्वयं समाधिस्थ हो जाते थे। अपनी पूर्व जन्म की कमाई को समाप्त कर गए इसलिए अपनी प्रिय शिष्या बुक्की में प्रवेश हो कर बातें करते थे। श्री प्रताप सिंह जी ने ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज पृष्ठ 54-55-56 वचन 65 में लिखा है कि मैं (प्रताप जी) तथा श्री सालगराम राय साहेब भी कई बार उनसे आदेश प्राप्त करते थे। फिर बुक्की के मुख से स्वामी शिवदयाल जी के प्राप्त आदेश का पालन करते थे। इससे सिद्ध है कि श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) ही अपनी प्रिय शिष्या बुक्की में प्रवेश (प्रकट) होकर बोलते थे। उस आदेश का पालन श्री राय साहब सालगराम जी (जिसने राधास्वामी पंथ चलाया) तथा श्री प्रताप सिंह जी (जो हजूर स्वामी शिवदयाल जी के सगे भाई थे) करते थे। कृप्या देखें फोटो कापी पृष्ठ 54-55-56 वचन सं. 65 (जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज) इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 66 से 69 पर।*

*उपरोक्त वचन 65 की फोटो कापी में स्पष्ट है कि (1) स्वामी शिवदयाल जी अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश (प्रकट हो) कर भक्तमति बुक्की के मुख द्वारा आदेश देते थे तथा मृत्यु के पश्चात् भी हुक्का व भोग की सेवा अपनी शिष्या बुक्की जी द्वारा ग्रहण करते थे और बुक्की जी में उसकी मृत्यु तक प्रकट (प्रवेश) रहे।*

*(2) स्वामी शिवदयाल जी हुक्का पीते थे। विचार करें : ऐसी स्थिति तो पितरों तथा प्रेतों की होती है। किसी भी मोक्ष प्राप्त संत के इतिहास में नहीं*

*मिलती। जब जिस पंथ के मुखिया ही विकार नहीं त्याग सके तो अन्य अनुयाई कैसे विकार रहित हो सकते हैं। इसलिए उस पंथ के भक्ति मार्ग से मोक्ष प्राप्ति की बात कहना ही व्यर्थ है।*

*जैसे इनवर्टर की बैट्री चार्जड होती है वह सर्व लाभ(पंखा चला देती है, बल्ब जगा देती है) देती रहती है। यदि चार्जर ठीक नहीं होता है तो डीस्चार्ज होने के पश्चात वह लाभ नहीं देती। इसी प्रकार पूर्व जन्म की भक्ति से सम्पन्न हुए भक्त वर्तमान में अच्छे साधक लगते हैं। परन्तु साधना शास्त्रविरूद्ध होने के कारण भविष्य की भक्ति कमाई से वंचित रह जाते हैं। फिर वे पितर या प्रेत बन जाते हैं। फिर अन्य के शरीर में बोलते हैं।*

*यहाँ सतलोक आश्रम करौंथा में बहुत से व्यक्ति प्रेतों से पीड़ित भी आते हैं। वे नाम प्राप्त करके स्वस्थ हो जाते हैं तथा उनका आत्मकल्याण भी हो जाता है।*

*प्रश्नः एक श्रद्धालु ने प्रश्न पूछा तथा एक घटना का वर्णन किया। भक्त ने बताया कि मेरा चाचा भला व्यक्ति था। सुबह-शाम दो-दो घण्टे नित्य साधना करता था। मृत्यु के पश्चात वह अपनी पुत्रवधु में बोलता था। जब कोई आपत्ति आती तो उससे पूछते थे और जो समाधान बताता था वह सही हो जाता था। मृत्यु से पूर्व मेरा चाचा हुक्का पीता था तथा चूरमा (घी, खाण्ड, रोटी से बनाया जाता है) खाया करता था। जो उसे बहुत पसंद था। उसकी पुत्र वधू प्रतिदिन उसके कमरे में (जिसमें वह साधना किया करता था) हुक्का भर कर रखती थी तथा चूरमा भी बना कर रखती थी। वह स्वयं हुक्का पीती तथा चूरमा खाती थी। जब कभी नहीं रख पाती थी तो वह उस के मुख से बोलता तथा अन्य को कहता था तुम्हारी ईट से ईट बजा दूंगा। फिर हम डरते ऐसा करते थे। कई बार हमारे घर में होने वाली लाभ-हानि को अपनी पुत्र वधू में प्रकट (प्रवेश) होकर पूर्व ही बता देता था। वह सत्य होती थी। एक ब्राह्मण ने बताया था कि वह पितर बना हुआ है। अब आपसे उपदेश लेने के पश्चात् पीछा छूटा है। मेरा चाचा जी भक्ति भी करता था फिर भी पितर या प्रेत बन गया। क्या कारण है ?*

*उत्तरः- जो पुण्यात्मा पूर्व जन्म में किसी सन्त की शरण में सत्य साधना किया करता था। वह कुछ भक्ति कमाई तो स्वर्ग में समाप्त कर देता है। शेष पुण्यों के आधार से उसे मानव शरीर प्राप्त हो जाता है। मानव जन्म में भी पूर्व जन्म की कमाई के प्रभाव से भक्ति की प्रेरणा से वह व्यक्ति साधना अवश्य करता है। शास्त्रविधि रहित साधना करने के कारण उसकी पूर्व जन्म की शेष कमाई मानव जन्म में समाप्त हो जाती है। जिस कारण से वह साधक मृत्यु उपरान्त पितर योनि को प्राप्त होता है फिर प्रेत योनि में जाता है। फिर नरक तथा अन्य प्राणियों की योनियां भोगता है। यह प्रभु का विधान है।*

*इसलिए पवित्र गीता जी अध्याय 16 श्लोक 23 में कहा है कि जो व्यक्ति*

*शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण(पूजा) करता है। उसे न तो कोई सुख प्राप्त होता है न उसकी गति होती है न कोई सिद्धी अर्थात प्रभु प्राप्ति का कार्य भी सिद्ध नहीं होता।*

*फिर श्लोक 24 में कहा है कि भक्ति मार्ग की साधना ग्रहण करने तथा त्यागने के लिए शास्त्रों को ही आधार मानें, किसी सन्त के कहने मात्र से विश्वास न करें।*

*शंका प्रश्न :- आपने प्रथम किस्त में लिखा है कि राधा जी श्री शिवदयाल जी की धर्म पत्नी थी। आपके पास क्या प्रमाण है ? हमें तो बताया गया है कि राधा सुरत को कहते हैं तथा स्वामी शब्द को।*

*उत्तर :- प्रिय श्रद्धालु आपने वचन संख्या 4 में पढ़ा। जिसमें लिखा है कि राधास्वामी सबसे ऊंचा स्थान है। फिर लिखा है कि यह मालिक का नाम है। फिर लिखा है कि यह ला मकान है अर्थात् स्थान भी नहीं कह सकते। आप ही विचार करें कि इनकी कौनसी बात को सत्य मानोगे। कृप्या पढो प्रमाण पुस्तक ''उपदेश राधास्वामी'', प्रकाशक - एस.एल. सोंधी, सेक्रेटरी राधास्वामी सत्संग, ब्यास, जिला अमृतसर (पंजाब) की फोटो कॉपी पृष्ठ 30-31 तथा यही प्रमाण पुस्तक ''जीवन चरित्र बाबा जयमल सिंह जी'', लेखक श्री कृपाल सिंह जी के पृष्ठ 56 की फोटो कॉपी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 68 पर और स्वयं निर्णय करें सत्य और असत्य का।*

*शंका प्रश्न : आपने प्रथम किस्त में यह भी लिखा है कि तुलसी साहेब हाथरस वाले ने पांचों नाम काल के कहे हैं। क्या प्रमाण है ? यदि सचमुच ऐसा है तो हमारे साथ धोखा हुआ है।*

*उत्तर :- प्रिय श्रद्धालु कृप्या पढ़ो फोटो कॉपी घट रामायण पहिला भाग पृष्ठ 27 की। इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 70 पर जिसमें स्पष्ट किया है कि पांचों नाम तो काल के हैं। इन पांचो नामों से भिन्न दो नाम अन्य हैं - 1. आदिनाम जिसे सारनाम भी कहते हैं। वह कोई और मन्त्र है जो उपदेशी को गुरु द्वारा दिया जाता है। दूसरा सतनाम है। (सतनाम कहते हैं सच्चे नाम को। सतनाम-सतनाम जाप करने का नहीं है।) जिन दोनों नामों आदिनाम अर्थात् सारनाम तथा सतनाम (जो दो मंत्रों का योग है) का राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरु अर्थात् सच्चा सौदा पंथ वाले संतों को पता नहीं है। इसलिए तो पुस्तक सार वचन वार्तिक पृष्ठ 3 पर सत्संग वचन 4 में स्वयं श्री शिवदयाल जी महाराज (राधास्वामी) सतनाम, सारशब्द अर्थात् आदिनाम तथा सतशब्द, सतपुरुष, सतलोक को एक बताया है। यह भी कहा है कि राधास्वामी पद सबसे ऊंचा मुकाम (स्थान) है। यही सच्चे मालिक का नाम है। इसे ला मकान जिसका कोई स्थान भी नहीं कह सकते फिर लिखा है इसी को कहते हैं। विचार : प्रिय पाठक स्वयं विचार करें।*

*क्या यह पूरे संतों के विचार हैं? यह तो ऐसा है जैसे किसी ने जीवन में कभी न कार देखी, न पैट्रोल, न शहर, न सड़क और न ड्राईवर का ज्ञान हो। वह कहे कि मैं कार की सवारी करने शहर में जाता हूँ। वह पैट्रोल व ड्राईवर से सड़क पर चलती है।*

*फिर कहे कार चलती थोड़े ही है। कार बताऊँ किसे कहते हैं। कार को पैट्रोल, ड्राईवर, सड़क तथा शहर कहा जाता है। वास्तव में कार है ही नहीं जिसे कार कहा जाए। ऐसे विचार हैं श्री शिवदयाल जी महाराज (राधास्वामी) जी के इससे सिद्ध है कि राधास्वामी पंथा तथा धन-धन सतगुरु व सच्चा सौदा पंथ के मुख्य मार्ग दर्शक श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) को भक्ति का क-ख भी ज्ञान नहीं था तो उनके अनुयाईयों का क्या हाल होगा ? जिन की थ्यूरी ही ठीक नहीं है तो प्रैक्टीकल कैसे ठीक हो सकता है? उनका लिखित अनुभव ही कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा है तो साधना भी व्यर्थ है।*

*हजूर स्वामी जी महाराज श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) का कोई गुरु नहीं था। कृप्या देखें फोटो कॉपी पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज'' लेखक प्रताप सिंह जी के पृष्ठ 19 पर वचन संख्या 31 इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) में पृष्ठ 70 पर।*

*विशेष विचारः-सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि सर्व प्रमाणों को पढ़ें तथा निष्पक्ष निर्णय करें। सत्य साधना केवल मुझ दास (रामपाल दास) के पास है। वर्तमान में यह साधना किसी के पास नहीं है।*

*राधास्वामी तथा सच्चा सौदा सिरसा तथा जगमालवाली (धन धन सतगुरू) वाले कहते हैं कि हमारा ज्ञान तो गीता जी तथा वेदों से भी आगे है वेद तथा गीता ज्ञान को हम नहीं मानते।*

*विचार करेंः- पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों का ज्ञान ब्रह्म तक की साधना का श्रेष्ठ ज्ञान है इसे ऐसा जानो जैसे दसवीं कक्षा तक पाठ्यक्रम है। सुक्ष्म वेद(कबीर वाणी) पूर्ण परमात्मा की भक्ति का श्रेष्ठ ज्ञान है। यह ग्यारहवीं कक्षा से एम. ए. तथा पी. एच. डी तक का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का ज्ञान जानो।*

*जो कोई कहे कि हम तो सीधे एम. ए. की पढाई कर रहे हैं। हम दसवीं तक की पुस्तकों को नहीं मानते। हमें दसवीं कक्षा पास करने की आवश्यकता नहीं है। क्या वह व्यक्ति ठीक विचार व्यक्त कर रहा है ? यही दशा राधास्वामी तथा उसकी शाखाओं (धन धन सतगुरू-सच्चा सौदा) की है। पाठकों को प्रथम किस्त ''राधास्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी'' में श्री शिवदयाल (राधास्वामी) के सत्संग वचनों की फोटो कापी से स्पष्ट हुआ कि उस पंथ में क्या ज्ञान प्रचार किया जा रहा है। उनका अपना ज्ञान सर्व निराधार है। गीता जी तथा वेदों के ज्ञान को स्वीकार नहीं करते सर्व अनुयाईयों का जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। जो थोड़ा बहुत लाभ हवन यज्ञ*

*(देशी घी की ज्योति जो सर्व घरों में जलाई जाती थी) से होता था। वह भी बंद करवा दी तथा कहते हैं कि हम तो शरीर (पिण्ड) में वास्तविक ज्योति जगाते हैं। बाहर की ज्योति(हवन) की आवश्यकता नहीं।*

*इस प्रकार के विचार प्रकट करके सर्व अनुयाईयों को पुण्यहीन बना रहे हैं।*

*प्रिय श्रद्धालु, संतमता स्वयं पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) जी ने चलाया है। श्री तुलसी साहेब हाथरस वाले ने परमेश्वर कबीर जी की वाणी को पढ़ा। फिर अपनी चतुराई से निष्कर्ष निकाल कर सतलोक, आदि लोकों का वर्णन करने लगा। ''घट रामायण'' जो उनके द्वारा लिखी है भाग पहला पृष्ठ सं. 30 पर लिखा है कि शरीर(घट) अर्थात् पिण्ड में ही सोलह द्वार हैं। सर्व वस्तु जो देखी हैं वे पिण्ड(घट) में ही हैं। जबकि पूज्य कबीर परमेश्वर जी शब्द ''कर नैनों दिदार महल में प्यारा है'' की कली सं. 31-32 में कहा है कि यह जो पिण्ड(घट) में दिखाई दे रहा है। यह नकली सतलोक आदि है। यह तो माया ने ऊपर के लोकों की नकल की है, जो झूठी है। हमारा वास्तविक सतलोक आदि तो पिण्ड(घट/शरीर) अर्थात अण्ड से पार अर्थात बाहर है (यह शब्द आपके पंथ की पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-1 में प्रथम पृष्ठ पर लिखा है)।*

*(जिसे ब्रह्माण्ड भी कहते हैं क्योंकि एक ब्रह्माण्ड का चित्र शरीर अर्थात पिण्ड में है। ब्रह्मण्ड का आकार अण्डे जैसा है। इसलिए ब्रह्मण्ड को ही अण्ड कहा जाता है। जब की राधास्वामी पंथ वाले पिण्ड अलग बताते हैं ब्रह्माण्ड अलग बताते हैं तथा अण्ड भिन्न बताते हैं)*

*विचारणीय बात है कि श्री तुलसी साहेब हाथरस वाले की आत्मा पूर्व जन्म में वही थी जिसने त्रिलोकी भगवान रामचन्द्र जी की जीवनी ''रामचरित्र मानस'' अर्थात ''रामायण'' रूप में लिखी थी। इसलिए श्री तुलसी दास हाथरस वाले को सतलोक आदि का ज्ञान कैसे हो सकता है ? जबकि उनका कोई वक्त गुरू भी नहीं है। फिर शिवदयाल जी महाराज ने भी श्री तुलसी साहेब हाथरस वालों के विचार सुने हैं। श्री शिवदयाल जी महाराज(जो राधा स्वामी पंथ के मुखिया व प्रवर्तक कहे जाते हैं) का भी कोई गुरू नहीं है। इसलिए इनको भी सतलोक व सतपुरूष का ज्ञान नहीं हो सकता। फिर अन्य सालगराम आदि का तो नम्बर ही कहाँ हो सकता है जिन्होंने राधास्वामी पंथ चलाया है।*

*राधा स्वामी पंथ में पांच नाम दान करते हैं। जिन पांचों नामों को श्री तुलसीदास हाथरस वाले भी काल के नाम बताते हैं तथा इनसे अतिरिक्त दो सतनाम तथा सतशब्द से ही सतलोक जाने की विधि बताई है जो श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) को ज्ञान नहीं। क्योंकि स्वयं श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) को यही पता नहीं कि सतनाम कोई स्थान है या सतलोक है या सतपुरूष है या सतशब्द है या सारशब्द है। इसलिए सतलोक जाने की विधि से राधास्वामी पंथ*

*वाले श्रद्धालु पूर्ण रूप से वंचित हैं। श्री शिवदयाल जी के शिष्य श्री जयमल सिंह जी महाराज हैं (जिन्होंने राधास्वामी डेरा ब्यास जि. अमृतसर पंजाब में स्थापित किया है)श्री जयमल सिंह जी के उतराधिकारी श्री सावन सिंह जी महाराज हुए हैं।*

*श्री सावन सिंह से दो अन्य साखाऐं निकली हैं। एक सच्चा सौदा सिरसा :- श्री खेमामल उर्फ बिलोचिस्तानी शाह मस्ताना जी, जो श्री सावन सिंह जी महाराज के शिष्य थे। जिन्हें श्री सावन सिंह जी द्वारा नाम दान का आदेश नहीं दिया गया। क्योंकि सन्त केवल एक ही उतराधिकारी बनाते हैं जो श्री जगत सिंह को अपना उतराधिकारी श्री सावन जी सिंह जी ने बना दिया था। श्री खेमामल उर्फ शाहमस्ताना जी ने बेगु रोड़, सिरसा में अलग नाम से पंथ स्थापित कर दिया। ज्ञान श्री शिवदयाल जी वाला ही है। वही पांच नाम देते थे। बाद में श्री सतनाम दास जी ने तीन नाम दान करने प्रारम्भ कर दिए जो श्री शाहमस्ताना जी की आज्ञा का उलंघन है। नाम हैं :- 1.) सतपुरुष, 2.) अकाल मूर्त, 3.) शब्द स्वरूपी राम ये तीन नाम किसी सन्त के इतिहास में नहीं है।*

*दूसरी शाखा : श्री सावन कृपाल रूहानी मिशन दिल्ली में श्री कृपाल सिंह महाराज ने स्थापित किया जो श्री सावन सिंह जी के शिष्य थे। परंतु उत्तराधिकारी न बनाने के कारण स्वयं ही अलग शाखा खोल ली। श्री कृपाल सिंह जी को श्री सावन सिंह जी महाराज की ओर से नामदान का कोई आदेश नहीं था। (क्योंकि संत केवल एक ही उतराधिकारी बनाते हैं।)*

*तीसरी शाखा : डेरा व्यास, पंजाब में श्री जगत सिंह महाराज को उत्तराधिकारी बनाया। श्री कृपाल सिंह जी के शिष्य श्री ठाकुर सिंह ने अलग शाखा चलाई। वही पांच नाम ही दान करते हैं जिनको श्री कृपाल सिंह जी महाराज की ओर से नामदान करने का आदेश नहीं था। आगरा से शिवदयाल जी वाली परम्परा से श्री घूरेलाल जी के शिष्य ने ''जय गुरुदेव'' नाम से मथुरा में अन्य पंथ की स्थापना की। श्री घूरेलाल जी वाला मथुरा में जयगुरूदेव पंथ के सन्त भी वही पांच नामदान करते हैं।*

*नोट :- इससे सिद्ध हुआ कि (1) राधास्वामी पंथ, डेरा ब्यास पंजाब (2) श्री कृपाल सिंह जी वाला राधास्वामी पंथ दिल्ली वाला (3) श्री ठाकुर सिंह जी वाला राधास्वामी पंथ तथा जयगुरुदेव मथुरा में। सर्व शास्त्र विधि अनुसार साधना से वंचित हैं तथा गुरू मर्यादा की धज्जियाँ उड़ाते गए हैं। अपनी-2 मर्जी से नए-2 स्थानों पर शिवदयाल जी वाला कहीं की ईट कहीं का रोड़ा अर्थात मनघड़ंत ज्ञान प्रचार किया है। नामदान भी काल तक के देते हैं। सतनाम, सारनाम, सारशब्द का कोई ज्ञान नहीं जिनके बिना सतलोक वास तथा सतपुरुष की प्राप्ति नहीं हो सकती। करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं के अनमोल जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। यह भी सिद्ध हुआ कि सच्चा सौदा सिरसा तथा धन-धन सतगुरु पंथ जगमाल वाली*

*जिला सिरसा वाले भी सतलोक तथा सतपुरुष की प्राप्ति की विधि से वंचित हैं। क्योंकि जगमालवाली में मैनेजर साहब नाम से प्रसिद्ध संत जी ने अलग से स्वयं ही पंथ चला लिया जो पूर्ण रूप से सत्य साधना से वंचित है।*

*आगरा के राधास्वामी पंथ से एक श्री रामसिंह जी अध्यापक के शिष्य श्री ताराचन्द जी ने भिवानी जिले के दिनोद गांव में राधास्वामी पंथ की अलग से स्थापना कर ली। केवल एक नाम ''राधास्वामी'' दान किया जाता है जो पूर्ण रूप से शास्त्र विरुद्ध है। परमात्मा प्राप्ति का नहीं है। यह राधास्वामी नाम तो शिवदयाल जी का जानों जो प्रेत बन कर अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश हुआ। राधा स्वामी नाम का जप तो एक प्रेत का जाप हुआ। अन्य क्रियाएँ भी जैसे कान बंद करके धुन सुनना, आंखे बंद करके हठ योग करना तथा प्रकाश देखना वही है जो संतमत के विरुद्ध है।*

***कबीर परमेश्वर कहते हैं*** - ''कोई सतगुरु संत कहावै, जो नैनन अलख लखावै। आँख ना मूंदे, कान ना रूंधै ना अनहद उलझावै। जो सहज समाधी बतावै।।''

*मनघड़ंत ज्ञान व शास्त्र विधि रहित साधना बताकर भोले-भाले श्रद्धालुओं के अनमोल जीवन के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। वास्तविक भक्ति विधि सतलोक तथा सतपुरुष प्राप्ति की शास्त्रानुसार मुझ दास (रामपाल दास) के पास उपलब्ध है, कृप्या निःशुल्क तथा अविलम्ब प्राप्त करें तथा अपना मानव जीवन सफल करें। झूठे गुरु को त्याग देने से कोई पाप नहीं होता। जैसे एक वैद्य (डॉक्टर) से ईलाज नहीं हो रहा है तो उसे त्याग कर अन्य वैद्य से ईलाज करवाना हितकर होता है। ऐसे ही शास्त्र विधि विरूद्ध साधना बताने वाले गुरु को त्याग कर पूर्ण संत से उपदेश प्राप्त करना लाभदायक तथा न्याय संगत है।*

*शेष अगले अंक में ------*

उन्होंने यह जवाब दिया कि यह वह दर्शन नहीं है, कि जो मुझ को दो तीन रोज़ पेश्तर अंतर में हुआ करते थे । तब स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि जा भजन पर ज़ोर दे दर्शन होंगे, तब से फ़िर दर्शन होने लगे । शिब्बो जी आधी रात से सुबह तक और सिपहर से शाम तक भजन करती रहती थीं, गरज़ कि दस बारह घंटे भजन में मशग़ूल रहती थीं, और राय साहब से घंटों चरचा करके नसीहत लेती रहती थीं ।

( ६५ ) अब बुक्की जी का कि जो शिब्बो जी की छोटी बहिन थीं थोड़ा सा हाल लिखा ज़ाता है । यह शिब्बो जी से कुछ अर्से बाद स्वामीजी महाराज के चरनों में आई थीं । जब इन्हों ने कुछ दिन सतसंग किया, और बचन स्वामीजी महाराज के सुने और वे बचन हिरदे में समा गये, तब इन के प्रेम की हालत अजीब थी, कि जब स्वामीजी महाराज बचन या अर्थ पोथियों का करते, तब इनकी आँखें सुर्ख़ अंगारा सी हो जाती थीं और आँसू बराबर टपकते रहते थे और बहुत देर तक यानी घंटों उन बचनों का नशा बना रहता था और फिर जब स्वामीजी महाराज कथा से फ़ुर्सत पाकर हुक्का पीते थे या अभ्यास का रस लेते हुए या कथा कहने को बैठते थे तो बुक्कीजी महाराज के चरनों का अंगूठा मुंह में रक्खे हुए घंटों चरनामृत का रस लेती रहती थीं । और जब कोई मत्था टेकने के वास्ते हटाना चाहता तो वे चरन नहीं

*(पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज (शिवदयाल जी) पृष्ठ 54 की फोटो कॉपी)*

छोड़ा चाहती थीं । तब मत्था टेकने वाले से कह दिया जाता था कि तुम दूसरे चरन पर मत्था टेक लो और उस प्यासी को मत हटाओ । और वह बयान किया करती थीं कि मुझे इसमें ऐसा रस आता है कि जैसे कोई दूध पीता है । इनके भजन का यह हाल था कि आठ घंटे नौ घंटे रोज़ भजन किया करती थीं, इन को स्वामीजी महाराज के दर्शनों का पूरा आधार हो गया था और सुरत भी ऊँचे देश में पहुँचती थी । जब स्वामीजी महाराज अंतरध्यान हुए तब बुक्की जी की यह कैफ़ियत हुई कि दिन रात बेहोश पड़ी रहती थीं और दो २ दिन हाजात ज़रूरी[१] को भी रफ़ा करने नहीं जाती थीं और सुरत स्वामीजी महाराज के चरनों में लगी रहती थी । क़रीब डेढ़ महीने के यह हाल रहा, सबको ख़ौफ़ हुआ कि शायद इनकी देह छूट जावे। तब स्वामीजी महाराज ने इनको दर्शन दिये और फ़रमाया कि जिस तरह तुम सेवा पेश्तर किया करती थीं उसी तरह से करो । और फिर उसी रोज़ से बुक्की जी भोग भी तइयार करती थीं, और मेरे पन्नी गली के मकान पर पहिले दस्तूर के माफ़िक़ पलँग बिछाती और हुक़्क़ा भरती थीं । वह पलँग अभी तक बिछा रहता है । ग़रज़ कि जिस तरह से कि पेश्तर सेवा किया करती थीं उसी तरह से कुल काम करने लगीं । और स्वामीजी महाराज उनको ध्यान के समय में प्रगट दर्शन देते थे, और कुल सेवा उसी तरह पर कबूल फ़रमाते थे, जैसा कि

१ –दिशा फ़रागत ।

*(पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज (शिवदयाल जी) पृष्ठ 55 की फोटो कॉपी)*

अंतरध्यान होने के पेश्तर करते थे । बुक्की जी को महाराज उनके अख़ीर दम तक प्रगट रहे, यहाँ तक कि जिस किसी को जब कोई बात स्वामीजी महाराज से अर्ज़ करनी होती थी तो वे बुक्की जी के ज़रीये से दरियाफ़्त कर लिया करते थे, यानी बुक्कीजी अभ्यास के समय स्वामीजी महाराज को प्रगट करके हम-कलाम[१] हुआ करती थीं । इस नियाज़मन्द को भी जब कभी भीड़ के समय पर घबराहट होती थी, और किसी तरह से अक़ल काम नहीं देती थी, तब बुक्की जी के ज़रिये से स्वामीजी महाराज का हुक्म लिया करता था, और जैसा हुक्म होता था उसी के मुवाफ़िक़ बंदा कारबंद होता था और इसी तरह पर राय साहब ने भी मौज की थी कि बुक्की जी के ज़रीये से दो चार बार हुक्म हासिल किये थे ।।

( ६६ ) जब बुक्की जी का देहान्त होने को था, तब एक सेवक ने कुछ गुफ़्तगू नाउम्मेदी की सी की, और अपने दिल से बड़ा अफ़सोस ज़ाहिर किया । तब बुक्की जी ने यह फ़रमाया कि–

हम नहिं मरें मरे संसारा । हमको मिला जिलावना हारा ।।

और उस वक़्त हँसीं और तालियाँ बजाईं, और फिर देह छोड़ दी ।।

( ६७ ) बुक्की जी और बिश्नो जी यह दोनों ख़ास कर स्वामीजी महाराज की सेवा में रहती थीं । बिश्नो जी

१ – बातचीत ।

*(पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज (शिवदयाल जी) पृष्ठ 56 की फोटो कॉपी)*

मण्डल था। सुबह सवेरे हुज़ूर स्वामी जी महाराज सत्संग करते, गुरुग्रन्थ साहब या कबीर साहब और दूसरे सन्तों की वाणियों के अनन्त भण्डार से परमार्थ के रत्न-जवाहर निकाल कर संगत के सामने रखते। सुबह के सत्संग के बाद उपस्थित लोग भोजन पाते। स्वामीजी महाराज की धर्मपत्नी, श्रीमती नारायणी देवी जी, जिन्हें बाद में लोगों ने प्यार और श्रद्धा से "राधाजी" के नाम से सम्मानित किया, अपने हाथ से रसोई बनातीं और स्वामी जी महाराज स्वयं संगत को भोजन परोसते। शाम को विचार-

*(पुस्तक ''जीवन चरित्र बाबा जयमल सिंह जी'' पृष्ठ 56 की फोटो कॉपी)*

३० उपदेश राधास्वामी

स्वामीजी महाराज गृहस्थ महात्मा थे। आपने परमार्थ की कमाई के लिये घर-गृहस्थी के त्याग की शर्त नहीं रखी। आपका विवाह फरीदाबाद (जो आजकल हरियाणा में है) के लाला इज़्ज़तराय जी की सुपुत्री नारायणी देवी जी के साथ हुआ। आपके जीवन के अन्तिम वर्षों में सत्संगियों ने प्रेम से आपको 'राधा जी' कहना शुरू कर दिया।

*(पुस्तक ''उपदेश राधास्वामी'' पृष्ठ 30 की फोटो कॉपी)*

जीवन : स्वामीजी महाराज ३१

का अभ्यास किया कि शब्द में ही लीन हो गईं। स्वामीजी महाराज ने अपने आख़िरी वचनों में फ़रमाया था कि किसी गृहस्थ को भजन के बारे में कुछ पूछना हो तो राधाजी से पूछे। इसका यही भाव था कि आध्यात्मिक मण्डलों में माताजी स्वामीजी महाराज के साथ अभेद हो चुकी थीं। आप स्वामीजी महाराज के सेवकों को पुत्र-भाव से देखती थीं और वे भी उनसे माता की ही तरह प्रेम करते थे।

*(पुस्तक ''उपदेश राधास्वामी'' पृष्ठ 31 की फोटो कॉपी)*

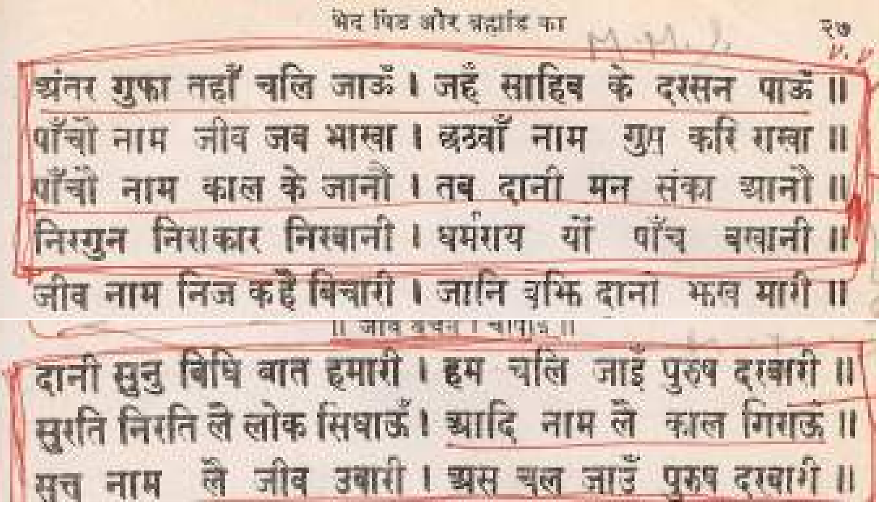
भेद पिंड और ब्रह्मांड का २७

अंतर गुफा जहाँ चलि जाऊँ। जहँ साहिब के दरसन पाऊँ॥
पाँचौ नाम जीव जब भाखा। छठवाँ नाम गुप्त करि राखा॥
पाँचौ नाम काल के जानौ। तब दानी मन संका आनौ॥
निरगुन निराकार निरबानी। धर्मराय यों पाँच बखानी॥
जीव नाम निज कहै बिचारी। जानि बूझि दानो झख मारी॥

दानी सुनु बिधि बात हमारी। हम चलि जाइँ पुरुष दरबारी॥
सुरति निरति लै लोक सिधाऊँ। आदि नाम लै काल गिराऊँ॥
सत्त नाम लै जीव उबारी। अस चल जाऊँ पुरुष दरबारी॥

*(पुस्तक ''घट रामायण'' पहला भाग के पृष्ठ 27 की फोटो कॉपी)*

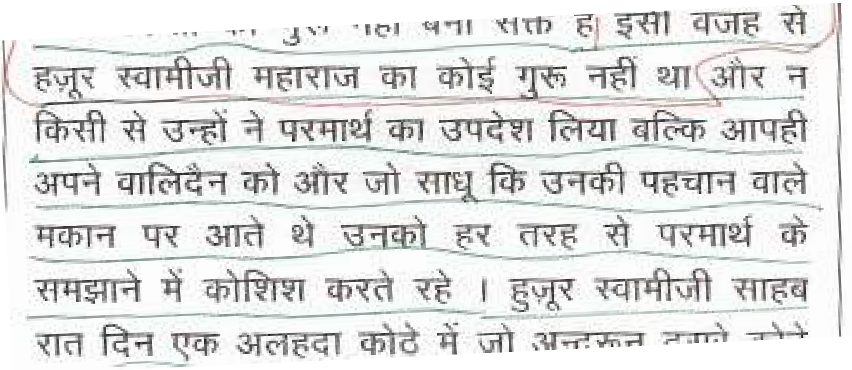
... इसी वजह से
हज़ूर स्वामीजी महाराज का कोई गुरू नहीं था और न
किसी से उन्हों ने परमार्थ का उपदेश लिया बल्कि आपही
अपने वालिदैन को और जो साधू कि उनकी पहचान वाले
मकान पर आते थे उनको हर तरह से परमार्थ के
समझाने में कोशिश करते रहे। हुज़ूर स्वामीजी साहब
रात दिन एक अलहदा कोठे में जो ...

*(पुस्तक ''जीवन चिरत्र हजूर स्वामी जी महाराज'' लेखक प्रताप सिंह जी के पृष्ठ 19 पर वचन सं. 31की फोटो कापी)*

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

## (धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

## (तीसरी किस्त)

**(26 मार्च 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)**

(गतांक से आगे-----)

*प्रश्नः- आपके द्वारा लिखे लेख समाचार पत्र दैनिक पंजाब केसरी में पढ़े। ''राधास्वामी पंथ की कहानी उन्हीं की जुबानी'' किस्त 1 तथा 2 को पढ कर मालूम हुआ कि सचमुच राधास्वामी पंथ के सन्तों से तो दूसरी कक्षा का विद्यार्थी भी कुछ अच्छा लिख सकता है। परन्तु राधास्वामी पंथ व इसकी शाखाओं (धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा आदि) में लाखों की संख्या में अनुयाई हैं। क्या सर्व मूर्ख हैं? इस संस्था में बहुत शिक्षित वर्ग भी है जिसमें आई.ए.एस., आई.पी.एस. तथा वकील व मजिस्ट्रेट भी जुड़े हैं। क्या उन्होंने नहीं पढ़ा होगा? अब उन पुस्तकों को पढ़ते हैं तो रोना आता है मेरे 20 वर्ष व्यर्थ कर दिये अब मैं क्या करूं ? घर का रहा न घाट का मेरी आयु 65 वर्ष है। अब सन्तों से विश्वास उठ गया।*

*उत्तरः- प्रिय श्रद्धालु जो शिक्षित वर्ग व उच्च अधिकारी गण राधास्वामी पंथ तथा उस की शाखाओं (धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा, जय गुरूदेव) से जुड़े हैं। वे मूर्ख नहीं हैं अपितु प्रभु प्रेमी व नेक हैं। जो पढ़ाई पढ़ कर वे उच्चधिकारी बने हैं। उस पढ़ाई से अध्यात्मिक ज्ञान का कोई मेल नहीं है। जैसे वैद्य(डाक्टर) के पास रोगी जाता है वह उस वैद्य के द्वारा दी गई दवाई के विषय में नहीं सोचता कि यह ठीक है या गलत। वैद्य के पास चाहे आई.ए.एस. चाहे पी.एच.डी. वाला भी जाए तो भी डाक्टर की दवाई को नहीं परख सकता। डाक्टर(वैद्य) वाली पढ़ाई भिन्न होती है। उस को अन्य वैद्य(डाक्टर) ही परख सकता है।*

*जो अब मुझ दास(रामपाल दास) द्वारा परखी गई है जो साधना विधि अन्य सन्तों तथा पन्थों द्वारा भक्त समाज को बताई गई है वह शास्त्रविरूद्ध है, इसलिए व्यर्थ है। अतः आप सर्व को चाहिए कि पुनर् विचार करें तथा स्वयं शास्त्रों को मुझ दास द्वारा बताए तरीके से समझें और तुलना करें। आसानी से निष्कर्ष निकल जाएगा। रही बात लाखों की संख्या में जमघट होने की यह सब एक दुसरे की देखा देखी लगे हैं।*

*जैसे यह दास(रामपाल दास) श्री हनुमान जी की साधना करता था। राजस्थान प्रांत के चूरू जिला के गाँव सालासर में प्रतिवर्ष पूजा के लिए जाता था। वहाँ देखता था कि कोई राजस्थान प्रांत का मंत्री पूजा के लिए आया होता, कोई*

*हरियाणा प्रान्त का मंत्री पूजा के लिए आया होता था। लाखों की संख्या में अन्य श्रद्धालु पूजा के लिए जाते थे। उन बड़े व्यक्तियों को तथा अधिक समूह को देख कर संतुष्ट हो जाता था कि जब यहाँ पर इतने बड़े-बड़े मंत्री जी तथा अन्य सेठ लोग आते हैं तो हमारी साधना सही है।*

*परन्तु जब पूर्ण सन्त मिला सर्व शास्त्रों का अध्ययन किया तो यह दास स्तब्ध रह गया। पूरे पवित्र हिन्दु समाज को अपने सद्ग्रन्थों (पवित्र गीता जी, पवित्र चारों वेदों तथा पवित्र पुराण) के विपरीत ज्ञान प्राप्त है तथा साधना भी शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण(पूजा) कर रहे हैं। अभी तक पवित्र हिन्दु समाज को यह नहीं पता था कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी के माता पिता कौन है। इन्हें अजरो-अमर-मृत्युंज्य-सर्व लोकों के रचनहार कुल के कर्त्ता ही बताया जाता रहा है। जबकि पवित्र देवी महापुराण(तीसरे स्कंद) तथा पवित्र शिवपुराण में रूद्र संहिता 6 तथा 7 अध्याय में स्पष्ट लिखा है कि सदाशिव अर्थात कालरूपी ब्रह्म तो इनका पिता है तथा दुर्गा(प्रकृति) इनकी माता है। तीनों ने स्वयं कहा है कि हमारा तो आविर्भाव अर्थात जन्म तथा तिरोभाव अर्थात मृत्यु होती है। हम अविनाशी नहीं हैं। यह भी लिखा है कि रजगुण ब्रह्मा जी हैं, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी हैं। पवित्र गीता जी अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में तीनों भगवानों(रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) की पूजा करने वालों को मूर्ख कहा है। गीता अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 में स्पष्ट लिखा है:- प्रकृति(दुर्गा) तो सर्व प्राणियों की माता है और मैं ब्रह्म(काल/क्षर पुरूष) सर्व का पिता हूँ। प्रकृति(दुर्गा) से तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) उत्पन्न हुए हैं। ये तीनों प्रभु जीवात्मा को शरीर में बांधते हैं अर्थात मुक्त नहीं होने देते।*

*नोटः- पवित्र गीता जी पवित्र चारों वेदों का सारांश है इसलिए इस में सांकेतिक शब्दों का प्रयोग भी अधिक है।*

*यदि बहु संख्या या उच्च शिक्षायुक्त व्यक्तियों या उच्च पद को देख कर ही सत्य साधना का प्रमाण माना जाए तो पवित्र हिन्दु समाज की जनसंख्या लगभग सत्तर करोड़ है तथा प्रधानमन्त्री तथा जज तक हिन्दु भी लोक वेद अनुसार अर्थात शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण(पूजा) कर रहे हैं। क्योंकि अध्यात्मिक ज्ञान सर्व शिक्षाओं से भिन्न है। इसलिए अध्यात्मिक ज्ञान को समझने के लिए शास्त्रों को ही आधार माना जाता है जो आज भी साक्षी हैं। पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों में भी सतलोक का विवरण विस्तृत वर्णित है परन्तु कोई नहीं समझ सका। केवल सतलोक जाने तथा सतपुरूष प्राप्ति की विधि पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों में वर्णित नहीं है। वह परमेश्वर कबीर साहेब जी ने अपनी अमृतवाणी में बताई है फिर भी सारशब्द गुप्त रखा था जो अब मुझ को बताया है।*

*इसलिए पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में स्पष्ट किया है कि शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण(पूजा) करना व्यर्थ है तथा सत्य साधना जो करनी चाहिए तथा असत्य साधना जो त्यागनी चाहिए उसके लिए शास्त्रों को ही आधार माने। किसी सन्त विशेष के कहने मात्र से ही साधना स्वीकार न करें। पवित्र हिन्दु समाज के श्रद्धालुओं को समझाना अति आसान है क्योंकि वे पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों तथा पवित्र पुराणों को सत्य मानते हैं। अब प्रमाण देखकर मुझ दास(रामपाल दास) द्वारा बताए भक्ति मार्ग को स्वीकार कर रहे हैं। परन्तु राधास्वामी पंथ तथा इसी की शाखाओं (धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा-जय गुरूदेव-ठाकुर सिंह वाला समूह) के सन्तों ने तो अनुयाई श्रद्धालुओं को कहीं का नहीं छोड़ा। सन्तजन कहते हैं कि हम गीता तथा वेदों को नहीं मानते क्योंकि हमारा ज्ञान तो इन से ऊपर का है। कबीर साहेब जी कहते हैं:-*

''कच्ची सरसौं पेली, खल भया न तेल''

*प्रिय श्रद्धालु कृप्या पढ़ें राधास्वामी पंथ तथा उसकी शाखाओं(धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा जय गुरूदेव मथुरा वाले-कृपाल सिंह तथा ठाकुर सिंह आदि) के प्रथम परम सन्त परमधनी हजूर स्वामी शिवदयाल जी(राधास्वामी जी) का ज्ञान जो पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों से भी बढ़कर है या कोरा अज्ञान है।*

*राधास्वामी कोई स्थान है या भगवान है या सतपुरूष है या नाम मन्त्र है या कोई सन्त है? कोरा अज्ञान है :-*

*कृप्या पढ़ें पुस्तक ''सार वचन राधास्वामी वार्तिक'' पहला भाग तथा दूसरा भाग (प्रकाशकः- एस.एल. सौंधी सैक्रेटरी राधास्वामी सत्संग ब्यास, डेरा बाबा जैमल सिंह, जिला-अमृतसर पंजाब) के भूमिका पृष्ठ 1 तथा वचन सं. 1, 3, 4, 12, 28, 52, 67- भाग-2 के वचन 31 की फोटो कॉपी। इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) पृष्ठ 80 से 82 पर।*

*पुस्तक सार वचन वार्तिक की भूमिका में लिखा है:- यह पुस्तक हजूर स्वामी जी महाराज(शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी) जी के सत्संग वचनों का संग्रह है जो उनके मुख कमल से निकले हैं। जिनको बाद में पुस्तक सारवचन वार्तिक के रूप में छपवाया गया। जिन का शुभ नाम सेठ शिवदयाल सिंह जी था माता जी का नाम महामाया जी तथा पिता जी का नाम सेठ दिलवाली सिंह जी था। फोटो कापी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 80 पर।*

*वचन 1 में लिखा है:- जीवात्मा अर्थात सुरत को रूह कहते हैं यह सबसे ऊँचे स्थान यानी सतनाम और राधास्वामी पद से उतरी है(इसमें राधास्वामी तथा सतनाम को स्थान कहा है) फोटो कापी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 80 पर।*

*वचन 3 में कहा है कि पाँचवीं मंजिल सतनाम तथा आठवीं मंजिल राधास्वामी*

*(इसमें भी दोनों को स्थान कहा है) फोटो कापी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 80 पर।*

*वचन 4 में राधास्वामी पद को सबसे ऊँचा स्थान(मुकाम) भी कहा है तथा भगवान भी कहा है। फिर अन्त की पंक्तियों में कहा है कि राधास्वामी ला मकान है जिसे स्थान भी नहीं कह सकते फिर लिखा है इसी को कहते हैं। इसी वचन 4 में सतनाम के विषय में लिखा है राधास्वामी स्थान से दो स्थान छोड़कर सतनाम का स्थान है। फिर सतनाम और सतशब्द और सारशब्द और सतलोक और सतपुरूष को एक बताया है(भगवान-स्थान-नाम-शब्द एक कर दिया)। फोटो कापी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 80 पर।*

*इस वचन सं. 12 में एक बार लिखा है सतनाम का स्थान सतलोक प्रकाशवान है महानाद-सतशब्द-सतपुरूष और आदि पुरूष भी इसी सतलोक को कहते हैं। फिर कहा है कि सन्त इसी पुरूष का रूप यानी अवतार है। यह स्थान दयाल पुरूष का है। इस स्थान में अत्यधिक आत्माऐं अर्थात भक्त भिन्न-2 द्वीपों में बसते हैं तथा सतपुरूष का दर्शन आन्नद लेते हैं। साधना सतपुरूष राधास्वामी की बताई है। कृप्या पढ़ें फोटो कापी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 81 पर।*

*विचार करें:-राधास्वामी पंथ का सिद्धान्त है कि सतपुरूष निराकार है। सतलोक में सतपुरूष साकार नहीं है। केवल प्रकाश ही प्रकाश है। सतलोक में जाने वाली रूह परमात्मा में ऐसे समा जाती हैं जैसे समुद्र में बूंद। यहाँ वचन 12 में सतपुरूष साकार लिखा है कहा है कि आत्माऐं सतलोक में सतपुरूष का दर्शन करती हैं। यह भी लिखा है कि सन्त इसी सतलोक स्थान के अवतार हैं। फिर सतपुरूष राधास्वामी एक लिख दिया।*

*कृप्या प्रेमी पाठक स्वयं निर्णय करें क्या श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) को प्रभु प्राप्ति हुई होगी ? जिसको यही पता नहीं सतनाम क्या है? सतपुरूष किसे कहते हैं? सारशब्द क्या है? सारनाम क्या है?*

*सतनाम तो नाम जाप है, जो दो मन्त्र का है। जिसमें एक ॐ मन्त्र व दूसरा तत्(जो सांकेतिक है यह दास केवल उपदेशी को बताएगा) मन्त्र है। सतलोक वह स्थान है जहाँ पूर्ण परमात्मा रहता है। सतपुरूष अर्थात् पूर्ण परमात्मा साकार है। सारनाम भी जाप करने का है यह भी साँकेतिक है।*

*वचन 28 में सतपुरूष तथा राधास्वामी को एक बताया है तथा इसे सन्त रूप में प्रकट होकर जीव उद्धार करने वाला बताया है। कृप्या पढ़ें फोटो कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 95 पर।*

*वचन 52 में लिखाः- उस सन्त रूप में आए सतपुरूष राधास्वामी के बताए मार्ग से साधक ''स्थान सतपुरूष राधास्वामी'' में पहुँच जाता है। कृप्या पढ़ें फोटो*

*कापी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 82 पर।*

*विचार करें:- वाह रे गीता तथा वेदों से श्रेष्ठ ज्ञान देने वालो ! ऐसे वचन तो कोई भांग के नशे में बोल सकता है। ऐसे विचार परमात्मा प्राप्त सन्त के नहीं हो सकते। ये विचार राधास्वामी पंथ के सर्वोपरी महात्मा श्री शिवदयाल जी जिसे ही राधास्वामी नाम से जाना जाता था के हैं।*

*वचन 67 तथा 31 का निष्कर्ष :- वचन 67 में लिखा है कि सच्चा मालिक सतपुरूष राधास्वामी है जो पारब्रह्म से भी परे है अर्थात बड़ा है। फिर वचन 31 में कहा है कि वह पारब्रह्म परमात्मा सन्त-सतगुरू रूप धार कर जीवों को सतमार्ग बताता है। यहाँ पर सतपुरूष राधास्वामी तथा पारब्रह्म एक बताया है, वचन 67 में पारब्रह्म से भी परे अर्थात् बड़ा कहा है। फिर वचन 67 में ही कहा है कि वह सतपुरूष राधास्वामी सन्त रूप में आया उसी ने ''राधास्वामी'' नाम प्रकट किया जो इस नाम ''राधास्वामी'' का जाप राधास्वामी की शरण लेकर जाप करता है या धुन सुनता है उसका उद्वार हो जाता है। वह (वचन 52 के अनुसार) ''स्थान सतपुरूष राधास्वामी'' में पहुँच जाता है। कृप्या पढ़ें फोटो कापी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 82 पर।*

*विचार करें:- उपरोक्त विवरण में कहीं तो राधास्वामी नाम जाप का कहा है। कहीं सन्त, कहीं स्थान कहा है, कहीं कुल मालिक कहा है। फिर यह भी कहा है कि राधास्वामी ने राधास्वामी नाम प्रकट किया। राधास्वामी का जाप करने वाला स्थान सतपुरुष राधास्वामी में पहुंच जाता है। यह तो ऐसा विवरण है जैसे कोई कहे कि रोहतक शहर अपने स्थान रोहतक से संत बन कर आया है, रोहतक शहर ने अपना रोहतक नाम प्रकट किया जो रोहतक की शरण होकर रोहतक नाम जाप करे वह स्थान संत रोहतक में पहुंच जाएगा।*

*वाह रे सन्त मत का नाश करने वाले विद्वानों! खूब मूर्ख बनाया भोले श्रद्धालुओं को। फिर कहा है कि राधास्वामी नाम का चाहे जाप करले, चाहे धुन सुन ले, एक जैसा ही लाभ होता है।*

*विचार करें:- सतनाम अर्थात सच्चे नाम (निज नाम अर्थात वास्तविक नाम है जो दो अक्षर/मन्त्र का होता है) का जाप तो मजदूरी करके नाम की कमाई करनी होती है तथा धुन तो नाम के जाप से प्रकट होती है जो नाम की मजूदरी का फल है।*

*यदि कोई कहे, चाहे तो मजदूरी करले, चाहे प्राप्त धन को देखता रहे वह अवश्य धनी हो जाएगा। क्या ऐसे विचार समझदार व्यक्ति के हो सकते हैं?*

*उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) को कुछ भी ज्ञान नहीं  था। उसी के विचारों पर आधारित धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा, श्री कृपाल सिंह दिल्ली वाले श्री ठाकुर सिंह वाले तथा जयगुरूदेव मथुरा वाला पंथों*

*के अनुयाई हैं। जो सर्व अपने मानव जीवन को व्यर्थ कर रहे हैं।*

*निष्कर्ष :- वास्तव में श्री शिवदयाल जी की धर्मपत्नी का नाम नारायणी देवी था। उसी का उर्फ नाम ''राधा'' था। राधा जी का पति (स्वामी) होने के कारण श्री शिवदयाल जी को राधास्वामी कहने लगे। जैसे उमा (पार्वती) का पति (स्वामी) होने के कारण भगवान शिव उमास्वामी कहलाते हैं। जहाँ भी शिवपुराण में उमास्वामी शब्द आता है तो श्री शिव जी का बोध होता है। इसी प्रकार राधास्वामी भी श्री शिवदयाल का ही बोधक है। श्री सालगराम जी ने श्री शिवदयाल (राधास्वामी) को पूर्ण परमात्मा मान कर इन्हीं के नाम से पंथ चला दिया। इस पुस्तक सार वचन वार्तिक में कोरे गपौड़ लिखे हैं। पाठकों ने किस्त-2 में पढ़ा कि श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) हुक्का पीते थे तथा हठयोग साधना करते थे जो सन्त मत के विरूद्ध है। शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करते थे। श्री शिवदयाल जी का कोई वक्त गुरू नहीं था। राधास्वामी पंथ का परम सिद्धान्त है कि वक्त गुरू बिना मोक्ष कभी नहीं हो सकता। जिस कारण श्री शिवदयाल जी मोक्ष से वंचित रह गए। इसलिए मृत्यु पश्चात् अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश करके पितरों व भूतों की तरह बोल कर आदेश देते थे तथा बुक्की के माध्यम से प्रतिदिन हुक्का ग्रहण करते थे अर्थात बुक्की जी के मुख से हुक्का पीते थे तथा खाने की भी सेवा पहले की तरह बुक्की के मुख द्वारा ग्रहण करते थे। बुक्की के शरीर में उसके अन्तिम स्वांस तक प्रवेश रहे।*

*यह विवरण वचन सं. 65, 31 जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज आगरा से प्रकाशित में है जो आपने दूसरी किस्त में इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 59-60 पर तथा फोटो कापी पृष्ठ 66. 70 पर पढ़ा था।*

*विचार करें:- क्या ये मोक्ष प्राप्त प्राणी के लक्षण हो सकते हैं? श्री सालगराम जी जैसे मनमुखी व्यक्तियों ने एक अधूरे ज्ञान युक्त व्यक्ति को परम धनी परम पुरूष बताकर लाखों भोले-भाले श्रद्धालुओं को गुमराह कर दिया। तीन-तीन पीढ़ियों को नरकगामी करा दिया। राधास्वामी पंथ, धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा पंथ तथा शाखाओं का सिद्धांत है कि परमात्मा एक है। वह सतलोक में तो निराकार है, केवल प्रकाश है। वही परमात्मा जब संसार में मनुष्य रूप में आता है तो जीव उद्धार करता है।*

*विचार करें : श्री सावन सिंह के बाद तीन परमात्मा हो गए। शाहमस्ताना जी बेगु रोड़ सिरसा में, श्री कृपाल सिंह जी दिल्ली में तथा श्री जगत सिंह जी और उनके बाद श्री चरण सिंह जी ब्यास में। तीनों समकालीन थे प्रत्येक श्रद्धालु अपने गुरुजी को मनुष्य रूप में परमात्मा आया मानता है यह ज्ञान गीता जी से श्रेष्ठ है या कोरा अज्ञान है। कृप्या श्रद्धालु स्वयं निर्णय करें। श्री शिवदयाल (राधास्वामी) जी तथा अन्य अनुयाईयों (धन धन सतगुरू-सच्चा सौदा-जयगुरूदेव, कृपाल सिंह*

*वाला पंथ-ठाकुर सिंह वाला पंथ) को सतलोक तथा सतपुरूष की भक्ति का क-ख का भी ज्ञान नहीं। श्रद्धालु इन्हें पूर्ण सन्त-पूर्ण धनी मान कर आश्रित हैं। कृप्या अब शिक्षित समाज है स्वयं निर्णय कर सकता है। उस के लिए कृपा दो पुस्तकें :-*

*1. ''गहरी नजर गीता में'' जिसमें 552 पृष्ठ है तथा*

*2. ''परमेश्वर का सार संदेश'' जिसमें 770 पृष्ठ है मुफ्त प्राप्त करें दोनों पुस्तकों का डाक खर्च केवल 35 रूपये पुस्तक लेते समय डाकिए को देने होगें, फोन द्वारा अपना पता लिखवाएं पुस्तकें आपके पास पहुँच जाऐंगी।*

*सन्त रामपाल जी महाराज की ज्ञान युक्त पुस्तकों में आपको अनमोल ज्ञान पढ़ने को मिलेगा।*

*शिक्षित वर्ग से प्रार्थना है कि सत्य को देखकर आत्म कल्याण का मार्ग ग्रहण करें तथा मुझ दास को प्रभु कबीर जी का भेजा हुआ कुत्ता जानों जो आप भक्ति धन के धनियों को जगाने के लिए भौंक रहा है। आप के मानव जीवन रूपी धन की हानि हो रही है। भक्त समाज कुम्भकर्ण वाली नींद सो रहा है न जाने कब जागेगा।*

*तम्बाखु सेवन या शराब-मांस आदि सेवन प्रभु भक्ति को साथ-2 नष्ट करता है। जैसे देशी घी का हलवा बनाकर उसमें बालु रेत भी डाल दिया जाए तो वह हलवा खराब हो गया। इसी प्रकार साधना करके तम्बाखु-शराब-मांस सेवन भक्ति नाशक है।*

*यदि उपरोक्त प्रमाणों को पढ़ कर भी व्यक्ति सावधान नहीं होता तो वह भक्ति चाहने वाला नहीं है।*

*कुछ श्रद्धालु इस उपकार के कार्य को निन्दा कहते हैं। यह तो ऐसा प्रयत्न जानों जैसे सरकार ने एक समय पाँच सौ रूपये के नकली नोट पकड़े थे। नकली तथा असली नोटों को समाचार पत्रों में छापकर जनता को नकली-असली की पहचान बताई थी। सरकार निन्दा नहीं कर रही थी। अपितु महा उपकार किया था। यही प्रयत्न मुझ दास (रामपाल दास) का है। दूसरे शब्दों में मुझ दास का ऐसा प्रयत्न जानों जैसे एक रेल की पटरी वर्षा से टूट गई थी। एक स्कूल के 12 वर्ष के बच्चे ने देखा कि पटरी टूटी पड़ी है। रेल गाड़ी आ रही है । न जाने कितने यात्रियों की जानें जाएगीं। लड़के ने अपना कमीज निकाला, जोर-2 से हिलाते हुए संकेत करने लगा। बुद्धिमान चालक था। उसने बच्चे की गतिविधि को समझा तथा रेल गाड़ी को रोका तथा बच्चे से कारण पूछा तो पता चला कि भयंकर दुर्घटना टल गई है। ठीक यह दास(रामपाल दास) आप जी को संकेत कर रहा है। जिस राम नाम की गाड़ी में आप बैठे हैं वह ठीक रास्ते नही जा रही है। आपका जीवन व्यर्थ हो रहा है। सर्व सन्तों तथा पंथों के संचालकों(ड्राईवरस) से प्रार्थना है कृपा अपने पंथ की पुस्तकों को जो शास्त्र अनुसार ज्ञानयुक्त नहीं हैं। उस शास्त्रविरूद्ध ज्ञान को(टूटी पटरी को) उतर कर उसे देख लें। आप की लापरवाही से लाखों व्यक्तियों का जीवन नष्ट हो जाएगा। आप स्वयं भी उपदेश मुझ दास से प्राप्त करें तथा अनुयाईयों को भी समझाऐं। नहीं तो आप महापाप के पात्र बनोगे। पहले जो*

*भी हो चुका है उसे भूलें, नए सिरे से ज्ञान तथा उपदेश प्राप्त करके अपना मानव जीवन सफल बनाऐं। मुझे अपना दास या छोटा-बड़ा भाई जानकर अविलम्ब दिक्षा प्राप्त करें। आज पृथ्वी पर पूर्ण ज्ञान पूर्ण परमात्मा(सतपुरूष) का मुझ दास के पास है जो पूर्ण परमात्मा कविर्देव जी(कबीर प्रभु जी) तथा मेरे पूज्य गुरूदेव की असीम कृपा से प्राप्त है। जैसे माननीय प्रधान मन्त्री या माननीय राष्ट्रपति जी को भी कोई रोग हो जाता है तो अपने कर्मचारी डाक्टर से उपचार कराते हैं। उनका मान नहीं घटता अपितु जीवन रक्षा होती है। ठीक इसी प्रकार आप सर्व को(श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव सहित) जन्म-मृत्यु का रोग लगा है। इसकी एक मात्र औषधी(सत्यनाम तथा सारनाम) मुझ दास के पास है। अपना उपचार(जन्म-मरण के रोग का निवारण) करवाऐं। राधास्वामी पंथ की पुस्तक संतमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261-262 पर नानक साहेब जी की वाणी तथा परमेश्वर कबीर जी की वाणी का प्रमाण दे कर कहा है कि -*

सोई गुरु पूरा कहावै, दोय अख्खर का भेद बतावै। एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर जावै।। जे तू पढया पंडित बीना, दूय अक्षर दूय नावां।

कबीर जी की वाणी – कह कबीर अक्षर दुय भाख। होयगा खसम त लेयगा राख।।

*उपरोक्त वाणी में स्पष्ट है कि मुक्ति के लिए दोय अक्षर का नाम जाप है। वह सतनाम मंत्र है। सतनाम में दो अक्षर हैं एक ऊँ + तत् जो साँकेतिक है। केवल उपदेशी को बताया जाएगा। फिर सारनाम भी गुरुदेव द्वारा दिया जाता है। ओम मंत्र ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का ऋण मुक्त करा कर छुटाएगा तथा तत् नाम परमात्मा तक पहुँचाएगा और सारनाम परमात्मा मिलाएगा। उपरोक्त वाणी में यह भी स्पष्ट है कि पूरा गुरु ही यह दो अक्षर का भेद बताएगा।*

*विचार करें : यह मंत्र राधास्वामी पंथ व उसकी शाखाओं के पास नहीं है।*

*कुछेक श्रद्धालु कहते हैं कि गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? उन श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जैसे एक डाक्टर(वैद्य) से उपचार नहीं होता है तो दूसरा डाक्टर बदलने में लाभ होता है हानि नहीं होती। ठीक इसी प्रकार गुरू को जानो। इसलिए शास्त्रविधि विरूद्ध ज्ञान वाले गुरू को त्यागकर पूर्ण गुरू धारण करना हितकर है। पाप नहीं पूण्य है। कुछ श्रद्धालु संकोच करते हैं कि हम तीस वर्ष से राधास्वामी पंथ से जुड़े हैं अब तीस वर्ष की साधना का क्या होगा? अब कैसे छोड़ें? उन श्रद्धालुओं से निवेदन हैं कि विचार करें कि आपको किसी शहर में जाना है, तीस किलोमीटर जाने के बाद पता चले कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं तो तुरंत मुड़ जाना चाहिए। नहीं तो मंजिल दूर होती जाएगी। फिर भी कोई कहे कि हम तो तीस किलोमीटर सफर तय कर चुके हैं, अब कैसे छोड़ें इस रास्ते को? यह विचार तो बालक के या शराबी के हो सकते हैं। समझदार तो तुरंत मुड़ जाएगा। इसलिए उस साधना को तुरंत त्यागकर वास्तविक शास्त्रविधि अनुसार साधना ग्रहण करें।*

*कबीर परमेश्वर कहते हैं कि:-*

झूठे गुरू को त्यागन में तनिक न लावे वार। द्वार न पावै शब्द का भटकै द्वार–द्वार।

***कृप्या निशंकोच अधुरे गुरू को त्याग दें तथा पूर्ण सन्त की शरण ग्रहण करें।***

***दासन दास रामपाल दास***

***प्रश्नः- पूर्ण सन्त की पहचान कैसे करें? जहाँ भी जाते हैं वह सन्त पूर्ण लगता है।***

***उत्तरः-----------------***

*-------(शेष अगले अंक में)*

# भूमिका

स्वामीजी महाराज का शुभ नाम सेठ शिवदयाल सिंह जी था। आपने २५ अगस्त, १८१८ में आगरा शहर में जन्म लिया। आपके पिताजी का नाम सेठ दिलवाली सिंह तथा माताजी का नाम महामाया जी था।

...क्रा १. जीवात्मा अर्थात् सुरत को रूह कहते हैं और यह सब ...ऊँचे स्थान यानी सतनाम और राधास्वामी पद से उतर कर इस ...न में आकर ठहरी हुई है

*पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 1 वचन - 1 की फोटो कॉपी*

पर और कोई बिरले साध और प्रेमी मंजिल तीसरी तक पहुँचे औ... सिर्फ़ सन्त मंजिल पाँचवीं यानी सत्तनाम पर और कोई बिरले स... मंजिल आठवीं यानी राधास्वामी पद तक पहुँचे। इस स्थान से आ... में सुरत का तनज्जुल यानी उतार हुआ है

*पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 2 वचन - 3 की फोटो कॉपी*

४. अब समझना चाहिये कि राधास्वामी पद सबसे ऊँचा मुक़ाम है और यही नाम कुल्ल मालिक और सच्चे साहिब और सच्चे खुदा का है और इस मुक़ाम से दो स्थान नीचे सत्तनाम का मुक़ाम है कि जिसको सन्तों ने सत्तलोक और सच्चखंड और सार शब्द और सत्त शब्द और सत्तनाम और सत्तपुरुष करके बयान किया है। इस से मालूम होगा कि यह दो स्थान विश्राम सन्त और परम-सन्त के हैं और सन्तों का दर्जा इसी सबब से सब से ऊँचा है। इन स्थानों पर माया नहीं है और मन भी नहीं है और यह स्थान कुल नीचे के स्थानों और तमाम रचना के मुहीत हैं यानी सब रचना इनके नीचे और इनके घेर में है। राधास्वामी पद को अकह और अनाम भी कहते हैं, क्योंकि यही पद अपार और अनन्त और अनादि है और बाक़ी के सब मुक़ाम इसी से प्रगट यानी पैदा हुए और सच्चा ला-मकान जिस को स्थान भी नहीं कह सकते, इसी को कहते हैं।

*पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 3 वचन - 4 की फोटो कॉपी*

१२. राधास्वामी पद के नीचे दो स्थान बीच में छोड़ कर सत्तनाम का स्थान यानी सत्तलोक महा प्रकाशवान और पाक और निर्मल है और महज़ रूहानी यानी चैतन्य ही चैतन्य है और कुल नीचे की रचना का आदि और अन्त यही है और इस पद से दो अंश उतरी और वह कुल नीचे के स्थानों में व्यापक हुई। सन्त मत में सच्चा मालिक और कर्त्ता यानी पैदा करने वाला इसी को कहते हैं और आदि शब्द का ज़हूर इसी स्थान से हुआ इस वास्ते इस को महानाद और सारशब्द और सत्तशब्द भी कहते हैं और सत्तपुरुष और आदि पुरुष भी इसी का नाम है। यह अजर, अमर, अविनाशी और सदा एक रस है। सन्त इसी पुरुष का रूप यानी अवतार हैं। वह स्थान दयाल पुरुष का है। यहाँ सदा दया और मिहर ही मिहर और आनन्द ही आनन्द है। इस स्थान में बे-शुमार हंस यानी प्रेमी सुरतें अथवा भक्त जुदा जुदा दीपों में बसते हैं और सत्तपुरुष के दर्शन का विलास और अमी का आहार करते हैं

*पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 8 वचन - 12 की फोटो कॉपी*

२८. अब कि कलियुग का बहुत ज़ोर और शोर के साथ ज़हूर हुआ और जीवों को अनेक तरह के दुःखों में जैसे मुफ़लिसी[१] और बीमारी और मरी और झगड़े और बखेड़े जो कि आपस में ईर्षा और विरोध के सबब से पैदा होते हैं, गिरफ़्तार और महा दुःखी देखा और यह भी मुलाहिज़ा[२] किया कि कुल्ल जीव सीधे रास्ते से बहुत दूर हो गये और निहायत भूल में जा पड़े, तब सत्तपुरुष राधास्वामी को दया आई और वे कृपा करके सन्त सतगुरु रूप धर कर संसार में प्रकट हुए और सच्चे मत और मार्ग का भेद साफ़-साफ़ वाणी और वचन में खोल कर कहा

*पुस्तक सार वचन राधास्वामी वार्तिक पृष्ठ 15 वचन 28 की फोटो कॉपी*

असल सन्त पन्थी वह है कि जो उनके हुक्म के मुआफ़िक अभ्यास करे और रास्ते की मंजिलें पार करके (स्थान सत्तपुरुष राधास्वामी) में पहुँचे या चलना उस रास्ते पर शुरू कर दे तो वह बेशक एक दिन सच्ची मुक्ति को प्राप्त हो जावेंगे।

*पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 31 वचन 52 की फोटो कॉपी*

६७. सन्त-सतगुरु का मारग सबसे ऊँचा है और वह उपासना सच्चे मालिक यानी सत्तपुरुष राधास्वामी की जो ब्रह्म और पार-ब्रह्म के परे हैं, बतलाते हैं ताकि जीव माया के हद्द से परे हो जावे। सच्चे साध की गति दसवें द्वार यानी सुन्न पद तक है और वही योगेश्वर ज्ञानी है और जो कोई कि इस मुक़ाम से नीचे रहे, उनका दर्जा पूरे साध से कम है। इस वास्ते हर एक शख्स को जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहे, मुनासिब है कि सन्तों का इष्ट यानी (सत्तपुरुष राधास्वामी)

*''पुस्तक सार वचन वार्तिक पृष्ठ 45-46 वचन 67 की फोटो कॉपी''*

३१. वह जो पार-ब्रह्म परमात्मा है सो सब जीवों के पास मौजूद है, पर संसार रूपी भव-सागर से किसी को निकाल नहीं सकता है। बजाय निकालने के और रोज़-बरोज़ फँसाता जाता है और जब वही

*''पुस्तक सार वचन वार्तिक भाग 2 पृष्ठ 54-55 वचन 31 की फोटो कॉपी''*

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु
## (धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)
## (चौथी किस्त)

(8 अप्रैल 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

(---- गतांक से आगे)

*प्रश्नः- पूर्ण सन्त की पहचान कैसे करें? जिस भी सन्त के विचार सुनते हैं वह पूर्ण लगता है।*

*राधास्वामी पंथ में तो हमें बताया है कि सतलोक अर्थात सतनाम में सतपुरूष निराकार है। केवल प्रकाश ही प्रकाश है। आत्मा का सतपुरूष में विलीन हो जाना ही मोक्ष है। धुन सुनना ही सतपुरूष प्राप्ति है। मैंने 4 से 8 घण्टे तक अभ्यास कर के देख लिया कोई मण्डल दिखाई नहीं दिए। जो प्रकाश व धुन कुछ दिन बाद दिखने तथा सुनने लगा था वही चल रहा है, कान भी खराब हो गए, पैरों में भी कमजोरी आ गई है। आप के द्वारा लिखी पुस्तकों ''परमेश्वर का सार संदेश'' तथा ''गहरी नजर गीता में'' ने तो आँखें खोल दी हैं। समाचार पत्रों में आप के लेख पढ़ने से लग रहा है कि शायद परमात्मा फिर से निकट आ रहा है। कृप्या पूर्ण सन्त की प्रमाणित पहचान बताऐं।*

*उत्तरः- पूर्ण सन्त की पहचान(1):- राधास्वामी पंथ के प्रथम सन्त माने जाने वाले श्री शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी जी को ज्ञान ही नहीं कि सतनाम क्या वस्तु है। श्री शिव दयाल जी तथा उनके अनुयाई मोक्ष प्राप्त ही नहीं कर सकते। वे सतनाम को स्थान भी कहते हैं कहीं पर कहा है सतनाम हमारी जाति है, कहीं पर सतपुरूष कहते हैं, कहीं पर सारनाम कहते हैं, कहीं पर सतलोक कहते हैं तथा पांच नाम सतनाम का जाप भी है। जब की सतनाम दो अक्षर का मन्त्र है। जिसमें एक ओम् तथा दूसरा तत्(जो सांकेतिक है केवल उपदेशी को ही बताया जाएगा) तथा इस दो अक्षर के सतनाम की कमाई करने के पश्चात् एक मन्त्र और दिया जाएगा जो सारनाम (सत शब्द) कहा जाता है।*

***कृप्या पढ़ें पूर्ण सन्त की पहचान :-*** *जैसे राजा का संविधान है। ऐसे ही पवित्र शास्त्र परमात्मा का संविधान है जो किसी व्यक्ति विशेष का बनाया हुआ नहीं है। स्वयं प्रभु प्रदत्त है। पवित्र चारों वेद ब्रह्म सृष्टि के आदि ग्रन्थ हैं जो ब्रह्म(काल अर्थात ज्योति निरंजन) द्वारा बोले गए हैं। इन्हीं चारों वेदों का सारांश पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी है जो काल भगवान(ब्रह्म/क्षर पुरूष) द्वारा श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके बोला*

*गया अमृत ज्ञान है। जिसमें काल प्रभु की भक्ति तक का ज्ञान है तथा पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष) का तथा सतलोक का भी ज्ञान है। परन्तु भक्ति विधि केवल काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) तक की ही है परन्तु पूर्ण परमात्मा की साधना तथा तत्व ज्ञान को किसी तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त से जानने को कहा है (गीता अध्याय 4 श्लोक 34)। क्योंकि पवित्र चारों वेद तथा पवित्र श्री मद्भगवत गीता जी को ऐसा ज्ञान जानो जैसे दसवीं कक्षा तक का पाठ्यक्रम। पाँचवां वेद जिसे स्वसम वेद(सूक्ष्म वेद) कहते हैं जिसमें चारों वेद तथा गीता जी तथा इनसे ऊपर का भी ज्ञान है। वह पूर्ण परमात्मा अर्थात सत्पुरूष कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ने स्वयं सतलोक से आकर काल लोक में अपनी अमृत वाणी(कबीर वाणी) द्वारा स्वयं प्रकट किया है। जो काल भगवान(क्षर पुरूष) ने समाप्त कर दिया था। जैसे किसी अपराध की धारा के विषय में पाँच वकील अपना-2 मत व्यक्त कर रहे हैं। एक कहता है इस अपराध पर संविधान की धारा 304 लगेगी, दूसरा कहता है 307 लगेगी, तीसरा कहता है 305 लगेगी, चौथा कहता है 376 लगेगी, पाँचवा कहता है 311-बी लगेगी। वे पाँचों वकील ठीक नहीं हो सकते। कौन सी धारा ठीक है यह निर्णय देश के संविधान से ही होगा। संविधान में लिखा विवरण अन्तिम तथा सत्य मान्य होता है।*

*ठीक इसी प्रकार परमात्मा के ज्ञान तथा भक्ति मार्ग की जांच के लिए पवित्र सद्ग्रन्थों को ही आधार माना जाएगा। पवित्र गीता जी में तथा पवित्र चारों वेदों में तथा(पांचवें वेद) कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की अमृत वाणी में सर्व ज्ञान तथा भक्ति विधि स्पष्ट लिखी है। पहले पवित्र गीता जी को आधार मान कर ज्ञान ग्रहण करते हैं। पवित्र गीता जी में तीनों प्रभुओं {ब्रह्म (क्षर पुरूष/काल) तथा परब्रह्म (अक्षर पुरूष) तथा पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरूष अर्थात सतपुरूष)} की भी जानकारी है।*

*गीता जी का ज्ञान ब्रह्म (क्षर पुरूष/काल) द्वारा दिया गया है। गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए ॐ-तत्-सत् इस तीन मन्त्र के जाप करने का निर्देश है। गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा कि पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का ॐ-तत्-सत् तीन मन्त्र का जाप है उस मन्त्र में मेरी भक्ति (साधना) का केवल एक ओम् (ॐ) अक्षर है जिसका उच्चारण करके स्मरण करना है। जो साधक अन्तिम स्वांस तक मेरा स्मरण करता हुआ प्राण त्याग जाता है उसे परमगति प्राप्त होती है। अकेला ॐ नाम का जाप काल ब्रह्म की साधना का है। तथा ब्रह्म साधना का प्रतिफल स्वर्ग- महास्वर्ग प्राप्ति, फिर पाप कर्म आधार से नरक का भोग तथा चौरासी लाख योनियों में जन्म-मृत्यु का कष्ट सदा बना रहेगा। केवल जैसा कर्म प्राणी (पाप-पुण्य) करता है वह दोनों का फल भोगता है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता (केवल पूर्ण परमात्मा की साधना करने से पाप कर्म दण्ड समाप्त होता है)।*

*इसी का प्रमाण गीता ज्ञान दाता प्रभु गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में कहता है कि*

*अर्जुन तेरे तथा मेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में भी यही प्रमाण है तथा गीता अध्याय 2 श्लोक 17 तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62, गीता अध्याय 15 श्लोक 4, 17 में अपने से अन्य पूर्ण परमात्मा (परमेश्वर) के विषय में कहा है तथा वही वास्तव में अविनाशी परमात्मा है। वही सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार है। उसी की शरण में जाने से जन्म-मृत्यु का रोग पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगा अर्थात पूर्ण मोक्ष प्राप्त हो जाएगा।*

*उसे पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष अर्थात अविनाशी परमेश्वर) के तत्वज्ञान तथा भक्ति विधि के विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा हे कि परमेश्वर को प्राप्त करने के लिए बहुत विस्तृत साधनाओं का ज्ञान स्वयं परमेश्वर ने अपने मुख से मुख्य ज्ञान में अर्थात् तत्वज्ञान में कहा फिर गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा कि उस तत्वज्ञान को समझ उसको समझने के लिए तत्वदर्शी सन्तों की खोज कर। फिर उन तत्वदर्शी सन्तों को विनम्र भाव से डण्डवत् प्रणाम करके प्रार्थना पूर्वक प्रश्न करने पर वे तत्व ज्ञान को जानने वाले तत्वदर्शी सन्त तुझे तत्वज्ञान सुनाऐंगे। उस पूर्ण परमात्मा के तत्व ज्ञान को समझ तथा जैसे वे साधना बतायें वैसे कर। (प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में है।)*

*गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो जिसकी मूल तो ऊपर को है तथा शाखाएं नीचे को हैं। ऊपर को जड़ें तो पूर्ण परमात्मा जानो तथा तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्माजी, सतगुण-विष्णुजी तथा तमगुण-शिवजी) रूपी शाखाऐं जानो। गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि मेरे तथा तेरे इस विचार काल में अर्थात् गीता ज्ञान में आपको मैं पूर्ण रूप से इस संसार रूपी वृक्ष (सृष्टि रचना) का ज्ञान नहीं बता सकता।*

*क्योंकि इसके आदि तथा अंत से मैं अपरीचित हूँ। इस उलझी हुई ज्ञान गुत्थी को तत्व ज्ञान रूपी शस्त्र द्वारा ही काटा जा सकता है अर्थात समझा जा सकता है। सृष्टि रचना के विषय में तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त ही बता सकता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में तत्वदर्शी (पूर्ण) सन्त की पहचान बताते हुए कहा है कि इस उल्टे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष के भिन्न-2 भागों को जो सन्त बतावे(सः वेद वित्) वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है अर्थात तत्वदर्शी (पूर्ण) सन्त है। क्योंकि गीता ज्ञान दाता ने तो केवल इतना ही बताया है कि ऊपर को तो जड़(मूल) है तथा नीचे को तीनों गुण रूपी शाखाएं हैं। फिर कहा है कि मुझे पूर्ण ज्ञान नहीं है। जो संसार रूपी वृक्ष के सर्व भागों जैसे मूल, तना, डार, शाखाऐं, पत्तों का ज्ञान भिन्न-2 बताए उसे तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त जानना।*

*परमेश्वर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने स्वयं अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान दिया।*

''कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।''

*कृपा देखें उल्टा लटके हुए संसार रूपी वृक्ष का चित्रः-*

*इस उल्टे संसार रूपी वृक्ष की जड़ें तो पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म अर्थात पूर्ण ब्रह्म/सतपुरूष) है। जमीन से बाहर तुरन्त जो हिस्सा दृष्टिगोचर होता है जिसे तना कहते हैं वह अक्षर पुरूष (परब्रह्म) जानो तथा मोटी डार को क्षर पुरूष (ब्रह्म/काल) जानो तथा डार की तीनों शाखाओं को श्री ब्रह्माजी(रजगुण), श्री विष्णुजी(सतगुण) तथा श्री शिवजी(तमगुण) रूपी तीनों देव जानो तथा पात रूप में संसार समझें। अब समझें कि पूर्ण परमात्मा (जड़ों) से सर्व वृक्ष का पालन होता है। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 16 में लिखा है। दो प्रभु तो इस पृथ्वी लोक में हैं (ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों को पृथ्वी वाला लोक कहा जाता है। क्योंकि यह नाशवान है) एक क्षर पुरूष (ब्रह्म/काल) तथा दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तथा दोनों ही प्रभुओं (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) के लोकों में दोनों प्रभुओं के तथा इनके अन्तर्गत प्राणियों के स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम पुरूष (वास्तव में श्रेष्ठ परमात्मा) तो इन (उपरोक्त) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य ही है। जो परमात्मा(परम अक्षर ब्रह्म) कहा जाता है वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।*

*उदाहरणार्थः- जैसे एक मूर्ति तो मिट्टी की बनी हो जो स्पष्ट नाशवान दिखाई देती है। गिरते ही टुकड़े-2 हो जाएगी। ऐसी स्थिती तो क्षर पुरूष (ब्रह्म) की जानो तथा दूसरी मूर्ति स्टील(इस्पात) की बनी हो जो मिट्टी वाली मूर्ति की तुलना में अधिक टिकाऊ है। परन्तु स्टील (इस्पात) को भी जंग लगेगा। एक दिन नष्ट हो जाएगी। भले ही समय अधिक लगे। इसी प्रकार अक्षर पुरूष को भी अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी तो तीसरी धातु स्वर्ण की बनी मूर्ति होती है जिसका कभी विनाश नहीं होता। ऐसी स्थिति परम अक्षर ब्रह्म अर्थात पूर्ण ब्रह्म (सतपुरूष) की जानो। वही तीसरा पूर्ण परमात्मा जो संसार रूपी वृक्ष की जड़(मूल) है सर्व का पालन पोषण करने वाला है। उसी पूर्ण परमात्मा की साधना तत्वदर्शी सन्त बताएगा। इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि पूर्ण सन्त(तत्वदर्शी) के मिल जाने के पश्चात् उस परमेश्वर(सतपुरूष) के उस स्थान की खोज करनी चाहिए जिस स्थान(सतलोक) में जाने के पश्चात् साधक पुनर् लौटकर संसार में नहीं आते अर्थात् जन्म-मृत्यु से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाते हैं तथा जिस आदि पुरूष अर्थात पूर्ण परमात्मा(सतपुरूष) से संसार रूपी वृक्ष का विस्तार हुआ है अर्थात जिसने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है। स्वयं गीता ज्ञान दाता प्रभु ने भी कहा है कि मैं भी उसी की शरण में हूँ। उसी परमात्मा की भक्ति विश्वास के साथ करनी चाहिए। यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में है कि गीता ज्ञान दाता प्रभु किसी अन्य पूर्ण परमात्मा की ओर संकेत कर रहा है। कहा है कि हे अर्जुन ! तू सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कृपा से तू परम*

*शान्ति तथा सतलोक(शाश्वत स्थान) को प्राप्त होगा। गीता अध्याय 18 श्लोक 64 में कहा है कि मेरा पूज्य देव भी यही पूर्ण परमात्मा है।*

*विशेषः- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि तत्वदर्शी अर्थात पूर्ण सन्त वह है जो संसार रूपी उल्टे वृक्ष के सर्वांगों का भिन्न-2 विवरण बताए। जिसे गीता ज्ञान दाता प्रभु भी नहीं जानता। वह विवरण आप जी ने ऊपर पढ़ा तथा उल्टे संसार रूपी वृक्ष का चित्र भी देखा। आगे पढ़े पूर्ण सन्त की अन्य पहचान तथा कैसे मिले वह पूर्ण परमात्मा जिस के विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में व अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है।*

*-दासन दास रामपाल दास*

**''एक श्रद्वालु की आत्म कथा''**

*शेष अगले अंक में -----------*

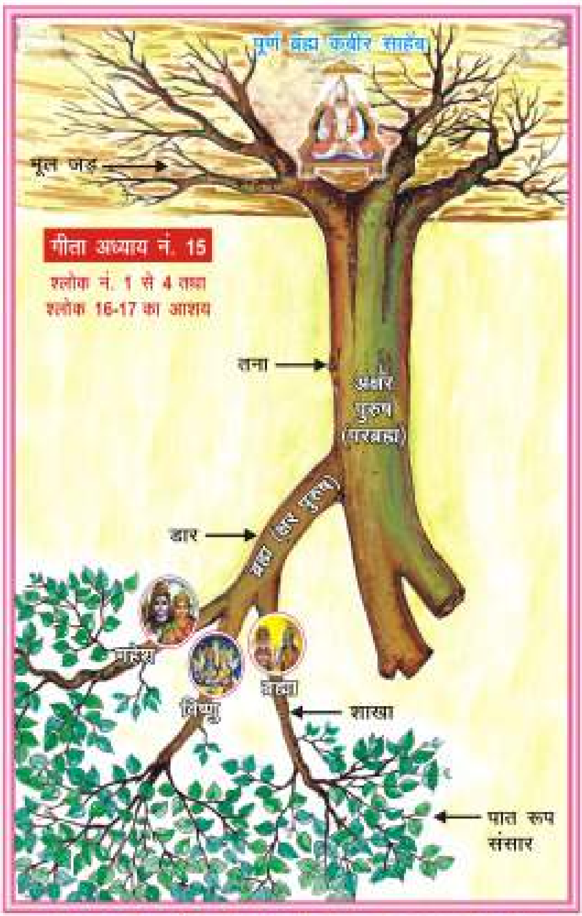


ऊपर जड नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

## (धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

## (पांचवी किस्त)

(18 अप्रैल 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

(---- गतांक से आगे)

### ''एक श्रद्वालु की आत्म कथा''

*मैं राजेन्द्र दास 200-बी पश्चिम बिहार एक्सटैन्शन नई दिल्ली-63 का रहने वाला हूँ। मैंने राधास्वामी पंथ के सन्त चरणसिंह जी महाराज(डेरा बाबा जैमल सिंह ब्यास जि. अमृतसर पंजाब) से सन् 1980 में नाम दान लिया। गुरू जी के बताए अनुसार 2:30 घण्टे सुबह तथा 2:30 घण्टे शाम साधना शुरू की अभ्यास बढाते-2 अधिक समय करने लगा। मेरे दोनों कुल्हे भी पीड़ा करने लग जाते थे। फिर भी परमात्मा प्राप्ति की तड़फ से कष्ट को सहन करते हुए साधना की। कुछ प्रकाश भी दिखाई देता था तथा कुछ आवाजें भी सुनने लगी। अपने पंथ की साधना को सर्वोच्च मानकर अन्य की बात नहीं सुनता था। शरीर में कष्ट, घर में निर्धनता बढ़ती गई। कोई कार्य सिद्ध नहीं होता था। महा परेशानी का जीवन जीता रहा। गुरू चरण दास जी सत्संगों में कहते थे कि प्रारब्ध का कर्म भोग तो जीव को भोगना ही पड़ता है। इस दृष्टिकोण से अपने महाकष्टमय जीवन को जी रहा था।*

*एक दिन आस्था टी.वी. चैलन पर सन्त रामपाल दास आश्रम करौंथा जि. रोहतक का सत्संग सुना तो मुझे बहुत गुस्सा आया तथा सोचा यह तो हमारे पंथ की निन्दा कर रहा है। न चाहते हुए भी देखता रहा। जब सन्त रामपाल जी ने हमारे ही पंथ की पुस्तकों को टी.वी. पर दिखाया तथा अन्य शास्त्रों से तुलना की बताया कि श्री सावन सिंह महाराज ने श्री जगत सिंह जी को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। तीन वर्ष पश्चात् श्री जगत सिंह जी का निधन हो गया उसके पश्चात श्री सावन सिंह के शिष्य श्री चरण सिंह जी जो नाते में श्री सावन सिंह के पौत्र थे को व्यास गद्दी पर नियुक्त किया गया। श्री चरण सिंह को श्री सावन सिंह जी ने नाम दान का आदेश भी नहीं दिया था। यदि कहें कि श्री जगत सिंह जी ने आदेश दिया तो श्री सावन सिंह जी का शिष्य नहीं रहा। श्री चरण सिंह जी तथा श्री जगत सिंह जी गुरु भाई थे। एक शिष्य दूसरे शिष्य को आदेश नहीं दे सकता। जैसे एक सिपाही दूसरे सिपाही को सिपाही नियुक्त नहीं कर सकता। यह प्रमाण देख कर मुझे करंट जैसा लगा कि सचमुच राधास्वामी पंथ का ज्ञान तथा साधना पूर्ण रूप से शास्त्रविरूद्ध है। वह कार्यक्रम आस्था टी.वी. पर बन्द हो गया। कुछ समय उपरान्त एक समाचार पत्र पढ़ा उसमें भी सन्त रामपाल जी ने सर्व पुस्तकों*

*का तथा पृष्ठों का हवाला देकर लेख लिखा था।*

*राधास्वामी पंथ की साधना करते-2 भी घर तथा परिवार व कारोबार में अत्यधिक परेशानियों के कारण शराब तथा तम्बाखु का आदी भी हो गया था। उस समाचार पत्र को तथा उसके सम्बन्धित पुस्तकों को लेकर में ब्यास डेरा राधास्वामी पंजाब में गया तथा सन्त रामपाल दास द्वारा बताई गई त्रुटियों के समाधान के लिए श्री रोहतास चन्द्र बहल जी तथा परिचर कथा वाचक श्री खुराना जी से मिला। उनको तुलसी साहेब हाथरस वाले द्वारा रचित घट रामायण भाग पहला के पृष्ठ 27 पर दिखाया। जिसमें लिखा है कि पाँचों नाम काल के हैं। इनसे भिन्न आदि नाम तथा सतनाम(दो नाम) हैं। उनसे ही काल जाल से छुटकारा हो सकता है। वो दो नाम हमें नहीं मिले तो कैसे काल जाल से छुटेगें। कबीर साहेब जी की वाणी दिखाई ''शब्द'' ''सन्तों शब्द शब्द बखाना, शब्द फांस फंशा सब कोई शब्द नहीं पहचाना। प्रथम ही ब्रह्म(काल) स्वईच्छा से पांचों शब्द उच्चारा, सोहं, जोत निरंजन, ररंकार, शक्ति और ओंकारा।'' जब यह पुस्तके दिखाई तो दाँतों तले उंगली दबाई। परन्तु अपनी चतुरता दिखाई की छटवां नाम अन्दर ध्यान में मिलेगा। मैंने पूछा तुलसी साहेब तो कह रहे हैं कि दो नाम और है जो पांचों से अन्य हैं। आदि नाम तथा सतनाम। फिर सातवां कहाँ मिलेगा? इस बात पर उन्होंने कहा आप गुरू जी(सन्त गुरूइन्द्र सिंह जी) से मिल कर पूछो। मैंने कहा मिलाओ मुझे गुरू जी से, टालते हुए कहा कि करोड़ों शिष्य हैं गुरू जी के, किस-2 से मिलेगें। आप पत्र द्वारा समाधान प्राप्त करना। मैं रोता हुआ वापिस दिल्ली आ गया। पत्र डाला। उसका जवाब मिला, जो बेतुका था, कहा था आप अभ्यास और बढाते जाओ अपने आप ही सब मन्त्र मिल जाएगें।*

*डेरा ब्यास के उत्तर से कोई सन्तुष्टि नहीं हुई। उसके पश्चात सन्त रामपाल जी महाराज के बताए अनुसार राधास्वामी पंथ की पुस्तकों को पढा तो रोना आने लगा। यह क्या मजाक कर रखा है।*

*1. हजूर स्वामी शिवदयाल जी का कोई गुरू नहीं था।*

*2. स्वामी जी हुक्का पीते थे।*

*3. स्वामी जी प्रेत की तरह अपनी परम शिष्या बुक्की में प्रवेश होकर बोलते थे। मृत्यु उपरान्त भी बुक्की के मुख से हुक्का पीते थे तथा भोजन भी ग्रहण करते थे। सारवचन वार्तिक वचन 4 में कहा है कि सतनाम को सतनाम, सारनाम, सतशब्द, सतलोक, सतपुरूष भी कहते हैं।*

*आदि व्याख्याओं को पढ़ कर रोना आया। क्या करूं? कहाँ जाऊँ? सन्त रामपाल दास जी महाराज ने बताया कि हठ योग सन्त मार्ग नहीं है। हठ योग का प्रमाण रूहानी फूल पुस्तक पृष्ठ-82 पर श्री जैमल सिंह जी महाराज अभ्यास में आलस आने पर अपने शरीर पर बैंत मारते थे तथा हजूर स्वामी शिवदयाल जी महाराज कई-2 दिन तक बन्द कमरे में हठ योग से साधना करते थे जो किसी भी*

*सन्त के इतिहास में नहीं है। सन्त नानक जी हल चलाते थे तथा स्मरण भी करते थे, सन्त रविदास जी जूते बनाने का कार्य भी करते थे तथा स्मरण भी करते थे तथा परमेश्वर कबीर जी ने लीला करके दिखाया की जुलाहे का कार्य करते-2 भी प्रभु नाम का स्मरण कर सकते हैं। सन्त गरीब दास जी(छुडानी वाले) हल भी चलाते थे तथा स्मरण भी करते थे। हठ योग करने से श्री तुलसीदास साहेब हाथरस वाले के दोनों पैर कमर से नीचे सुन्न हो गए थे (अधरंग हो गया था) उनके शिष्य पालकियों में बैठा कर ले जाते थे (पुस्तक जीवन चरित्र तुलसी साहेब पृष्ठ - 7 पर प्रमाण है)। यह साधना जनसाधारण नहीं कर सकता तथा शास्त्रविरूद्ध होने के कारण व्यर्थ है। पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ-126 पर श्री सावन सिंह जी ने लिखा है कि अभ्यास में आत्मा सिमट कर आँखों के पीछे चली जाती है शरीर सो जाता है तो यह शरीर मुर्दा दिखाई देता है। यही जीवित मरना है।*

*उपरोक्त प्रमाणों को आँखों देख कर मैंने(राजेन्द्र ने) परम सन्त रामपाल दास जी महाराज से उपदेश ग्रहण कर लिया। मेरे सर्व कार्य सिद्ध हो गए तथा सर्व नशा छूट गया। मेरे शरीर का रोग भी समाप्त हो गया।*

*मेरी सर्व भक्त समाज से प्रार्थना है कि सत्य को आँखों देख कर सन्त रामपाल जी महाराज से नाम दान लेकर अपना मानव जीवन सफल बनाऐं।*

*आपका अपना*
*राजेन्द्र दास*

*कुछेक श्रद्धालु कहते हैं कि क्या गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? उन श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जैसे एक डाक्टर(वैद्य) से उपचार नहीं होता है तो दूसरा डाक्टर बदलने में लाभ होता है हानि नहीं होती। ठीक इसी प्रकार गुरू को जानो। इसलिए शास्त्रविधि विरूद्ध ज्ञान वाले गुरू को त्यागकर पूर्ण गुरू धारण करना हितकर है। पाप नहीं अपितु पूण्य है। कुछ श्रद्धालु संकोच करते हैं कि हमारी तीस वर्ष की साधना का क्या होगा? अब कैसे छोड़ें? उन श्रद्धालुओं से निवेदन हैं कि विचार करें कि आपको किसी शहर में जाना है, तीस किलोमीटर जाने के बाद पता चले कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं, तो तुरंत मुड़ जाना चाहिए। नहीं तो मंजिल दूर होती जाएगी। फिर भी कोई कहे कि हम तो तीस किलोमीटर सफर तय कर चुके हैं, अब कैसे छोड़ें इस रास्ते को? यह विचार तो बालक के या शराबी के हो सकते हैं। समझदार तो तुरंत मुड़ जाएगा। इसलिए उस साधना को तुरंत त्यागकर वास्तविक शास्त्रविधि अनुसार साधना संत रामपाल जी महाराज से ग्रहण करें।*

**कृप्या पूर्ण सन्त की अन्य पहचान (2) में पढ़ें :-**

***नानक साहेब कहते हैं कि -***

सोई गुरु पूरा कहावै, दोय अख्खर का भेद बतावै। एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर जावै।

***शेष अगले अंक में ----------------***

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

## (धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

## (छठी किस्त)

**(23 अप्रैल 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)**

**(---- गतांक से आगे)**

## पूर्ण सन्त की पहचान (2)

**नानक साहेब जी कहते हैं :-**

सोई सतगुरू पूरा कहावै। दोय अख्खर का भेद बतावै।।
एक छुड़ावै एक लखावै। तो प्राणी निज घर जावै।।

*गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में उस पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष) की साधना का भी संकेत दिया है। कहा है कि उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का तो केवल ॐ-तत्-सत् इस तीन मन्त्र के जाप का निर्देश है। जिसका तीन विधि से स्मरण किया जाता है। यही साधना साधक जन सृष्टि के प्रारम्भ में करते थे। तीन मन्त्र के स्मरण की विधि तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त बताएगा। क्योंकि गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा के विषय में तत्वदर्शी सन्त से पूछो।*

*ओम् शब्द- यह ब्रह्म(क्षर पुरूष) का जाप है। तत् शब्द यह परब्रह्म का जाप है। यहाँ तत् शब्द सांकेतिक है। जो यह दास केवल उपदेशी को ही बताएगा।*

*ओम्+तत् (सांकेतिक) मिलकर सतनाम (दो अक्षर का मन्त्र) बनता है तथा सत् शब्द(सांकेतिक) तीसरा मन्त्र है इसे सारनाम भी कहते हैं। इसी को आदि नाम भी कहते हैं। जो गुप्त है उसको पूर्ण सन्त ही बताएगा जो स्मरण करने का है। ओम मन्त्र का जाप काल (ब्रह्म) के ऋण से मुक्त कराएगा (काल से छुड़वाएगा) तथा दूसरा तत्(सांकेतिक) परब्रह्म का मन्त्र है। जिसका जाप परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों को पार करने का किराया है। यह भंवर गुफा तक पहुँचाएगा अर्थात पूर्ण परमात्मा को दिखाएगा(लखाएगा) तथा तीसरा मन्त्र सारनाम पूर्ण परमात्मा के सतलोक में स्थाई करेगा। फिर साधक का जन्म-मृत्यु सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। सतलोक में पूर्ण परमात्मा अर्थात् सतपुरूष मानव सदृश आकार में है। जिसके एक रोम कूप की शोभा करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है। जीव आत्मा भी साकार मानव सदृश शरीर में रहती है तथा आत्मा के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान है। आत्मा अपने साकार परमात्मा के सिर पर चंवर करती है(प्रमाण कबीर परमेश्वर की अमृतवाणी शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' जो सन्तमत प्रकाश भाग-3 के प्रथम पृष्ठ पर लिखा है)।*

*राधास्वामी पन्थ तथा धन-धन सतगुरू पंथ वाले सन्तों का कहना है कि सतलोक में तो केवल प्रकाश ही प्रकाश है। सतपुरूष निराकार है। आत्मा सतलोक में जा कर परमात्मा में ऐसे समा जाती है जैसे बूंद समुंद्र में समा जाती है। परमात्मा और आत्मा का भिन्न अस्तित्व नहीं रहता। जबकि वास्तविकता ऊपर वर्णित है वह सही है जो परमात्मा पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) ने स्वयं बताई है। मुझ दास को अपनी कृपा से दर्शन कराए हैं।*

*उपरोक्त सतनाम जो दो अक्षर (ओम् + तत् सांकेतिक) के योग से बनता है का उदाहरण स्वयं श्री सावन सिंह जी महाराज (जो श्री खेमामल उर्फ शाहमस्ताना जी के गुरु जी है। शाहमस्ताना जी ने धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा सिरसा में स्थापित किया है) ने पुस्तक संतमत प्रकाश भाग-4 के पृष्ठ 261-262 पर लिखा है। परन्तु स्वयं ज्ञान नहीं है, ग्रंथ साहेब का प्रमाण लिया है। नानक साहेब कहते हैं कि -*

सोई सतगुरु पूरा कहावै, दोय अख्खर का भेद बतावै। एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर जावै।

***फिर कहते हैं*** - जे तू पढ़या पंडित बीना दोय अख्खर दुयनावां। प्रणवत नानक एक लंघाए जे कर सच्च समावां। ***(आदि गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 1171)***

***फिर कबीर परमेश्वर जी की वाणी का प्रमाण दिया है :-*** **कह कबीर अक्षर दुय भाख। होयगा खसम त लेयगा राख।** *(आदि गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 329)*

*फिर लिखा है :- ओम् शब्द, सोहं शब्द, सतशब्द*

*विचार करें :- उपरोक्त मंत्र पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति तथा सतलोक निवास के हैं जिसका पवित्र गीता जी में तथा पवित्र अमृत वाणी कबीर साहेब तथा प्रभु प्राप्त संतों की अमृतवाणी में भी प्रमाण है। परंतु राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरु पंथ तथा जयगुरुदेव तथा दिनोंद भिवानी आदि राधास्वामी वाले पंथों के संतों को ज्ञान नहीं है। सतनाम जो दो अक्षर के योग से बनता है उस के विषय में गोल-मोल लिख दिया कि ये आगे पारब्रह्म में हैं तथा एक अक्षर(सारनाम) के विषय में लिखा है कि वह भी पारब्रह्म में मिलेगा। स्वयं वे ''ज्योति निरंजन'', ''औंकार'', ''ररंकार'', ''सोहं'' तथा ''सतनाम'' ये पांच नाम देते हैं तथा धन-धन सतगुरू सच्चा सौदा वाले सन्त पहले तो यही पांच नाम देते थे अब, ''सतपुरुष'', ''अकाल मूर्ति'', ''शब्द स्वरूपी राम'' ये अन्य तीन नाम देते हैं। दिनोंद भिवानी वाले ताराचन्द जी महाराज वाला पंथ केवल ''राधास्वामी'' नाम देता है, स्वयं दो अख्खर के वास्तविक मंत्र से अपरिचित हैं। इसलिए कबीर परमेश्वर की अमृतवाणी तथा श्री नानक जी की अमृतवाणी के आधार से जो दो अक्षर का भेद नहीं जानता वह पूरा गुरु (पूर्ण संत) नहीं है। इससे सिद्ध हुआ कि राधा स्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा पंथ तथा श्री ठाकुर सिंह, श्री कृपाल सिंह तथा जय गुरूदेव मथुरा वाले तथा दिनोद भिवानी वाले राधास्वामी के सन्त जी पूर्ण सन्त नहीं हैं क्योंकि उनको दो अक्षर का ज्ञान नहीं है।*

*पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 262 में लिखा है सतनाम हमारी जाति है, सतपुरूष हमारा धर्म है, सच्चखण्ड(सतलोक) हमारा देश है। यहाँ पर सतनाम, सतपुरूष, सच्चखण्ड तीनों को भिन्न-2 बताया है। इसी पुस्तक के पृष्ठ 21 पर सतनाम को स्थान कहा है। पुस्तक सारवचन वार्तिक प्रथम भाग के वचन 4 में सतनाम, सच्चखण्ड, सतपुरूष, सारशब्द, सतशब्द को एक बताया है। क्या ये विचार परम सन्त के हो सकते हैं? {कृप्या पढ़ें सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261-262 से फोटो कापी इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 95-96 पर}*

*अधूरे सन्तों के विषय में पूज्य कबीर परमेश्वर जी कहते हैं:-*

सतगुरू बिन काहु न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुस छिड़ै मूढ किसाना।
सतगुरू बिन बेद पढें जो प्राणी, समझे ना सार रहे अज्ञानी।
वस्तु कहीं खोजे कहीं, किस विद्य लागे हाथ।
एक पलक में पाईए, भेदी लिजै साथ।

*एक समय एक व्यक्ति की अचानक मृत्यु हो गई। उसने बहुत सारा धन जमीन में दबा रखा था। उस का विवरण एक बही(पैड) में लिखा था जो सांकेतिक था। उस व्यक्ति ने अपने मकान के एक कोने में मन्दिर बनवा रखा था। बही में लिखा था चाँदनी चौदस रात्रि के बारह बजे मन्दिर के गुमज में सर्व धन दबा रखा है। लड़कों ने रात्री में मन्दिर का गुमज फोड़ा। उसमें कुछ नहीं पाया। उनके पिता का एक दोस्त दूसरे गांव में रहता था। बच्चों ने उसको सर्व विवरण बताया तथा कहा कि पिता जी ने झूठ लिखा है। मन्दिर के गुमज में धन नहीं मिला। पिता जी के दोस्त ने उस लेख को पढ़ा तथा कहा कि आप मन्दिर के गुमज का पुनर् निर्माण् करवाएं। मन्दिर के गुमज का पुनर् निर्माण होने के पश्चात् चांदनी चौदस (शुद्धि चतुर्दशी) को रात्रि के बारह बजे जहां पर गुमज की छाया थी उस स्थान को खोदा गया तो सर्व धन मिल गया।*

*अपने सद्ग्रन्थों में प्रभु ज्ञान का अपार धन छुपा है जो सांकेतिक है। वह पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) के बिना किसी को नहीं मिला। इसीलिए राधास्वामी तथा धन-धन सतगुरू वाले पंथों के सन्तों ने श्रद्धालुओं को भ्रमित कर दिया कि वेद तथा गीता आदि शास्त्र तो व्यर्थ हैं। कबीर परमेश्वर तो कहते हैं :-*

वेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहीं।

*भावार्थ है कि वेद तथा गीता जी व कुर्आन झूठे नहीं हैं। जो इन्हें समझ नहीं सके वे अज्ञानी हैं। राधास्वामी तथा धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा वाले पंथों के सन्त जी कहते हैं कि गीता व वेदों में पूर्ण परमात्मा का ज्ञान नहीं है। स्वयं लोक वेद(दंत कथाओं) के आधार पर ढेर सारी पुस्तकें रच कर गलत ज्ञान प्रचार कर डाला। अब श्रद्धालुओं को शास्त्रों का ज्ञान समझाना कठिन हो रहा है। वर्तमान में मुझ दास को पूर्ण परमात्मा ने आप सर्व प्रभु प्रेमियों को छुपा धन बताने भेजा है। कृप्या अविलम्ब प्राप्त करें। वर्तमान में दो अक्षर से बने ''सतनाम'' का तथा एक अक्षर ''सारनाम''*

*का केवल मुझ दास (रामपाल दास) ही को दान करने का अधिकार पूज्य गुरूदेव तथा परमात्मा कबीर साहेब ने स्वयं प्रदान किया है। मुझ दास से विमुख एक-दो पापात्माऐं तीनों मंत्रों को प्राप्त करके स्वयंभू गुरू बन कर नाम दान करने लगे हैं। वे अधिकारी नहीं। उन्हें भक्त समाज के पक्के दुश्मन जानना। न तो वे स्वयं पार हो सकते हैं तथा न ही उनसे उपदेश प्राप्त भक्तजन पार हो सकते हैं। ऐसे ही लालची व्यक्तियों ने परमात्मा  कबीर जी के साथ भी धोखा किया था जो अभी तक तत्वज्ञान समझने में बाधक सिद्ध हो रहा है। उनके तो दर्शन करना भी पाप है। जिनके विषय में ''परमेश्वर का सार संदेश'' पुस्तक के अध्याय पन्द्रह में ''शंका समाधान विषय'' में विस्तृत वर्णन है। एक समय में सन्त एक ही होता है वह पूरे विश्व को नाम देकर पार कर सकता है। जैसे परमपूज्य कबीर परमेश्वर जी काशी में आए थे उस समय पूरे विश्व में अकेले ही नाम दान करते थे। उनके चौसठ लाख शिष्य सर्व धर्मों के हुए थे। अपने रहते उन्होंने कोई उत्तराधिकारी नहीं बनाया था। इसलिए नकली संतों से सावधान रहें।*

*किस्त संख्या चार तथा किस्त संख्या छः के प्रमाणों से आपजी को स्पष्ट हुआ कि पूर्ण संत की क्या पहचान है ?*

''कैसे मिले भगवान?''

*शेष अगले अंक में ----------------*

है। गुरु ग्रन्थ साहिब में बड़े गहरे और गुप्त रहस्य हैं। एक स्थान पर आता है :

बावन अच्छर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहे।
ऐ अक्खर खिर जाहेंगे ओय अक्खर इन मह नाहे।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 340)

बावन अक्षर संस्कृत भाषा के हैं। शायद ही कोई ऐसी भाषा हो, जिसके बावन अक्षर हों। इस संसार का सारा मसाला बावन अक्षरों में आ जाता है। पिण्ड, अण्ड का हाल तो बावन अक्षरों में आ गया। आगे दो अक्षर और हैं जो पारब्रह्म में हैं। इसके विषय में ग्रन्थ साहिब में लिखा है :

सोई गुरु पूरा कहावै। दोय अक्खर का भेद बतावै।
एक छुड़ावै एक लखावै। तो प्राणी निज घर को पावै।

फिर कहते हैं :

जे तू पढ़या पंडित बीना दुय अक्खर दुय नावां।
प्रणवत नानक एक लंघाए जे कर सच समावां।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 1171)

यदि तुम गुणी हो, ज्ञानी हो तो वे अक्षर बताओ ? वे अक्षर पारब्रह्म में हैं। एक अक्षर ने दुनिया बनाई है और एक ने सतलोक बनाया है। यही कबीर साहिब कहते हैं :

कह कबीर अक्षर दुय भाख। होयगा खसम त लेयगा राख।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 329)

गुरु नानक साहिब भी कहते हैं :

इक अक्खर हरि मन वसै नानक होत निहाल।

*(पुस्तक 'संतमत प्रकाश' भाग-4 पृष्ठ 261 से फोटो कॉपी)*

एक स्थान पर फिर गुरु साहिब कहते हैं :

बेद कतेब सिमृत सभ सासत इन पढ़या मुकत न होई।
एक अक्खर जो गुरमुख जापै तिस की निरमल सोई।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 747)

वह अक्षर आपके अन्दर है और पारब्रह्म में जाकर मिलेगा। यह धर्म हमारा धर्म नहीं, यह जाति हमारी जाति नहीं। यह देश हमारा देश नहीं। हमारा देश सचखण्ड, हमारी ज़ाति सतनाम और हमारा धर्म सत्पुरुष है यह पराया देश छोड़कर आत्मा अपने उस देश को जा रही है।

**सूरत साफ़ उड़ी ऊँचे को। छूट गया सब महल पुराना॥**

अब आत्मा इस पुराने महल को, जिसमें लाखों जन्म रही, छोड़कर सतनाम में जा रही है।

**आगे चढ़ चढ़ अधर समानी। शब्द शब्द का मर्म पिछाना॥**

अन्दर शब्द के दरजे हैं–ओम शब्द, सोहं शब्द, सत शब्द। आत्मा दरजे के अनुसार अपने असली मकसद भाव असली देश को जा रही है।

*(पुस्तक 'संतमत प्रकाश' भाग-4 पृष्ठ 262 से फोटो कॉपी)*

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु
## (धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)
## (सातवीं किस्त)

(-- गतांक से आगे)

### ''कैसे मिले भगवान?''

*सावधान :- राधास्वामी पंथ में पाँच नाम देते हैं। ज्योति निरंजन, ओंकार, रंरंकार, सोहं और सतनाम, इसी पंथ की शाखा धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा सिरसा वाले अब तीन नाम 1. सतपुरूष 2. अकाल मूर्ति 3. शब्द स्वरूपी राम तथा जगमालवाली वाले ''धन-धन सतगुरू तेरा ही आसरा'' एक नाम देते हैं, पहले पांच नाम ही दान किए जाते थे। दिनोंद (जिला भिवानी) हरियाणा में श्री ताराचन्द जी वाला पंथ एक ''राधा स्वामी'' नाम देता है इसी को सारनाम बताता है*

*श्री आसाराम जी (अहमदाबाद वाला) सोहं मन्त्र को दो भागों में स्मरण करने को कहता है तथा कई अन्य मन्त्र भी देता है। जिन में से रूची अनुसार साधक को स्वयं चुनना होता है।*

*1. गायत्री मन्त्र (ओम् भूर्भुवः ------) 2. ओम् नमः शिवाय 3. ओम् नमः भगवते वासुदेवाय 4.------*

*श्री सुधांशु जी (बकरवाला दिल्ली वाले) हरि ओम्-तत्-सत् का जाप मन्त्र देता है। श्री शिव भगवान को अजन्मा-अजर-अमर अर्थात् मृत्युंज्य तथा सर्वेश्वर आदि बताते हैं। जब कि श्री देवी महापुराण तथा शिव महापुराण में श्री शिव का जन्म मृत्यु लिखा है।*

*''निरंकारी '' पंथ वाले एक नाम'' तू ही एक निरंकार। मैं तेरी शरण मुझे बख्स लो'' देते हैं तथा परमात्मा को निराकार बताते हैं। जबकि परमात्मा सशरीर है।*

*उपरोक्त मन्त्र शास्त्रविरूद्ध होने से मोक्ष दायक नहीं हैं।*

*''हंसा देश पंथ''(श्री सतपाल जी महाराज पंजाबी बाग दिल्ली वाला तथा श्री प्रेम रावत उर्फ बालयोगेश्वर जी महरौली दिल्ली वाला) हंस का जाप दो हिस्से करके जाप करने को देते हैं। इसको उल्टा करके सहं करके सोहं को भी दो हिस्से करके जाप करने को देते है तथा आँख बन्द करके हठ योग क्रियाऐं देते हैं जो शास्त्रविरूद्ध हैं मोक्ष दायक नहीं हैं।*

*भावार्थ है कि ओम्-तत्(सांकेतिक) तथा सत्(सांकेतिक) के अतिरिक्त सर्व साधना शास्त्र विरूद्ध अर्थात् मनमाना आचरण (पूजा) है। जो पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक (मन्त्र) 23 में व्यर्थ कहा है तथा (श्लोक) मन्त्र 24 में कहा है कि परमात्मा की*

*भक्ति के लिए शास्त्रों(वेदों) को ही आधार मानें।*

*उपरोक्त साधना शास्त्र विरूद्ध है, मोक्ष दायक नहीं है।*

कृप्या पढ़ें मोक्ष दायक साधना :-

*सर्वप्रथम उपदेश प्राप्त करने वाले को मानव शरीर में बने कमलों को खोलने का मन्त्र जाप दिया जाएगा। जिससे आपकी कुण्डलनी शक्ति जागृत हो जाएगी अर्थात् कमल खिल जाएगें। आप का त्रिकुटी तक जाने का रास्ता साफ हो जाएगा। मानव शरीर में कमल (चक्र) बने हैं। 1. मूल कमल में देव (स्वामी) गणेश जी का कार्यालय है, 2. स्वाद कमल में भगवान (स्वामी) ब्रह्मा जी का कार्यालय है, 3.नाभि कमल में भगवान(स्वामी) विष्णु जी का कार्यालय है, 4. हृदय कमल में भगवान(स्वामी) शिव जी का कार्यालय है, 5. कण्ठ कमल में शक्ति दुर्गा का कार्यालय है। इन पांचों शक्तियों के पांच नाम (मंत्र) जाप के हैं जो आपको प्रथम दिए जाएगें। जिनके जाप से आपको आगे जाने का रास्ता मिलेगा अर्थात् आपकी कुण्डलनी शक्ति जागृत हो जाएगी। दूसरे शब्दों में आपके कमल खुल जाएंगे।(योगीजनों ने इन्हीं कमलों को हठ योग से खोलने का व्यर्थ प्रयत्न किया।) तब आप त्रिकुटी पर पहुंच पाओगे। यह तो प्राथमिक पढ़ाई है जो पांच नामों की है। केवल बात बनाने से कि हम तो सीधे त्रिकुटी में जाते हैं, कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा।*

*जैसे हम विदेश(काल लोक) में आए हैं। स्वदेश(सतलोक) जाना है। हमारे ऊपर विदेश के कार्यालयों (बिजली-पानी-टेलिफोन आदि) का बिल बकाया है तथा कुछ ऋण भी शेष है। प्रथम ऋण मुक्त प्रमाण पत्र लेने होंगे। फिर आप त्रिकुटी अर्न्तराष्ट्रीय हवाई अड्डे (इन्टरनैशल एयर पोर्ट) पर पहुंच सकते हैं अन्यथा नहीं। आप यहां विदेश (काल के लोक) में ऋणी हो गए हैं। आप पर बहुत कर्जा है। जिस कारण से आपकी सर्व सुविधाएं छीनी जा चुकी हैं। जैसे बिजली का बिल न भरने से कनेक्शन कट जाता है। लाभ समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार आपके सर्व कार्य उल्ट-पुल्ट हो गए हैं। सतगुरू आपका जमानती (गारन्टर) बनेगा तथा श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी आदि से आपके सर्व लाभ पुनर् चालु कराएगा। फिर उपरोक्त पांचों शक्तियों के नाम जाप की मजदूरी करके आपने ऋण मुक्त भी होना है तथा जब तक इस विदेश(काल लोक) में रहोगे सांसारिक सुविधाएं भी प्राप्त करते रहना है। सतनाम दो अक्षर (मन्त्र) के जाप (ओम् + तत्) में एक ओम् (ॐ) अक्षर है। इस ओम् नाम के जाप की कमाई से ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों का ऋण चुकाना है। हम पहले ओम् नाम की कमाई स्वर्ग-महास्वर्ग में खर्च करते रहे। अब हम ओम् (ॐ) मंत्र के जाप की पूजा ब्रह्म (काल) को दे देंगे। यह हमें छोड़ देगा। भावार्थ है कि सतनाम के इस एक अक्षर ''ओम्'' के जाप की कमाई साधक को काल जाल से छुड़ाएगी। आप जी ने श्री नानक जी की वाणी में पढ़ा कि पूरा सतगुरू दो अक्षर का भेद बताएगा एक अक्षर छुड़ाएगा दूसरा तत् मन्त्र (जो सांकेतिक है) प्रभु को भंवर गुफा से पारदर्शक पर्त के पार*

*सतलोक में सतपुरूष को लखाएगा अर्थात् दर्शन कराएगा।*

*यह एक अक्षर ओम् ही ब्रह्म अर्थात् काल का वास्तविक जाप का मन्त्र है का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में है कि ''ओम् इति एक अक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्। य प्रयाति त्यजन देहम् सः याति परमाम् गतिम्।''(8/13) शब्दार्थ :- काल ब्रह्म ने कहा है कि जो मुझ ब्रह्म के एक अक्षर ओम्(ॐ) का जाप अन्तिम स्वांस तक करता है वह मेरे वाली भक्ति का पूर्ण लाभ प्राप्त करता है।*

*गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में गीता ज्ञान दाता (काल-ब्रह्म) ने कहा है कि यदि तूने उस परमात्मा की शरण में जाना है तो (सर्व धर्मान् परित्यज्य माम्) मेरे स्तर की सर्व धार्मिक पूजाऐं अर्थात् ओम् नाम का जाप यज्ञ आदि मुझमें छोड़ कर (एकम् शरणम्) उस एक सर्वशक्तिमान की शरण में (व्रज) जा(अहम् त्वा सर्व पापेभ्यः मोक्षयिष्यामि मा शुचः) मैं तुझे सर्व पापों से छुड़ा दूंगा, तू चिंता मत कर। जब हम शरीर त्याग कर सतलोक को प्रस्थान करेंगे तब काल(ब्रह्म) को ओम् (ॐ) नाम की कमाई त्रिकुटी पर सौंप देंगे। यह काल हमें ऋण मुक्त कर देगा (पवित्र गीता जी का हिन्दी अनुवाद कर्ताओं ने गलत अनुवाद किया है। गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में व्रज का अर्थ आना किया है जबकि व्रज का अर्थ जाना होता है) फिर हम तत् मन्त्र(जो सांकेतिक है) के जाप की कमाई परब्रह्म को दे देगें। वह हमें अपने सात शंख ब्रह्मण्डों से पार करके भंवर गुफा तक पहुंचा देगा। वहां पर पूर्ण परमात्मा को हम केवल देख(लख) सकते हैं। जैसे शीशे के पार वस्तु को देखा जा सकता है प्राप्त नहीं किया जा सकता। तत् पश्चात सारनाम के जाप की कमाई भंवर गुफा से पार करके सतलोक में स्थाई स्थान प्राप्त कराएगी। फिर अपना जन्म मृत्यु कभी नहीं होगा। सतपुरुष (पूर्ण परमात्मा) की प्राप्ति होगी। सतलोक में सर्व आत्माओं का साकार अभौतिक शरीर है जो एक नूर तत्व से बना है पूर्ण परमात्मा का भी (अकायम् अश्नाविरम्) अभौतिक नूरी शरीर है परन्तु आत्मा और पूर्ण परमात्मा के शरीर के प्रकाश का अत्यधिक अन्तर है ऊपर के अन्य(अलख, अगम, अनामय) लोकों में जाने की भक्ति वहां सतलोक में प्रारम्भ होगी। वहां सतलोक में कोई कष्ट नहीं है। इसलिए ऊपर के लोकों की प्राप्ति की ईच्छा कोई बिरला ही करता है।*

*तत्व ज्ञान के अभाव से सर्व पवित्र हिन्दु समाज तथा राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरु सच्चा-सौदा तथा अन्य पंथों के पवित्र आत्मा संत तथा श्रद्धालु अपना जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। सर्व से नम्र निवेदन है कि वह वास्तविक दो अक्षर(ओम् + तत् सांकेतिक) का मंत्र जाप तथा एक अक्षर सारनाम जगत् गुरू तत्वदर्शी सन्त रामपाल दास जी महाराज के पास है तथा इस दो मंत्र के योग से बने मंत्र(जिसे सतनाम कहते हैं) की कमाई पूरी होने के पश्चात आपको सत्शब्द अर्थात सारनाम जो एक अक्षर का है दिया जाएगा। फिर परमात्मा प्राप्ति होगी।*

*उदाहरण :- जैसे जल को प्राप्त करने के लिए नल लगाना होता है। दो अक्षर के*

*नाम को बोकी लगाना जानो। ओम + तत् (जिसमें तत् मंत्र अन्य है जो साधक को बताया जाएगा) का जाप स्वांस-उस्वांस से किया जाता है।*

***कबीर साहेब जी कहते हैं कि*** ''स्वांस–उस्वांस में जाप जपो, व्यर्था स्वांस न खो। न जाने इस स्वांस को आवन हो के न हो।।''

***दो अक्षर से बने सतनाम से स्वांस-उस्वांस की बोकी लगाई जाएगी जो पाईप को जल तक पहुंचाएगी। फिर सारनाम रूपी हैंड पंप की मशीन लगाई जाएगी। उस सारनाम का भी स्मरण करना होता है। जैसे हैंड पम्प की हत्थी को हिला-हिला कर गति दी जाती है तब पानी प्राप्त होता है। इसी प्रकार सारनाम फिर एक ही रह जाता है उसका स्मरण करने से सतपुरूष(अविनाशी परमात्मा) की प्राप्ति होती है। पवित्र गीता जी के अध्याय 17 श्लोक 23 में यह भी स्पष्ट किया है कि ओम्-तत्-सत् मंत्र को तीन विधि से स्मरण किया जाता है। यह विधि केवल पूर्ण सन्त रामपाल दास जी महाराज के पास है जिसमें तीनों मंत्रों ओम् + तत् (सतनाम) है तथा सत्शब्द(जो सारनाम) है को तीन प्रकार से ही स्मरण करना होता है।***

***कृप्या किस्त सं. 6 में प्रकाशित फोटो कॉपी ''सन्तमत प्रकाश'' भाग 4 पृष्ठ 262 में पढें जिसमें तीनों मन्त्रों का स्पष्ट वर्णन भी किया है कि एक ओम् शब्द दूसरा सोहं शब्द तीसरा सतशब्द। राधास्वामी पंथ वालों को दो अक्षर से बने सतनाम का तथा आदि नाम (जिसे सारनाम भी कहते हैं) का ज्ञान नहीं वे पाँचों नाम काल के देते हैं। जिसके विषय में तुलसी साहेब कृत घट रामायाण प्रथम भाग पृष्ठ-27 पर लिखा है कि पाँचों नाम काल के हैं इन पाँचों से भिन्न सतनाम तथा आदि नाम अर्थात् सारनाम है। जबकी आदि ग्रन्थ साहेब तथा कबीर जी की वाणी का प्रमाण बताया है वह सही है कि पूरा सन्त दो अक्षर का नाम जाप(ओम्+तत्) बताएगा। वही पूरा सन्त होगा।***

***श्री नानक साहेब जी की वाणी में स्पष्ट है कि*** "इक अख्खर हरि मन वसै नानक होत निहाल'' ***फिर ग्रन्थ साहेब के पृष्ठ 747 की वाणी का प्रमाण लिखा है कि*** ''एक अख्खर जो गुरू मुख जापै तिस की निरमल होई''।

***उपरोक्त वाणी स्पष्ट कर रही है कि एक अक्षर(जो सारनाम है) है वह भी गुरू मुख(पूर्ण सन्त के शिष्य) को जाप करना होता है। राधास्वामी पंथ वाले इसे वाणी को अपनी शास्त्रविरूद्ध साधना से जोड़ते हैं कि एक धुन अन्दर सुनने के विषय में कहा है ''एक अख्खर का जाप करै'' विचार करें धुन का जाप नहीं होता। वह तो केवल सुनी जाती है। जाप का संकेत एक मन्त्र सारनाम की ओर न की धुन सुनने के लिए है। पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261,262 की फोटो कापी में श्री सावन सिंह जी ने कहा है कि दो अक्षर पारब्रह्म में हैं। फिर कहा है कि वह एक अक्षर भी पारब्रह्म में मिलेगा। आप स्वयं विचार करें राधास्वामी पंथ के सन्त ज्ञानी है या अज्ञानी।***

***परंतु पूर्ण परमात्मा को प्राप्ति की विधि स्वयं पूर्ण परमात्मा कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ने बताई है जो वर्तमान में पूरे विश्व में केवल पूर्ण सन्त रामपाल दास जी***

*महाराज को प्राप्त है। अविलम्ब तथा निःशुल्क प्राप्त करें। यदि कोई उपरोक्त विधि को सन्त रामपाल दास जी महाराज से प्राप्त करके स्वयंभू गुरू बन कर नामदान करता है तो उसे अनाधिकारी जान कर सावधान रहें। वह अपना तथा भोले श्रद्धालुओं का जीवन नाशक है। ऐसे-2 स्वयंभू नकली सन्तों ने प्रभु मार्ग को बिगाड़ रखा है। जिस समय भक्त समाज को ज्ञान हो जाएगा कि ऐसे नकली गुरू मानव जीवन के लिए कितने घातक हैं तब इन नकली गुरूओं को छुपने को स्थान नहीं मिलेगा। यह जागृति अति शीघ्र आने वाली है। उन्हीं के शिष्य इन सर्व शास्त्रविरूद्ध साधना बताने वाले गुरूओं तथा स्वयंभू गुरूओं को फाटक में रोकेगें ताकि ये समाज को गुमराह न कर सकें। सर्व भक्त समाज से प्रार्थना है कि झूठे तथा कपटी गुरूओं को त्याग कर सन्त रामपाल दास जी महाराज से सत्य साधना निःशुल्क प्राप्त करें।*

*कुछेक श्रद्धालु कहते हैं कि क्या गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? उन श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जैसे एक डाक्टर(वैद्य) से उपचार नहीं होता है तो दूसरा डाक्टर बदलने में लाभ होता है हानि नहीं होती ठीक इसी प्रकार गुरू को जानो। इसलिए शास्त्रविधि विरूद्ध ज्ञान वाले गुरू को त्यागकर पूर्ण गुरू धारण करना हितकर है। पाप नहीं अपितु पुण्य है। कुछ श्रद्धालु संकोच करते हैं कि हमारी तीस वर्ष की साधना का क्या होगा? अब कैसे छोड़ें? उन श्रद्धालुओं से निवेदन हैं कि विचार करें कि आपको किसी शहर में जाना है, तीस किलोमीटर जाने के बाद पता चले कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं, तो तुरंत मुड़ जाना चाहिए। नहीं तो मंजिल दूर होती जाएगी। फिर भी कोई कहे कि हम तो तीस किलोमीटर सफर तय कर चुके हैं, अब कैसे छोड़ें इस रास्ते को? यह विचार तो बालक के या शराबी के हो सकते हैं। समझदार तो तुरंत मुड़ जाएगा। इसलिए उस साधना को तुरंत त्यागकर वास्तविक शास्त्रविधि अनुसार साधना ग्रहण करें।*

एक राधास्वामी पंथी से ज्ञान चर्चा :-

*शेष अगले अंक में ----------------*

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

## (धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

## (आठवीं किस्त)

(---- गतांक से आगे)

### ''राधास्वामी पंथी से ज्ञान चर्चा''

*राधास्वामी पंथी भक्त दयासिंह(गाँव छोटा सिंगपुरा जि. रोहतक, हरयाणा) से ज्ञान चर्चा हुई जो निम्न है।*

*भक्त दयासिंह जी ने सन्त श्री दर्शन सिंह(सावन कृपाल रूहानी मिशन दिल्ली) से सन् 1983 में उपदेश प्राप्त किया। उनके द्वारा बताए भक्ति मार्ग पर अटूट श्रद्धा से लगा था।*

*मुझ दास(रामपाल दास) को सन् 1988 को नाम दान(एक परम सन्त कबीर पंथी स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज से) प्राप्त हुआ। सन् 1993 को मुझ दास को प्रचार तथा पाठ की आज्ञा प्रदान हुई तथा 1994 को नामदान करने की आज्ञा सद्गुरू रामदेवानन्द जी से प्राप्त हुई।*

*भक्त दयासिंह के रिश्तेदार ने मुझ दास से नाम प्राप्त है। उसने अपनी बहन(जिसकी शादी भक्त दयासिंह के लड़के से हुई है) के घर गाँव छोटा सिंगपुरा में सत्संग व पाठ करवाया उस समय भक्त दया सिंह जी से ज्ञान चर्चा हुई। सत्संग के पश्चात भक्त दयासिंह जी ने शंका व्यक्त की।*

*प्रश्न :- महाराज जी मैंने राधास्वामी पंथ से नामदान प्राप्त है। हमारे महाराज जी तो कहते है कि सतलोक में केवल प्रकाश ही प्रकाश है। सतपुरूष निराकार है। वही सतपुरूष जब सन्त रूप धर कर अपना ज्ञान देने आता है तब मनुष्य रूप में प्रकट होता है तथा फिर वापिस सतलोक सतनाम में जाकर ऐसे समा जाता है जैसे बूंद समुन्द्र में समा जाती है। जो उनके ज्ञान अनुसार भक्ति करता है वह आत्मा भी सच्चखण्ड(सतलोक) में ऐसे ही समुन्द्र में बूंद की तरह समा जाती है। वहाँ पर परमात्मा तथा आत्मा एक हो जाते हैं। यह देखो महाराज दर्शन सिंह जी के द्वारा दिया निर्मल ज्ञान। यह कह कर उस पुण्यात्मा दयासिंह जी ने पुस्तकः- जीवन चरित्र बाबा जैमलसिंह लेखक कृपाल सिंह जी, जो श्री दर्शन सिंह जी के पूज्य गुरू जी हैं तथा पुस्तक ''परमात्मा का साक्षात्कार'' जिसमें श्री दर्शन सिंह जी महाराज के सत्संग वचन है, दिखाई।*

*पुस्तक जीवन चरित्र बाबा जैमलसिंह पृष्ठ 102,103 पर सृष्टि रचना लिखी हैः- कृपा पढ़ें फोटो कापी 102,103 जिसमें लिखा है कि परमात्मा पहले निराकार था।*

*वही अनाम प्रभु साकार हुआ तो ऊपर के तीन मण्डल अगम लोक-अलख लोक और सतनाम (ये सन्त सतलोक को सतनाम भी कहते हैं) बन गया। ज्योति स्वरूप हो गया तथा धुन हो गया।*

*फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ 20 पर लिखा है कि परमात्मा ने इंसान बनाए। परमात्मा ने इंसान को अपने रूप के अनुसार बनाया।*

*कृप्या देखें पुस्तक जीवन चरित्र बाबा जैमलसिंह पृष्ठ 20 से फोटो कापी*

*उपरोक्त पुस्तकों से ही भक्त दया सिंह जी को समझाया कि श्री कृपाल सिंह जी राधास्वामी वाले ने सृष्टि रचना में कहा है कि सतपुरूष निराकार है फिर कहा है कि परमात्मा ने मनुष्य को अपने रूप के अनुसार बनाया है। जिस से परमात्मा मनुष्य जैसे शरीर का सिद्ध हुआ। अपने विचारों को आप ही गलत सिद्ध किया है।*

*कृप्या देखें लेखक दर्शन सिह जी महाराज राधास्वामी पंथी की पुस्तक ''परमात्मा का साक्षात्कार'' पृष्ठ 1,2 से फोटो कापी। इसी पुस्तक के पृष्ठ 109 पर।*

*जिसमें एक बार तो लिखा है कि हम परमात्मा को देख सकते हैं तथा ऐसे बातें कर सकते हैं जैसे आप और हम बातें कर रहे हैं। इस विचार में भगवान को मानव जैसा सिद्ध किया है। फिर कहा है कि परमात्मा आकार रहित है। परमात्मा केवल प्रकाश है परमात्मा का प्रकाश(ज्योति पुंज) अवर्णनीय है। फिर कहा है शास्त्रों में बताया है कि परमात्मा के एक रोम की शोभा करोड़ सूर्यों तथा चन्द्रमाओं की मिली-जुली रोशनी से भी अधिक तेजोमय है।*

*विचार करें:- उपरोक्त विचार तो बिल्कुल अबोध बालक ही व्यक्त कर सकता है।*

*जैसे कोई प्रश्न करे की सूर्य कैसा है? उत्तर मिले निराकार है। केवल उसका प्रकाश ही देखा जा सकता है। विचार करें सूर्य बिना प्रकाश किसका देखा?*

*परमात्मा का प्रकाश अवर्णनीय कहा है तो परमात्मा बिना प्रकाश, किसका देखा? परमात्मा के रोम के प्रकाश की शोभा का वर्णन किया है इससे भी परमात्मा मनुष्य सदृश सिद्ध हुआ। रोम से मनुष्य जैसे आकार का प्रमाण है।*

*पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 264 पर भी श्री सावन सिंह जी महाराज(जो श्री कृपाल सिंह जी के गुरू जी थे) ने कहा है कि रानी इन्दुमति कबीर साहेब की शिष्या थी। पहले कबीर साहेब परमात्मा के नूर में समाए बाद में इन्द्रमति परमात्मा के नूर में समाई। इन्द्रमति ने कबीर साहेब को अकालपुरूष अर्थात सतपुरूष रूप में देखा तब कहा कि मुझे नहीं पता था कि आप ही सतपुरूष अर्थात पूर्ण परमात्मा है। आपने पहले क्यों नहीं बताया।*

*कृप्या देखें पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 264 से फोटो कापी। इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 124 पर ।*

*श्री सावन सिंह जी सच्चाई को छुपा नहीं सके। भले ही उन्होंने अपने विचारों की पुष्टि करने का भी प्रयत्न किया है कि सतलोक में परमात्मा निराकार है केवल प्रकाश*

*ही प्रकाश है। यदि कबीर साहेब परमात्मा के नूर में समा गए होते तथा इन्द्रमति भी परमात्मा के नूर में(समुन्द्र में बूंद की तरह) समा गई होती तो एक दूसरे को सतलोक में कैसे देखते? वास्तव में परमात्मा साकार है। वह मानव सदृश शरीर युक्त है। उस का वास्तविक नाम कविर्देव(कबीर देव) है। सतलोक में सतपुरूष वाली उपाधी वाले शरीर के एक रोम की रोशनी करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं की रोशनी से भी अधिक है। यहाँ काल लोक में वही परमात्मा अपने तेजोमय शरीर पर हल्के प्रकाश का अन्य खोल(चोला) डाल कर आता है। जैसे बल्ब के ऊपर कोई प्लास्टिक का खोल चढा दिया जाए तो रोशनी नाम मात्र रह जाती है। ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कबीर जी की स्थिति है। वे सशरीर आते हैं सशरीर जाते हैं तथा सतलोक में व ऊपर के अन्य(अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोक) लोकों में भी स्वयं ही अन्य तेजोमय शरीर धारण कर लेते हैं।*

*राधास्वामी पंथ तथा इसकी शाखाओं का ज्ञान बिल्कुल जीरो(शुन्य) है। करोड़ों व्यक्तियों के अनमोल मानव जीव को व्यर्थ कर डाला। अब भी समय है भक्त समाज सावधान हो कर विचार करें तथा सत्य साधना मुझ दास(रामपाल दास) के पास है अविलम्ब व निःशुल्क प्राप्त करें।*

भक्त दया सिंह दास(राधास्वामी पंथी) की आत्मकथा :-

*शेष अगले अंक में ----------------*

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु
## (धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)
## (नौवीं किस्त)

(---- गतांक से आगे)

### भक्त दया सिंह दास(राधास्वामी पंथी) की आत्मकथा

*मैं दया सिंह गाँव छोटा सिंहपुरा जि. रोहतक का रहने वाला हूँ। मैंने राधास्वामी पंथ में श्री दर्शन सिंह जी महाराज(दिल्ली वाले) से सन् 1983 में पाँच नामों का उपदेश लिया। सन्त दर्शन सिंह जी के बताए अनुसार साधना की धुन सुनने के लिए कई-कई घण्टों कान-आँख बंद करके साधना करता रहा। कुछ धुने तो सुनी परन्तु कान खराब हो गये। बहुत कम सुनता है। मेरे रिश्तेदार ने सन्त रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम करौंथा से नाम उपदेश ले रखा था। वह मुझसे कहता था कि मौसा जी आप भी हमारे गुरू जी से नाम ले लो। आपकी साधना तथा नाम गलत हैं। मैं कहता था। वाह जी वाह! क्या बात करता है। हमारे(राधास्वामी) पंथ में लाखों की संख्या में संगत है। जिनमें कर्नल साहब, कमिश्नर साहब, तहसीलदार साहब, मजिस्ट्रेट साहब तथा वकील साहब भी उपदेश लिये हैं। क्या वे मूर्ख हैं ? मेरे से फिर मत कहना गुरू बदलने को।*

*कुछ दिन बाद मेरा एक पुत्र ट्रैक्टर चला रहा था रेल की लाईन पार करने लगा उस सड़क पर रेल की फाटक नहीं लगी थी। रेलगाड़ी से टकराकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। मेरे रिश्तेदार ने मुझे फिर समझाया मैं नही माना परन्तु मेरे अन्य परिवार के सर्व सदस्यों ने सन्त रामपाल जी महाराज से उपदेश ले लिया। मैं भी उनके साथ सतलोक आश्रम में जाने लगा। स्पीकर के साथ बैठकर कान लगा कर सत्संग सुनता था। जो त्रुटियाँ सन्त रामपाल जी महाराज हमारे राधास्वामी पंथ की पुस्तकों में बताते थे। उन पुस्तकों का नाम तथा पृष्ठ व वचन संख्या नोट कर लेता फिर घर जाकर मिलान करता तो सत्संग में बताया विवरण सत्य मिलता तथा ढेर सारी त्रुटियाँ राधास्वामी पंथ के मुखिया श्री शिवदयाल जी महाराज(राधास्वामी) जी के वचनों में मिली। जिनका कोई सिर-पैर नहीं है। पुस्तक सारवचन राधास्वामी वार्तिक पृष्ठ-3 वचन 4 में सतनाम के स्थान के विषय में लिखा है। उसी(सतनाम) को सतशब्द और सारशब्द और सतलोक और सच्चखण्ड और सतपुरूष और सतनाम भी कहते हैं। राधास्वामी के विषय में लिखा है कि राधास्वामी सबसे ऊँचा मुकाम(स्थान) है। यही नाम सच्चे मालिक का है। इसे स्थान भी नहीं कह सकते, इसे कहते है।*

*सन्त रामपाल जी के सत्संग वचनों के आधार से ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज'' पुस्तक के वचन 31 में देखा श्री शिवदयाल जी महाराज (राधास्वामी पंथ के प्रर्वतक) का कोई गुरू नहीं था। वचन 65 में देखा वे हुक्का पीते थे। उन्होंने किसी को(जैमल सिंह जी महाराज या सालगराम जी आदि को) नामदान करने का आदेश नहीं दिया था। श्री सावन सिंह जी महाराज को श्री जैमल सिंह जी महाराज के बाद डेरा ब्यास पंजाब की गद्दी प्राप्त हुई। श्री सावन सिंह जी महाराज के शिष्य श्री कृपाल सिंह जी थे। श्री कृपाल सिंह को नाम दान का अधिकार नहीं था। इसी पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज'' वचन 65 में देखा कि वे अपने शिष्या बुक्की में प्रवेश करके प्रेत बनकर बोलते थे। मृत्यु पश्चात भी बुक्की के द्वारा(बुक्की के मुख से) हुक्का पीते थे तथा भोजन भी खाते थे। बुक्की में उसके जीवन पर्यन्त प्रवेश रहे। इस तरह के प्रमाण देखकर मैंने(दया सिंह दास ने) भी सन्त रामपाल जी महाराज से नामदान ले लिया। मेरे शरीर में गलत साधना हठयोग द्वारा करने से कई रोग हो गये थे। जिनसे बहुत परेशान रहता था। सन्त रामपाल जी महाराज से उपदेश लेने के पश्चात् सर्व रोग भी समाप्त हो गये। हमारे को राधास्वामी पंथ में सतपुरूष निराकार बताया जाता था तथा प्रारब्ध कर्म का दुःख या सुख भोगना ही पड़ेगा, भक्ति करते रहो सतलोक पहुँच जाओगे। सन्तमत भाग-4 पृष्ठ 125,126 पर श्री सावन सिंह महाराज ने स्पष्ट मना किया है कि सतगुरू का काम किसी की बिमारी हटाना अर्थात कष्ट दूर करना नहीं है। सन्त रामपाल जी ने प्रमाण दिखाए की सार वचन वार्तिक पुस्तक जो श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) द्वारा सत्संग वचनों को संग्रह है में भाग प्रथम वचन 12 लिखा है कि सतलोक में गए भक्त सतपुरूष का दर्शन करते हैं। निराकार का दर्शन कैसा? अपने विचारों को आप ही गलत सिद्ध किया है।*

*सन्त रामपाल जी महाराज ने बताया कि पूर्ण परमात्मा कबीर जी अपने साधक के प्रारब्ध के पाप कर्म से होने वाले कष्ट का निवारण कर देता है। यदि किसी के पैर में कांटा लगा हो। उसे कोई कहे कि कांटा तो निकल नहीं सकता आप जूते पहन लो भविष्य में कांटा नहीं लगेगा। कांटा लगे पैर में जूता पहना नहीं जा सकता। पहले कांटा निकले फिर जूता पहना जाएगा। फिर कभी जूते नहीं निकालेगा उसे डर रहेगा कहीं फिर कांटा न लग जाऐ। इसी प्रकार साधक का दुःख रूपी कांटा निकलेगा अर्थात कष्ट निवारण होगा तो वह फिर अधिक साधना करेगा। कष्ट निवारण नहीं हुआ तो भक्ति में रूचि ही नहीं बन सकती।*

*मैंने पूर्ण सन्त रामपाल जी महाराज से प्रश्न किया :-हे महाराज ! मैं जो आँखें बंद करके कुछ प्रकाश देखता था वह क्या है? जगत् गुरू रामपाल जी महाराज ने उत्तर दिया :- जैसे सर्दी के मौसम में धुंध गिरती है। सूर्य का प्रकाश नाम मात्र दिखाई देता है। परन्तु सूर्य दिखाई नहीं देता। सूर्य धुंध से ऊपर साकार*

चमक रहा होता है उसी का प्रकाश धुंध को पार करके नीचे आ रहा होता है कोई कहे कि मैंने सूर्य का प्रकाश देखा। परन्तु सूर्य निराकार है, क्या ये विचार समझदार व्यक्ति के हो सकते हैं? वास्तव में पूर्ण परमात्मा अर्थात् सतपुरूष मानव जैसे तेजोमय शरीर में साकार है तथा उसी पूर्ण परमात्मा के प्रकाश का प्रतिबिम्बित प्रकाश का अंश ही काल(ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्मण्डों में दिखाई देता है। इस ब्रह्मण्डिय प्रकाश को पिण्ड(शरीर) में देखना परमात्मा प्राप्ति नहीं है। अपितु काल(ब्रह्म) द्वारा फैलाया मिथ्या भ्रम जाल है। जैसे सूर्य का प्रकाश जल पर गिरा, जल से प्रतिबिम्ब दिवार पर पड़ा। दिवार पर सूर्य दिखाई नहीं देता केवल प्रकाश दिखाई देता है। इसी प्रकाश सतपुरूष का प्रकाश परब्रह्म तथा ब्रह्म के अन्य लोकों में ऐसे दिखाई देता है जैसे दिवार पर सूर्य के प्रकाश का जल से बना प्रतिबिम्ब होता है। उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध है कि जो परमात्मा को निराकार कहते हैं व कहते है कि केवल प्रकाश देखा जा सकता है तथा गुरू रूप में ही सत्यपुरूष के दर्शन घट(शरीर/पिण्ड में) करना परमात्मा प्राप्ति है तथा शरीर में धुन सुनना ही प्रभु प्राप्ति का प्रतीक है, वे मिथ्या भाषी हैं। उनका ज्ञान व साधना शास्त्र विरूद्ध व मनघड़ंत है। क्योंकि शरीर (पिण्ड) में सुनी जाने वाली धुन तो काल के लोक की हैं। सतलोक की वास्तविक धुन तो पिण्ड(अण्ड) के पार है जिसका प्रमाण शब्द ''कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'' की 31-32 कली में है।

उपरोक्त प्रमाणों को देखकर तथा संत रामपाल जी से तत्व ज्ञान को सुनकर कलेजा मुंह को आने लगा। हे प्रभु ! कितने वर्ष खो दिए नादानों के चक्र में। सर्व शंकाओं का समाधान होने पर सन्त रामपाल जी महाराज का उपदेश प्राप्त करके आत्मिक शान्ति प्राप्त हुई तथा शरीर का सुख, धन लाभ तथा परिवार में सुख पूर्ण रूप से प्राप्त है।

मेरी सर्व प्रेमी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप भी प्रमाणों को स्वयं देखो तथा सत्य को जानकर अपना जीवन सफल करें। अतिशीघ्र सन्त रामपाल जी महाराज से उपदेश ग्रहण करें।

सतगुरु चरणों का दास
भक्त दया सिंह दास

कुछेक श्रद्धालु कहते हैं कि गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? उन श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जैसे एक डाक्टर(वैद्य) से उपचार नहीं होता है तो दूसरा डाक्टर बदलने में लाभ होता है हानि नहीं होती। ठीक इसी प्रकार गुरू को जानो। इसलिए शास्त्रविधि विरूद्ध ज्ञान वाले गुरू को त्यागकर पूर्ण गुरू धारण करना हितकर है। पाप नहीं पूण्य है। कुछ श्रद्धालु संकोच करते हैं कि हम तीस वर्ष की साधना का क्या होगा? अब कैसे छोड़ें? उन श्रद्धालुओं से निवेदन हैं कि विचार करें कि आपको किसी शहर में जाना है, तीस किलोमीटर जाने के बाद पता चले कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं,

*तो तुरंत मुड़ जाना चाहिए। नहीं तो मंजिल दूर होती जाएगी। फिर भी कोई कहे कि हम तो तीस किलोमीटर सफर तय कर चुके हैं, अब कैसे छोड़ें इस रास्ते को? यह विचार तो बालक के या शराबी के हो सकते हैं। समझदार तो तुरंत मुड़ जाएगा। इसलिए उस साधना को तुरंत त्यागकर वास्तविक शास्त्रविधि अनुसार साधना ग्रहण करें।*

***कबीर परमेश्वर कहते हैं किः-***

झूठे गुरू को त्यागन में तनिक न लावे वार। द्वार न पावै शब्द का भटकै द्वार–द्वार।

***कृप्या निशंकोच अधुरे गुरू को त्याग दें तथा पूर्ण सन्त की शरण ग्रहण करें।***

**सर्व ब्रह्मण्डों का वर्णन :-**

***शेष अगले अंक में ----------------***

## क्या हम परमात्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं ?
## (Can We See God का हिन्दी रूपांतर)
## संत दर्शनसिंह जी महाराज
## से
## भेंट वार्ता

(सन् १९७८ की प्रथम अमेरिका यात्रा के दौरान शिकागो रेडियो से प्रसारित भेंट वार्ता के आधार पर)

प्रश्न : क्या हम परमात्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं?

उत्तर : हाँ, हम इसी जीवन में प्रभु का साक्षात्कार कर सकते हैं।

प्रश्न : आप जो बात कह रहें हैं उसका क्या प्रमाण है?

उत्तर : जिस प्रकार से हलवे का प्रमाण उसके खाने में निहित है उसी प्रकार आत्मिक उपलब्धि का प्रमाण उसके अनुभव में है। हम ज्ञान और प्रभु का अनुभव पराविद्या के माध्यम से प्राप्त करते हैं जो कि संतमत का मार्ग है। स्वामी विवेकानन्द (जिनका पूर्व नाम नरेन्द्र था) ने रामकृष्ण परमहंस से एक बार पूछा, "प्रभु, क्या आपने परमात्मा को देखा है?" उन्होंने जवाब दिया, "हाँ बेटे मैंने परमात्मा को देखा है?" उतनी ही स्पष्टता के साथ जितनी स्पष्टता से मैं तुम्हें देख रहा हूँ।"

परमात्मा जब व्यक्त हुआ (इजहार में आया) उसने दो रूप : परमात्मा का प्रकाश और मण्डलों का राग (नाद) धारण किए। इन दो सिद्धान्तों से सम्पर्क स्थापित कर न केवल हम परमात्मा को देख ही सकते हैं वरन् हम उससे रूबरू (आमने-सामने) बातचीत भी कर सकते हैं। उसका मार्गदर्शन भी पा सकते हैं और अंत में उसमें अभेद भी हो सकते हैं।

प्रश्न : परमात्मा देखने में कैसा है?

उत्तर : परमात्मा आकार रहित है। परमात्मा पूर्ण ज्योति, पूर्ण प्रकाश और मूलभूत प्रभा (तेज) है। परमात्मा का ज्योति पुंज अवर्णनीय है, फिर भी शास्त्रों में बताया गया है कि करोड़ों सूर्य-चन्द्र का एकत्रित प्रकाश उसके एक रोम के प्रकाश की तुलना नहीं कर सकता। परमात्मा को उसके मूलभूत ज्योतिस्वरूप में देखना तभी सम्भव है,

*पुस्तक ''परमात्मा का साक्षात्कार'' पृष्ठ 1-2 से फोटो कापी। (I)*

सृष्टि की रचना — सारवचन (नसर-आगरा) पृ. 81

वह प्रभु अपने निज स्वरूप में निराकार, निर्गुण और अनाम था। उसका न कोई आकार था न गुण, न कोई नाम था। वो वर्णन से परे की चीज थी। 'नेति-नेति' कह कर ही उसका संकेत दिया जा सकता था, अर्थात् 'वह प्रकाश भी नहीं अंधेरा भी नहीं,' 'वह ध्वनि भी नहीं और मौन भी नहीं' इत्यादि। वह परम सत्य अगम, अगोचर, अनन्त और वर्णनातीत है। यही सिर हकीकत (सबकी सृजनहार सबकी जीवनाधार हकीकत) थी जिस ने सारी रचना रची। जब वह अनामी प्रभु अभिव्यक्ति में आया तो अलख, अगम, सतनाम हुआ, (यह तीन निर्मल चेतन मण्डल बने) ध्वनि और ज्योति स्वरूप हुआ। वो निर्मल चेतन धारा और नीचे आई और माया अर्थात् काल की धारा रची और जैसे-जैसे चेतन की धारा और नीचे आती

*पुस्तक ''जीवन चरित्र बाबा जैमल सिंह'' पृष्ठ 102,103 से फोटो कापी (II)*

परमात्मा ने इन्सान बनाये। इन्सान को उस प्रभु ने अपना रूप बनाया। इन्सान ने आगे समाज बनाए और उनको अपने रंग में रंग दिया

*पुस्तक ''जीवन चरित्र बाबा जैमल सिंह'' पृष्ठ 20 से फोटो कापी। (III)*

**सत्संगी :** हुजूर! सन्तों की पदवी कहाँ तक है ?

**महाराज जी :** हमारी इतनी बुद्धि और अक्ल नहीं कि हम सन्तों की पदवी को समझ सकें! फिर भी सुनो– रानी इन्दुमती कबीर साहिब के समय में हुई थी। पहले कबीर साहिब मालिक में जाकर विलीन हुए, फिर रानी हुई। जब रानी ने सचखण्ड में जाकर कबीर साहिब की पदवी देखी तो कहने लगी, ''महाराज! यदि आप पहले ही बता देते कि मैं ही अकालपुरुष हूँ तो मैं भजन-सुमिरन कर-कर के व्यर्थ परेशान न होती।'' कबीर साहिब ने उत्तर दिया, ''तुमको उस समय विश्वास नहीं आना था।'' यदि हमें आज से पहले सन्तों पर विश्वास आ जाता तो हमारा काम न बन जाता ? हम आज यहाँ पर भटकते न होते। आप देखो गुरु नानक साहिब

*पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ -264 से फोटो कापी। (IV)*

# राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु
## (धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा, कृपाल सिंह, ठाकुर सिंह तथा दिनोंद भिवानी वाले पंथ तथा जय गुरुदेव पंथ भी इसी की शाखाएं हैं)
## (दसवीं किस्त)

(------ गतांक से आगे)

**सर्व ब्रह्मण्डों का पूरा विवरण तथा कहाँ है? कैसा है? तथा कौन है भगवान? :-** *प्रथम अकह लोक, दूसरा अगम लोक, तीसरा अलख लोक और चौथा सतलोक है। उपरोक्त चारों लोकों में पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म ही भिन्न-2 रूप धारण करके मनुष्य रूप में साकार विराजमान है। उसी परमात्मा के उपमात्मक नाम अर्थात् पदवी के नाम हैं। अनामी पुरुष, अगम पुरुष, अलख पुरुष तथा सतपुरुष।(जैसे देश के माननीय प्रधान मंत्री जी के शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा प्रधान मंत्री उनका पदवी का नाम होता है। प्रधान मंत्री कई विभाग अपने पास रखता है तो व्यक्ति वही होता है परंतु पद भिन्न-2 होते हैं फिर वही व्यक्ति गृह मंत्री, रक्षा मंत्री आदि कहलाता है तथा प्रत्येक कार्यालय में उनकी शक्ति भिन्न होती है) नीचे सात शंख ब्रह्मण्ड अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के हैं तथा फिर इक्कीस ब्रह्मण्ड क्षर पुरुष (ब्रह्म/काल) के हैं। तीन पुत्र ब्रह्म (काल) तथा दुर्गा से उत्पन्न रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी केवल काल(ब्रह्म) के एक ब्रह्मण्ड में एक-2 विभाग के स्वामी(प्रभु) हैं। मानव शरीर को पिण्ड भी कहते हैं। इसी पिण्ड में एक ब्रह्मण्ड का नक्शा (मानचित्र) है। ब्रह्मण्ड का आकार अण्डे जैसा है। इसलिए इसे अण्ड भी कहते हैं। तीन स्थिति नहीं हैं। जैसे राधास्वामी पंथ तथा शाखा पंथ धन-धन सतगुरू- सच्चा सौदा वाले संतों ने अण्ड-पिण्ड तथा ब्रह्मण्ड को भिन्न-2 बता कर बेतुका जोड़ जोड़ा है।*

*वास्तव में सतलोक वह स्थान है जहां पर सतपुरुष रहता है। सतनाम दो अक्षर का मंत्र है जिसमें एक ओम् तथा दूसरा तत् यह भी गुप्त है तथा सारनाम (सतशब्द) है जो पूर्ण परमात्मा ने पूर्ण रूप से गुप्त रखा है। जो अब मुझ दास को दिया है। सारशब्द उस अटल वचन शक्तियुक्त समर्थ परमात्मा का नाम है जिसने सर्व उत्पति अपने शब्द(वचन) से की है इसलिए उसे शब्द स्वरूप राम भी कहते हैं। उसको तो प्राप्त करना है। जैसा कि आप जी ने इसी पुस्तक के पृष्ठ 49-50 पर सातवीं किस्त में नल द्वारा जल प्राप्त करने की विधि में पढ़ा। केवल सतपुरुष, अकाल मूर्ति, शब्द*

*स्वरूपी राम कहने से परमात्मा प्राप्ति नहीं है। यह तो एक ही शक्ति के पर्यायवाची नाम हैं। सतपुरुष का अर्थ है अविनाशी प्रभु, अकाल मूर्ति का अर्थ भी है कि जिस मुर्ति(साकार स्वरूप) का नाश न हो अर्थात् अविनाशी प्रभु, तथा शब्द स्वरूपी राम का भी अर्थ है अविनाशी प्रभु। शब्द अविनाशी है जो परमात्मा की अटल आदेशात्मक आवाज है इसलिए उस परमात्मा को पाने के मन्त्र को सारशब्द भी कहते हैं। वह सारनाम जाप करने का है तथा धुनात्मक शब्द अर्थात अनहद धुन अन्य वस्तु है वह परमात्मा नहीं है। केवल जल-पानी-नीर कहने से जल नहीं मिलेगा। जल प्राप्ति की विधि भिन्न है जो पांचवीं किस्त में वर्णित है। गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 721 पर महला पहला में स्पष्ट किया है कि (कून करतार) शब्द स्वरूपी राम अर्थात् अविनाशी प्रभु(हक्का कबीर) सत कबीर है। यही प्रमाण महला पहला की वाणी पृष्ठ 24 पर लिखा है - 'धाणक रूप रहा करतार'। स्वयं श्री सावन सिंह जी महाराज राधास्वामी पंथ वाले भी स्वीकार करते है कि पूर्ण परमात्मा अर्थात अकाल पुरूष कबीर साहेब जी हैं। पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग 4 पृष्ठ 264 पर श्री सावन सिंह जी ने लिखा है कि कबीर साहेब को इन्दुमति रानी ने सतलोक में अकाल पुरूष रूप देखा तो कहा कि मुझे नहीं पता था कि आप ही अकाल पुरूष अर्थात् पूर्ण परमात्मा हो। कृप्या पढ़ें फोटो कापी पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ-264, इसी पुस्तक (भक्ति और भगवान-2) के पृष्ठ 116 पर।*

*विचार करें:- राधास्वामी धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा सिरसा पंथ वाले सतलोक में केवल प्रकाश ही कहते हैं तथा सतपुरूष को निराकार ही बताते हैं तथा मोक्ष प्राप्त आत्मा परमात्मा में समुन्द्र में बूंद की तरह समा जाती है, भिन्न नहीं रहती। इन्दुमति रानी ने तो ऊपर सतलोक में कबीर जी को सतपुरूष(अकाल पुरूष) रूप में भिन्न देखा था अर्थात् कबीर परमात्मा को सतलोक में इन्दुमति रानी ने साकार में देखा था। इस से दो बातें सिद्ध हुई :-*

*(1) पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष) कबीर जी काशी वाला जुलाहा है।*

*(2) सतपुरूष साकार है मनुष्य जैसा है राधास्वामी पंथ के सन्त अपने सिद्धान्त को आप ही गलत कर रहे हैं। जो वास्तव में गलत ही है।*

*राधास्वामी मत का सिद्धान्त है कि मोक्ष प्राप्त आत्मा सतलोक में जाकर निराकार परमात्मा सतपुरूष में ऐसे समा जाती है जैसे बून्द समा जाती है समुन्द्र में। यदि कबीर जी पहले सतपुरूष में लीन हो गए थे तथा बाद में रानी इन्दुमति सतपुरूष में लीन हुई थी (जैसा पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग 4 पृष्ठ 264 में लिखा है) तो भिन्न-2 रहने का प्रश्न ही नहीं उठता। श्री सावन सिंह महाराज सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 264 पर तथा भाग 5 पृष्ठ 223 पर स्पष्ट कह रहे हैं कि इन्दुमति रानी ने सतलोक में कबीर जी को अकाल पुरूष अर्थात सतपुरूष रूप में देखा। यदि लीन हो जाती तो बूंद समुन्द्र में मिलने के पश्चात् अलग अस्तित्व नहीं रहता। वास्तविक्ता यही*

*है कि सतपुरूष कबीर परमेश्वर है तथा मानव सदृश शरीर में है। यह विवरण(जो इन्द्रमति रानी का है) कबीर सागर में लिखा है, जो सत्य है। सतलोक(सच्चखण्ड) में सतपुरूष(परम अक्षर ब्रह्म) मनुष्य सदृश साकार है। एक तत्व से बना नूरी शरीर है। जिस के एक रोम कूप की शोभा करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है। इसी प्रकार मोक्ष प्राप्त आत्माऐं तथा अन्य पूर्व सृष्टि वाली आत्माऐं भी मानव सदृश साकार हैं। परन्तु सतलोक में रहने वाली आत्माओं के शरीर की शोभा सोलह सूर्यों के प्रकाश तुल्य है। यही प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मन्त्र 1 तथा 32 में है मन्त्र 1 में कहा है:-(अग्नेः) परमेश्वर(तनूः) सशरीर(असि) है। (त्वा) उस (विष्णवे) सर्व पालन कर्ता सर्वेश्वर(सोमस्य) अमर पुरूष का अर्थात् सतपुरूष का (तनूः) शरीर (असि) है। मन्त्र 32 में लिखा है (कविरंघारिरसि) पाप का शत्रु अर्थात पाप नाशक कविर्देव(कबीर परमेश्वर) है। वही(बम्भारिरसि) बन्धनों का शत्रु अर्थात बन्दी छोड़ है। जो(ऋतधामा असि) सतलोक में रहने वाला है। वह (स्वर्ज्योतिः) स्वयं प्रकाशित है। अर्थात तेजोमय शरीरयुक्त है। यही प्रमाण पवित्र बाईबल में उत्पति ग्रन्थ में पृष्ठ 2 पर 1:20, 2:5 वाणी सं. 26 से 28 में लिखा है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया है।(इस से सिद्ध हुआ कि परमात्मा भी मनुष्य सदृश शरीर युक्त साकार है।) यह भी लिखा है कि परमेश्वर ने छः दिन में सृष्टि रचना की तथा सातवें दिन तख्त पर विश्राम किया। यही प्रमाण पवित्र कुर्आन शरीफ में सुरत फुर्कानि सं. 25 आयत सं. 58,59 में लिखा है कि कबीर नामक परमात्मा छः दिन में सृष्टि रचकर सातवें दिन तख्त पर जा विराजा।(पवित्र कुर्आन शरीफ में लगभग चालीस प्रतिशत विवरण पवित्र बाईबल वाला है) आयत सं. 58,59 में यह भी प्रमाण है कि कुर्आन शरीफ का ज्ञान दाता प्रभु अपने पैगम्बर(अवतार) हजरत मुहम्मद जी को कह रहा है कि जो परमात्मा तुझे जिन्दा साधु के रूप में मिला था वही वास्तव में अविनाशी तथा पापों को क्षमा(नाश) करने वाला है। उसकी खबर किसी बाखबर से पूछो अर्थात तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त से पूछो। मैं(कुर्आन शरीफ ज्ञान दाता) नहीं जानता।*

*उपरोक्त दोनों सद्ग्रन्थों(पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुर्आन शरीफ) ने रल-मिल कर सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मनुष्य सदृश शरीर में साकार है। उसका नाम अल्लाह अकबर अर्थात परमात्मा कबीर है।*

*यही प्रमाण आदि ग्रन्थ महला पहला की वाणी पृष्ठ 721 पर श्री नानक साहेब जी ने दिया है कहा है कि(कून करतार) शब्द स्वरूपी परमात्मा(हक्का कबीर) सत कबीर है। आदि ग्रन्थ पृष्ठ 24 वचन 29 में महला पहला की वाणी में श्री नानक साहेब ने यह भी प्रमाणित किया है कि वही सतकबीर काशी(बनारस) में धाणक(जुलाहा) रूप में प्रकट था।*

*कबीर परमात्मा को सतलोक में देखने के पश्चात श्री नानक जी ने प्रथम*

*उदासी वाली यात्रा में बनारस(काशी) में धाणक(जुलाहा) रूप में देख कर कहा थाः-*

फाई सूरत मलूकि वेश– इह ठगवाड़ा ठगी देश खरा सियाणा बहुता भार–धाणक रूप रहा करतार।

***उपस्थित व्यक्तियों से श्री नानक जी ने कहा था कि यह मन को आकृषित करने वाला चेहरा जहाँ जाता है वहाँ वैसी ही वेशभूषा बना लेता है।(क्योंकि पूर्ण परमात्मा कबीर जी श्री नानक जी को बेई नदी पर एक जिन्दा साधु के रूप में मिले थे। सतलोक में सतपुरूष रूप में तथा फिर काशी में धाणक रूप में तब उपरोक्त वाणी कही थी) उपरोक्त सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थों से सिद्ध हुआ कि सर्व सृष्टि रचनहार(करतार) मानव सदृश शरीरयुक्त साकार है तथा उसका नाम कबीर है। यह वही सतकबीर है जो काशी में जुलाहा(धाणक) की लीला करके सशरीर सतलोक चला गया था। यही काशी में जुलाहे(धाणक) की लीला करने वाला कबीर अकाल पुरूष सन् 1727 में आदरणीय गरीबदास जी महाराज(गांव छुड़ानी जिला-झज्जर, हरयाणा वाले) को जिन्दा महात्मा के रूप में सशरीर मिला था। जब गरीब दास जी महाराज की आयु दस वर्ष की थी तथा जंगल में गऊऐं चरा रहे थे। प्रत्यक्ष दृष्टा कई अन्य बड़े ग्वाले भी थे। उस स्थान पर एक यादगार भी बनी है। श्री नानक देव जी की तरह परमेश्वर कबीर जी ने बालक गरीब दास जी को भी सतलोक के दर्शन करा के वापिस छोड़ा था। तब गरीब दास जी ने भी सतलोक तथा अन्य लोकों व ब्रह्मण्डों का आँखों देखा हाल अपनी अमृतवाणी में वर्णन किया है।***

***गरीब*** - हम सुलतानी नानक तारे, दादु को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी मांही कबीर हुआ।।
जिन्दा जोगी जगत गुरू, मालिक मुरसीद पीर।
दोनों दीन झगड़ा मंड्या, पाया नहीं शरीर।।
अनन्त कोटी ब्रह्मण्ड का, एक रती नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजन हार।।

***उपरोक्त वाणी में सन्त गरीब दास जी महाराज ने बताया है कि हम अर्थात मैं(गरीब दास) तथा अब्राहिम सुलतान जी तथा नानक जी तथा दादु जी आदि सब को कबीर परमेश्वर ने पार किया। वह जगत गुरू कुल का मालिक जिन्दा रूप में मुझे मिला तथा वही काशी(बनारस) में जुलाहे(धाणक) रूप में एक सौ बीस वर्ष लीला करके मगहर स्थान से सशरीर चला गया। उनका शरीर नहीं मिला था केवल सुगंधित पुष्प ही मिले थे। उस को कोई नहीं समझ सका।***

***उपरोक्त सदग्रन्थों तथा आँखों देखने वाले संतों, गवाहों(साक्षियों) ने स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया कि सर्व सृष्टि रचनहार सर्व का पालन कर्ता तथा पाप नाशक, पूर्ण मोक्ष दायक काल की कारागार से छुड़ाने वाला बन्दी छोड़, तेजोमय शरीर युक्त सतलोक में तथा पृथ्वी लोक आदि में लीला करने वाला सतपुरूष अर्थात अविनाशी***

*परमात्मा काशी वाला जुलाहा कबीर है। इससे सिद्ध है कि राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरू पंथ तथा अन्य शाखा पंथों का ज्ञान सही नहीं है तथा भक्ति विधि भी शास्त्र विरूद्ध मनमाना आचरण(पूजा) है जो लाभदायक नहीं है।*

*राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरू पंथ व शाखाओं के सन्तों ने श्रद्धालुओं को उल्टी पढाई पढा रखी है कि सन्त गुरू रूप धार कर आता है वही सृजन हार है। परन्तु सतलोक में परमात्मा निराकार है केवल परमात्मा का प्रकाश है। काल लोक में भक्ति मार्ग दर्शन करके सन्त गुरू तथा साधक सतलोक में परमात्मा के प्रकाश में ऐसे समा जाते हैं जैसे बून्द समा जाती है समुन्द्र में। वहाँ सतलोक में आत्मा तथा परमात्मा का अलग अस्तित्व नहीं रहता। जबकि वास्तविकता इन के लोकवेद जिसको(दन्त कथा) के विपरित है जो ऊपर वर्णित है। जिसको श्री सावन सिंह जी महाराज राधास्वामी पंथी भी सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 264 पर स्वीकार करते हैं कि कबीर जी को उनकी शिष्या इन्दुमति ने सतलोक में अकाल पुरूष के रूप में देखा। इससे स्वसिद्ध है कि पूर्ण परमात्मा कबीर है वह सशरीर है तथा आत्मा तथा परमात्मा की भिन्न-2 स्थिती है। ''शब्द'' ''कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'' में कबीर परमेश्वर की वाणी है जिसे श्री सावन सिंह जी ने खोला है लिखा है कि सतलोक में आत्मा का प्रकाश सोलह सूर्यों के समान हो जाता है तथा परमात्मा के एक रोम का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है। इस व्याख्या से भी राधास्वामी पंथ का सिद्धान्त गलत सिद्ध हो जाता है।*

*इससे सिद्ध हुआ कि राधास्वामी पंथ तथा उसकी शाखाऐं धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा, जयगुरू देव मथूरा वाला, दिनोंद भिवानी वाला व कृपाल सिंह दिल्ली वाला पंथ पूर्ण रूप से निराधार सिद्धान्त पर टिका है। इन पंथों के पवित्र आत्मा सन्त तथा श्रद्धालु अनुयायी अपना अनमोल जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। उनसे करबद्ध प्रार्थना है कि ठण्डे दिमाग से विचार करें तथा मुझ दास(रामपाल दास) को पूज्य कबीर परमेश्वर जी का भेजा कुत्ता जानें जो सर्व प्रभु चाहने वाले परमात्मा धन के धनियों को जगाने के लिए भौंक रहा है। जो जाग जाएगा वह लाभ उठाएगा। कृप्या मुझ दास को अपना दास या छोटा-बड़ा भाई जान कर आत्म कल्याण कराऐं। जिससे आप का जन्म-मरण का दीर्घ रोग समाप्त होगा तथा जब तक इस संसार में रहोगे आप का शरीर स्वस्थ, धन लाभ, परिवार में सुख सदा बना रहेगा।*

*प्रभु प्रेमी पाठकों को उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो गया कि कहाँ है कैसा है व कौन है भगवान ?*

*सन्त रामपाल दास महाराज*

**सत्संगी :** हुजूर! सन्तों की पदवी कहाँ तक है ?

**महाराज जी :** हमारी इतनी बुद्धि और अक्ल नहीं कि हम सन्तों की पदवी को समझ सकें! फिर भी सुनो– रानी इन्दुमती कबीर साहिब के समय में हुई थी। पहले कबीर साहिब मालिक में जाकर विलीन हुए, फिर रानी हुई। जब रानी ने सचखण्ड में जाकर कबीर साहिब की पदवी देखी तो कहने लगी, ''महाराज! यदि आप पहले ही बता देते कि मैं ही अकालपुरुष हूँ तो मैं भजन–सुमिरन कर–कर के व्यर्थ परेशान न होती।'

*(पुस्तक''सन्तमत प्रकाश'' भाग-4 पृष्ठ- 264 से फोटो कापी)*

## ''भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा''

### बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज की दया

*मेरा नाम दीपक दास पुत्र बलजीत सिंह, गांव महलाना जिला सोनीपत है। हम तीन पीढीयों से राधास्वामी पंथ डेरा बाबा जैमल सिंह से नाम उपदेशी थे। सबसे पहले मेरी दादी जी की माता जी यानि मेरे पिता जी की नानी जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा था। उसके बाद मेरे दादा-दादी जी और फिर मेरे माता-पिता जी ने भी नाम लिया हुआ था। हम भी गुरूविन्द्र जी महाराज को पूर्ण पुरूष मानते थे तथा इस पंथ में पूर्ण श्रद्धा यह सोच कर रखते थे कि यह संसार में प्रभु प्राप्ति का श्रेष्ट पंथ है और उनके विशाल डेरे और विशाल संगत समूह को देखकर विशेष आकर्षित थे और सेवा करने के लिए डेरा बाबा जैमल सिंह व्यास (पंजाब) में तथा छत्तरपुर पूसा रोड़ दिल्ली भी जाते रहते थे। लेकिन इस पंथ में उम्र विशेष में नाम दिया जाता है इसलिए अभी मैं इस पात्रता के लिए अयोग्य था।*

*मेरे माता-पिता जिस दिन छत्तरपुर से नाम लेने के लिए गये हुए थे उसी दिन मेरे छोटे भाई (उम्र 5) के हाथ से पड़ोस के एक बच्चे की आँख में कोई वस्तु अनजाने में लग गई। जब शाम को नाम उपदेश लेकर मेरे माता-पिता वापिस आए। उसी दिन से हमारा व हमारे पड़ोसियों का वैर हो गया कि आपके बेटे ने हमारे बेटे की आँख में जानबूझ कर चोट मारी है और उसी दिन से हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।*

*उसी दौरान मेरे दादा जी का बिमारी के कारण देहांत हो गया जब मेरे दादा जी का पार्थिक शरीर दूसरे कमरे में रखा हुआ था तो उस समय मेरी दादी जी, जिनका देहांत हुए 12 वर्ष हो चुके थे,मेरी बुआ प्रेमवती में प्रेत की तरह प्रवेश करके बोली।(मेरी दादी ने भी राधास्वामी पंथ से प्राप्त पाँच नामों की बहुत ज्यादा साधना कर रखी थी। वे नियमित रूप से तीन बजे ही व दिन में भी भजन व सुमरन करने के लिए बैठ जाती थी और घण्टों राधास्वामी पंथ के बताये नाम का जाप व अभ्यास किया करती थी।) कि आज तुम्हारे दादा जी का जीवन संस्कार समाप्त हो गया इसलिए मैं तुम्हें संभालने आई हूँ। मेरी दादी जी को जीवित अवस्था में सांस की बिमारी के कारण खांसी रहती थी बारह साल के बाद ज्यों की त्यों ही खांस रही थी। तब हमने पूछा कि दादी जी आप तो बहुत दुःखी दिखाई दे रही हो क्या आप सतलोक नहीं गई। तब मेरी दादी ने कहा कि बेटा मैंने गलत साधना के कारण अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ कर दिया तथा अब मृत्यु के पश्चात् भूत योनि में कष्ट उठा रही हूँ। मैं कहीं सतलोक में नहीं गई। तो फिर मेरी माता जी ने पूछा कि माँ क्या आपको गुरूजी चरण सिंह जी महाराज ने संभाला या नहीं? तो मेरी*

*दादी ने कहा कि उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं कि और मैं आज भी ऐसे ही दुखी हो रही हूँ।*

*उस घटना के दो साल बाद एक दिन मेरी दूसरी बुआ कमला के अंदर मेरे दादा जी प्रेतवत् प्रवेश कर के बोले और कहा कि मैं तो बहुत दुःखी हूँ तथा मेरी कोई गति नहीं हुई। मैं नहाना चाहता हूँ तो मेरी माता जी ने दुःख व आश्चर्य से कहा कि आप तो सतलोक में गए थे क्या वहाँ पर नहाने के लिए पानी भी नहीं है? फिर मेरी माता जी मेरे दादा जी (जो मेरी बुआ में प्रेत बन के घुस हुआ था) को नहलाने लगी तो वह कहने लगा कि बेटी में अपने आप नहा लूगां तो मेरी माता जी ने हालांकि वह मेरी बुआ जी में प्रवेश था इसलिए बुआ वाले कपड़े ही पहना दिये तो मेरा दादा बोला बस बेटी मेरी धोती ले आओ मैं बांध लूगां। मेरी माता जी ने ऐसे ही एक चद्दर पकड़ा दी जो उन्होंने कपड़ों के ऊपर से ही लपेट ली। फिर कहा कि मेरे लिए चाय बनाओ और जल्दी-२ में ही चाय पी ली। मैंने पूछा कि दादा जी आप सतलोक नहीं गए तो उसने कहा कि बेटा मैं तो बहुत कष्ट में हूँ। मेरी माता जी ने फिर पूछा कि आप तो राधास्वामी हजूर चरण सिंह जी महाराज से नाम उपदेशी थे भक्ति भी करते थे क्या उन्होंने आपकी कोई संभाल नहीं की? तब कहा कि उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं की और मैं तो ऐसे ही धक्के खाता फिर रहा हूँ।*

*उसी दौरान मेरी आँखें भी इतनी कमजोर हो गई कि कम दिखाई देने लग गया था और चश्मा बार बार बदलवाना पड़ा था। मैं एक दोस्त के साथ पढने के लिए उसके पास जाता था वहां पर भक्त संतराम ने मुझे पूर्ण ब्रह्म के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की महिमा सुनाई तथा कहा कि आप सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपकी आँखे ठीक हो जाएगी तथा कहा कि इन्हीं कष्टों और दुखों से हम जीवों को निकालने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब संत का रूप धारण करके आते हैं। मैंने कहा कि मेरे माता पिता जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा है। भक्त संतराम ने कहा कि वह पंथ पूर्ण नहीं है उनकी भक्ति साधना से न तो सतलोक प्राप्ति होगी न ही जीवन में कभी कर्म की मार टल सकेगी उसे तो सिर्फ कबीर साहेब का नुमाईदा संत ही टाल सकता है।*

*मेरे पिता जी को सांस की बिमारी थी दस कदम चलने पर ही बेहाल हो जाते थे, सांस की बिमारी के कारण दम फूलने लगता था हाई और लो ब्लड प्रैशर की भी बिमारी थी। मेरे पिता जी को इलैक्शन डयूटी के दौरान हार्ट अटैक हुआ पर कर्म संस्कार वश वे बच गये। लेकिन तब भी हम यह सोचते रहे कि गुरूविन्द्र जी महाराज ने हार्ट अटैक से बचा लिया और बड़ी रजा की और हमने तो सर्दियों की एक-एक रात में अपने पिता जी का एक-एक सांस टूटते देखा है, बिल्कुल मृत प्राय हो जाते थे और सिवाय बैठ कर रोने के हम कुछ नहीं कर पाते थे क्योंकि दवाईयों*

*का भी आखिर आ चुका था, डाक्टर जितनी ज्यादा से ज्यादा डोज दवाई की बढा सकते थे बढा चुके थे इससे ज्यादा वे खुराक को नहीं बढा सकते थे। मेरी माता जी डेरे बाबा जैमल सिंह से लाया हुआ प्रशाद उन्हें खिलाती और राधास्वामी गुरुविन्द्र जी महाराज की मूर्ति के सामने बैठ कर प्रार्थना करती और रोती। उसी समय मेरे छोटे भाई को ओपरे की शिकायत रहने लगी वह रात को चमक कर उठ जाता था तथा कहता था कि मेरा पैर पकड़ कर कोई खींच रहा है, सोने नहीं दे रहा है, वह भी बहुत बिमार रहने लगा। मैंने 8 अक्तूबर 1998 को सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लिया। तो बीस दिन के अंदर ही पूर्ण परमेश्वर संत रामपाल जी महाराज की दया से मेरा चश्मा भी उतर गया तथा मैंने दवाई खाना भी छोड़ दी। मुझे सतगुरू रामपाल जी महाराज पर पूरा विश्वास हो गया था। भक्त संतराम ने घर पर आकर मेरे माता पिता जी को भी समझाया कि आप पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब के नुमाईदे संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपके सर्व कष्टों का निवारण हो जाएगा।*

*उसके बाद मैंने भी अपने माता पिता को समझाया तो वे बोले हम पहले तो राधास्वामी थे अब सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेगें। दुनिया क्या कहेगी? तब मैंने कहा कि एक डाक्टर से इलाज नहीं हो रहा तो क्या दूसरा डाक्टर नहीं बदलते? परन्तु दुःखी बहुत थे कुछ समय बाद परमेश्वर की शरण में आ गये और राधास्वामी पंथ के उन पांच नामों का त्याग करके पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले लिया।*

*सतगुरू कबीर साहेब कहते हैं 'शरण पड़े को गुरू संभाले जान के बालक भोला रे' सारे परिवार के नाम लेने के बाद से ही हमारे दिन फिर गये। मेरे भाई का ओपरा ठीक हो गया पिता जी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया और पहले वे दस कदम नहीं चल सकते थे अब एक आदमी के साथ लग कर चीनी की बोरी को उठा देते हैं। हमारा परिवार आज पूर्ण परमात्मा के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की शरण में उनकी दया से पूर्ण सुखी हैं।*

*परन्तु हमारे दादा-दादी व पिता जी की नानी जी के मनुष्य जीवन का जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती। यदि किसी आदमी की जान बचाने के लिए लाखों और करोड़ों रूपये खर्च कर दिए जाए और वह बच जाए तो उसे उस पैसे का कोई मलाल नहीं होता कि चलो जान तो बची। लेकिन आज चाहे कितनी भी कीमत चुकाने पर भी मेरे दादा-दादी का जीवन जो गलत मार्गदर्शन से बिल्कुल व्यर्थ चला गया (वे भूत और पितर की योनियों में कष्ट भोग रहे हैं), वापिस नहीं आ सकता। जो घिनौना मजाक ये नकली सन्त और पंथ सर्व समाज के साथ कर रहे हैं क्योंकि चौरासी लाख योनिया भोगने के पश्चात् मिलने वाले अनमोल मनुष्य जीवन को जो पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का*

*एकमात्र साधन है उसे बरबाद कर रहे हैं। इस महाक्षति की आपूर्ति किसी भी कीमत से पूरी नहीं की जा सकती।*

*हे बंदी छोड़ सतपुरूष रूप सतगुरू रामपाल जी महाराज आपने बड़ी दया कि हम तुच्छ जीवों पर जो अपना सत्य ज्ञान देकर अपनी शरण में बुला लिया अन्यथा हम भी पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त इस अविधिपूर्वक साधना में अपने मनुष्य जन्म को समाप्त करके कहीं भूत और पितरों की योनियों में चले जाते और इस शास्त्रविधियुक्त सतभक्ति से वंचित रह जाते।*

*सर्व बुद्धिजीवी समाज से प्रार्थना है कि अभी भी समय है। इस सत्य ज्ञान को समझे तथा निष्पक्ष होकर निर्णय करें। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर सतभक्ति प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन का कल्याण करवाएं।*

*सत साहेब*

*सतगुरु चरणों का दास*
*दीपक दास*

# गायत्री मन्त्र क्या है ? इसके जाप से क्या लाभ है ? यह कहाँ से ग्रहण हुआ ? : जगत गुरु

(30 अप्रैल 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

*प्रश्न :- मैं प्रतिदिन गायत्री मन्त्र (ओम् भूर्भुवः स्वः- - -) के एक सौ आठ जाप करता हूँ। क्या यह साधना मोक्ष दायक नहीं है ?*

*उत्तर :- वेद ज्ञान से अपरिचित चतुर् व्यक्तियों ने गायत्री मन्त्र के नाम से श्लोक ओम् भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्- - -का जाप करने से मोक्ष बता कर भोले श्रद्धालुओं का अनमोल जीवन व्यर्थ करवा दिया। इस के विषय में लोक वेद (दन्त कथा) कहा जाता था कि यह मन्त्र चारों वेदों से निकाला गया निष्कर्ष रूप मन्त्र है। इसी से मोक्ष लाभ होता है। जबकि यह तो यजुर्वेद अध्याय 36 का मन्त्र सं. 3 है। विचार करें, क्या किसी सद्ग्रन्थ के केवल एक मन्त्र (श्लोक) का रट्टा लगाने (आवृत्ति करने) से आत्म कल्याण सम्भव है ? अर्थात् नहीं।*

*सद्ग्रन्थों के मन्त्रों (श्लोकों) में परमात्मा की महिमा है तथा उसको प्राप्त करने की विधि भी है। जब तक उस विधि को ग्रहण नहीं करेगें तब तक आत्म कल्याण अर्थात् ईश्वरीय लाभ प्राप्ति असम्भव है। जैसे पवित्र गीता अध्याय 17 मन्त्र (श्लोक) 23 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का तो केवल ॐ-तत्-सत् मन्त्र है, इसको तीन विधि से स्मरण करके मोक्ष प्राप्ति होती है। ओम् (ॐ) मंत्र ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष का जाप है, तत् मंत्र (सांकेतिक है जो उपदेश लेने वाले को बताया जाएगा) परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष का जाप है तथा सत् मन्त्र (सांकेतिक है इसे सत् शब्द अर्थात् सारनाम भी कहते हैं। यह भी उपदेश लेने वाले को बताया जाएगा) पूर्ण ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर पुरूष (सतपुरूष) का जाप है। इस (ॐ-तत्-सत्) के जाप की विधि भी तीन प्रकार से है। इसी से पूर्ण मोक्ष सम्भव है। आर्य समाज प्रर्वत्तक श्री दयानन्द जी जैसे वेद ज्ञान हीन व्यक्तियों को यह भी नहीं पता था कि यह वाक्य किस वेद का है। ''सत्यार्थ प्रकाश'' (दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब से प्रकाशित) समुल्लास तीन में पृष्ठ 38-39 पर इसी मन्त्र (भूर्भुवः स्वः तत्- - -) का अनुवाद करते समय लिखा है कि भूः भुर्व स्वः यह तीन वचन तैत्तिरीय आरण्यक के हैं, मन्त्र के शेष भाग (तत् सवितुः- - -) के विषय में कुछ नहीं लिखा है कि कहाँ से लिया गया है। स्वामी दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' में किए इसी मन्त्र के अनुवाद में तथा यजुर्वेद में किए इस मन्त्र (भू भुर्वः- - -) के अनुवाद में विपरित अर्थ किया है। तैत्तिरीय आरण्यक तो एक उपनिषद् है जिसमें किसी ऋषि का अपना अनुभव है। जबकि वेद प्रभु प्रदत ज्ञान है। हमने वेद पर आधारित होना है न कि किसी ऋषि द्वारा रचित अपने अनुभव की पुस्तक पर। यदि 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक की पोल न खुलती तो कुछ दिनों बाद यह भी एक उपनिषद् का रूप धारण*

*कर लेता। आने वाले समय में अन्य पुस्तकों की रचना करते समय 'सत्यार्थ प्रकाश' के अज्ञान का समर्थन लेते तथा इससे भी अधिक अज्ञान युक्त पुस्तकों की रचना हो जाती।*

*जैसे गुरु ग्रन्थ साहेब में श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी तथा परम पूज्य कबीर परमेश्वर जी की अमृतवाणी वेद ज्ञान युक्त है तथा वेदों से आगे का भी ज्ञान विद्यमान है। परंतु राधास्वामी पंथ के प्रथम संत व प्रवर्तक माने जाने वाले श्री शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी जी के अज्ञान युक्त वचनों से रची पुस्तक 'सार वचन नसर व वार्तिक' को एक प्रमाणित शास्त्र मान कर श्री सावन सिंह जी महाराज ने (जो श्री खेमामल उर्फ शाहमस्ताना जी के पूज्य गुरु जी थे। श्री शाहमस्ताना जी ने ही बेगु रोड़ सिरसा में धन-धन सतगुरु-सच्चा सौदा पंथ की स्थापना की है) पुस्तक 'सार वचन नसर व वार्तिक' वाले विवरण का समर्थन लेकर 'संतमत प्रकाश' पुस्तक के कई भागों की रचना कर डाली, जिनमें सद्ग्रन्थों के विरूद्ध कोरा अज्ञान भरा है। जैसे श्री शिवदयाल जी ने उपरोक्त पुस्तकों में वचन-4 में कहा है कि सतनाम को सारनाम, सारशब्द, सतनाम, सतलोक तथा सतपुरूष कहते हैं।*

*इसी आधार से श्री सावन सिंह जी ने संतमत प्रकाश भाग-3 पृष्ठ-76 पर कहा है कि सतनाम को सतलोक कहते हैं। फिर पृष्ठ-79 पर लिखा है कि सतनाम चौथा राम है, यह असली राम है। श्री शिवदयाल जी महाराज के वचनों के आधार से श्री सतनाम सिंह जी द्वितीय गद्दीनशीन डेरा धन-धन सतगुरू सच्चा सौदा सिरसा वाले ने पुस्तक 'सच्चखंड की सड़क' पृष्ठ 226 पर लिखा है कि सतलोक महाप्रकाशवान है। इसी को सतनाम, सारनाम, सारशब्द भी कहते हैं।*

*उपरोक्त ज्ञान से स्पष्ट है कि इन पंथों के सन्तों को कोई ज्ञान नहीं था। जिनकी लिखित कहानियाँ ही गलत है तो क्रियाऐं भी गलत हैं। जिनकी थ्यूरी ही गलत है तो प्रैक्टीकल भी गलत है। हमने पवित्र अमृतवाणी श्री नानक साहेब जी तथा अमृतवाणी परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी तथा जिन संतों को कविर्देव (कबीर प्रभु) स्वयं मिले तथा तत्वज्ञान से परिचित कराया उनकी अमृतवाणी को आधार मान कर सत्य का ग्रहण करना है तथा असत्य का परित्याग करना है।*

*उदाहरण : जैसे कोई गणित के प्रश्न को हल कर रहा है और वह सही नहीं हो पा रहा है तो उसका सही हल ढूंढने के लिए मुख्य व्याख्या को ही आधार मान कर पुनर् पढ़ा जाता है। तब वह प्रश्न हल हो जाता है। यदि गलत किए हुए प्रश्न के हल को ही आधार मान कर प्रयत्न करते रहेंगे तो समाधान असंभव है। इसी प्रकार पूर्व संतों व ऋषियों द्वारा लिखी अपने अनुभव की पुस्तकों के स्थान पर सद्ग्रन्थों को ही आधार मान कर पुनर् पढ़ने व उन्हीं के आधार से साधना करने*

*से ही प्रभु प्राप्ति व मोक्ष संभव है। गीता जी में लिखा है कि हे अर्जुन ! जब तेरी बुद्धि नाना प्रकार के भ्रमित करने वाले शास्त्र विरूद्ध ज्ञान से हट कर एक शास्त्र आधारित तत्व ज्ञान पर स्थिर हो जाएगी तब तू योगी (भक्त) बनेगा। भावार्थ है कि तब तेरी भक्ति प्रारम्भ होगी।*

*जैसे पथिक गंतव्य स्थान की ओर न जा कर अन्य दिशा को जा रहा हो उसकी वह यात्रा कुमार्ग की है। उससे वह अपने निज स्थान पर नहीं पहुंच सकता। जब वह कुमार्ग त्याग कर सत मार्ग पर चलेगा तब ही उसके लिए मंजिल प्राप्त करना संभव है।*

*इसलिए श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि जब आप शास्त्र विरूद्ध साधना से हट कर शास्त्रानुसार साधना पर लगोगे तब आपका सत भक्ति मार्ग प्रारम्भ होगा।*

*विशेष विचार :- पवित्र यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 (जिसे गायत्री मन्त्र कहा है) की रटना लगाना (आवृत्ति करना) तो केवल परमात्मा के गुणों से परिचित होना मात्र है। उस परमात्मा की प्राप्ति की विधि भिन्न है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में तथा पवित्र गीता जी अध्याय 4 मन्त्र (श्लोक) 34 में कहा है कि तत्व ज्ञान को समझने अर्थात् पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के ज्ञान को तत्वदर्शी सन्तों से पूछो। पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति की विधि को वेद व गीता ज्ञान दाता प्रभु भी नहीं जानता। केवल अपनी साधना (ब्रह्म साधना) का ज्ञान गीता अध्याय 8 मन्त्र (श्लोक) 13 में तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र (श्लोक) 15 में कहा है। ओम् (ॐ) नाम का जाप अकेला करना होता है किसी वाक्य के साथ लगा कर करने से मोक्ष प्राप्ति नहीं होती। इसीलिए गीता अध्याय 8 मन्त्र (श्लोक) 13 में कहा है कि मुझ ब्रह्म का तो केवल एक ओम् (ॐ) अक्षर है अन्य नहीं है, उसका उच्चारण करके स्मरण करना है। यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र (श्लोक) 3 में भी ओम् (ॐ) मंत्र नहीं है। यह तो शास्त्र विरूद्ध साधना बताने वालों ने जोड़ा है जो अनुचित है। प्रभु की आज्ञा की अवहेलना है। यदि कोई अज्ञानी व्यक्ति किसी मोटर गाड़ी के पिस्टन के साथ नट वैल्ड कर के कहे कि यह पिस्टन अधिक उपयोगी है तो क्या वह व्यक्ति इन्जीनियर है ? यही दशा अज्ञानी ऋषियों तथा सन्तों की है जो ओम् (ॐ) अक्षर को किसी वाक्य के साथ लगा कर कहते हैं कि अब यह मन्त्र अधिक उपयोगी बन गया है। जो शास्त्र विरुद्ध होने से मन-माना आचरण (पूजा) है। पवित्र गीता जी अध्याय 16 श्लोक 23-24 में लिखा है कि - शास्त्र विधि त्याग कर मन-माना आचरण (पूजा) करने वाले साधक को न तो सुख होता है, न कार्य सिद्ध तथा न उनकी गति होती है। इसलिए भक्ति के लिए शास्त्रों को आधार मान कर सत्य का ग्रहण करें, असत्य का परित्याग करें।*

*उदाहरण :- जैसे विद्युत के गुण हैं कि बिजली पंखा चलाती है, अंधेरे को उजाले में बदल देती है, आटा पीस देती है आदि-आदि। इस वाक्य को बार-२ रटने*

*से बिजली के उपरोक्त गुणों का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। बिजली का कनैक्शन लेना होता है। कनैक्शन लेने की विधि उपरोक्त महिमा से भिन्न है। बिजली का कनैक्शन लेने के बाद उपरोक्त सर्व लाभ बिजली से स्वतः प्राप्त हो जाऐंगे।*

*इसी प्रकार सद्ग्रन्थों के अमृत ज्ञान से परमात्मा की महिमा का ज्ञान होता है। उसे एक बार पढ़ें या सौ बार। यदि परमात्मा से लाभ प्राप्त करने की विधि पूर्ण सन्त से प्राप्त नहीं की तो सर्व ज्ञान व्यर्थ है। जैसे कोई कहे कि ''खाले रे औषधि स्वस्थ हो जाएगा'' इसी की रटना लगाता रहे (आवृत्ति करता रहे) और औषधी खाए नहीं तो स्वस्थ नहीं हो सकता। पूर्ण वैद्य से औषधि लेकर खाने से ही रोग मुक्त हो सकता है। इसी प्रकार पूर्ण सन्त से पूर्ण नाम जाप विधि प्राप्त करके गुरू मर्यादा में रह कर साधना करने से ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है।*

*वह पूर्ण मोक्ष दायक, पाप विनाशक शास्त्रानुकूल पूर्ण परमात्मा की भक्ति विधि जगत गुरू तत्वदर्शी सन्त रामपाल दास के पास है जो प्रभु प्रदत्त है। कृप्या निःशुल्क व अविलंब प्राप्त करें। अज्ञानी सन्तों व ऋषियों द्वारा बताई शास्त्रविधि रहित साधना में अपना अनमोल मानव जीवन न गंवाऐं। कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा है !* ''मानव जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार।
जैसे तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहुर न लगता डार।।''

*(कृप्या पाठक जन पढ़ें और विचार करें - कौन कितने पानी में ?)*

*कृप्या पढ़ें :- यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 का भाषा भाष्य अर्थात हिन्दी अनुवाद संत रामपाल जी महाराज द्वारा किया हुआ।*

***यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 :-*** भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमही धीयो यो नः प्रचोदयात्।

***संधिछेद :-*** भूः–भुवः–स्वः– तत्– सवित्तुः– वरेण्यम्–भर्गः–देवस्य–धीमही–धीयः–यः–नः– प्रचोदयात्।

*अनुवाद :- वेद ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि (स्वः) अपने निज सुखमय (भुवः) अन्तरिक्ष अर्थात् सतलोक व अनामय लोक में (भूः) स्वयं प्रकट होने वाला पूर्ण परमात्मा है। वही (सवितुः) सर्व सुख दायक सर्व का उत्पन्न करने वाला परमात्मा है (तत्) उस परोक्ष अर्थात् अव्यक्त साकार (वरेण्यम्) सर्वश्रेष्ठ (भर्गः) तेजोमय शरीर युक्त सर्व सृष्टि रचनहार (देवस्य) परमेश्वर की (धीमही) प्रार्थना, उपासना शास्त्रानुकूल अर्थात् बुद्धिमता से सोच समझ कर करें (यः) जो परमात्मा सर्व का पालन कर्त्ता है वह (नः) हम को भ्रम रहित (धीयः) शास्त्रानुकूल सत्य भक्ति बुद्धिमता अर्थात् सद्भाव से करने की (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे।*

*भावार्थ :- इस मन्त्र सं. 3 में यजुर्वेद अ. 40 मन्त्र 8 का समर्थन है कि जो (कविर्मनीषी) पूर्ण विद्वान अर्थात् भूत, भविष्य तथा वर्तमान की जानने वाला कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है वह पांच तत्व के शरीर रहित है (स्वयंभूः परिभूः) स्वयं*

*प्रकट होने वाला परमात्मा है पूर्ण परमात्मा का शरीर एक तत्व से बना है इसलिए उसे यजुर्वेद अध्याय 1 मन्त्र 15 तथा अध्याय 5 मन्त्र 1 में कहा है कि (अग्नेः) परमेश्वर का नूरी अर्थात् तेजोमय (तनूः) शरीर (असि) है। उस सर्व शक्तिमान दयालु सुखमय परमात्मा की भक्ति सच्चे हृदय से शास्त्रानुकूल करें। वह पूर्ण परमात्मा ऊपर सतलोक में प्रकट होता है। उस से विनय है कि वह प्रभु सर्व प्राणियों को शास्त्रानुकूल साधना के लिए प्रेरित करे।*

*प्रचार प्रसार समिति,*
*सतलोक आश्रम करौंथा,*
*जिला रोहतक-124001 (हरियाणा)।*

*कृप्या पढ़ें फोटो कॉपी यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 का भाषा भाष्य अर्थात हिन्दी अनुवाद आर्य समाज प्रर्वतक महर्षि दयानन्द द्वारा किया हुआ। जिसका कोई सिर पैर नहीं है।*

षट्त्रिंशोऽध्यायः ११५५

भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! जैसे हम लोग (भूः) कर्मकाण्ड की विद्या (भुवः) उपासना काण्ड की विद्या और (स्वः) ज्ञानकाण्ड की विद्या को संग्रहपूर्वक पढ़के (यः) जो (नः) हमारी (धियः) धारणावती बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे उस (देवस्य) कामना के योग्य (सवितुः) समस्त ऐश्वर्य के देने वाले परमेश्वर के (तत्) उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य परोक्ष (भर्गः) सब दुःखों के नाशक तेजस्वरूप का (धीमहि) ध्यान करें वैसे तुम लोग भी इस का ध्यान करो ॥३॥

*(महर्षि दयानंद द्वारा अनुवादित यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 की फोटो कॉपी)*

**Note : For circulation amongst like minded person only**